अध्याय एकः मेक–अप का परिचय

मेक–अप का इतिहासः शरीर और चेहरे पर मेक–अप और वनस्पति के रंगों के प्रयोग **का** साक्ष्य विभिन्न पांडुलिपियों और इतिहास पुस्तकों में दर्ज हैं। नव पाषाण युग में भी पुरूष और महिलाएं अपने शरीर को सजाने के लिए **काया** लेप और रंगों का प्रयोग करती थीं। उन दिनों मेक–अप का इस्तेमाल **मौसम के अनुकूल** त्वचा की रक्षा करने के लिए एक छद्मावरण उत्पाद के रूप में किया जाता था। मेक–अप का इस्तेमाल श्रृंगार, जनजातीय पहचान, सामाजिक स्तर और युद्ध व धार्मिक गतिविधियों की तैयारी के रूप में भी किया जाता था। क्लेयोपेट्रा के मेक–अप ने मिस्र की उत्तेजक आंखों को मशहूर कर दिया था।

इतिहास में मेक –अप में होने वाला बदलाव दर्ज हैः

सन् 1901–29

- एलिजाबेथ अर्डेन ने वर्ष 1910 में अपना पहला सैलून शुरू किया था और प्रसिद्ध कॉस्मेटिक श्रृंखला की प्रमुख बनी।
- यद्यपि मेक–अप का प्रयोग धीरे–धीरे **प्रचा लत** हो रहा था किंतु अभी भी प्राकृतिक सुन्दरता का प्रचलन था।
- नेल **पॉ लश** का सृजन किया गया। यार्डले और हेलेना रूबेनस्टिन जैसी कंपनियां उभरीं।
- सन् 1930 में महिलाओं के चेहरे पर भारी मेक –अप हुआ करता था। सन् 1920 के अंत में **पहली** बार सुरक्षित संघटकों का उपयोग करते हुए मेक –अप तैयार किया गया।
- सन् 1923 में **आईलेश** कर्लर का आविष्कार हुआ।
- सन् 1910 में केवल वेश्याओं द्वारा ही मेक–अप का इस्तेमाल किया जाता था, किंतु सन् 1920 और 1930 की शुरूआत में अन्य महिलाओं ने भी इसका इस्तेमाल शुरू कर दिया।

सन् 1930

- मैक्सफैक्टर ने 1936 में सौंदर्य **प्रसाधन के** सैलून की शुरूआत की। मैक्सफैक्टर ने पहली बार **वाटर प्रूफ** केक फाउंडेशन **व** पैन–केक विकसित किया।
- चमकीले और गहरे रंगों **की** नेल **पॉ लश** का इस्तेमाल किया गया।
- इस समय सूर्य स्नान का प्रचलन था और जो **प्राकृतिक** त्वचा **के** रंग **को** अधिक **प्रतिबिम्बित** होता था।
- प्लास्टिक सर्जरी की शुरूआत हुई।

सन् 1940

- सन् 1940 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नियंत्रित वितरण करने के लिए मेक–अप का उपयोग कम किया गया। इस दौरान केवल लाल लिप्सटिक ही सरलता से उपलब्ध थी। इसके परिणामस्वरूप लाल लिप्सटिक 1940 का प्रतीक बन गयी।

सन् 1950

- सन् 1950 के अंत तक 'गुआनिन' युक्त कई नए मेक–अप की वस्तुएं आ गयीं जो पाउडर और पेंट में झिलमिल चमक देती थीं।
- पेन–केक मेक–अप प्रसिद्ध हुआ और 1953 में 10 मिलियन से अधिक मेक–अप समानों की बिक्री हुई।

सन् 1960

- सन् 1960 के दौरान कई **रूप आये** और चली गयीं। 60 के दशक की शुरूआत में म्लान आकृति का प्रचलन था, किंतु दस वर्ष की अवधि के दौरान इस मेक–अप के आगमन से उस मेक–अप का प्रचलन समाप्त हो गया।
- मिनी स्कर्ट के उभरने से **टांगो** के मेक–अप की लोकप्रियता बढ़ी।
- इस दशक के अंत में चेहरे और शरीर पर पेंटिंग लोकप्रिय **हुई**।

सन् 1970

- डिस्को का प्रचलन हुआ और इसके परिणामस्वरूप चमकीले और इंद्रधनुषी रंगों की लोकप्रियता हुई।
- अराजक युवा को दर्शाता एक उग्र व्यक्ति जिसके बाल का रंग फ्लोरोसेंट और उसमें पिन जड़ा हो तथा वेधित चेहरा एवं युद्ध में भाग लेने वाले सैनिक की तरह पेंट वाले स्टाइल के साथ मेक–अप का प्रचलन।

सन् 1980

- 1980 के मध्य तक विषम आकृति का प्रचलन था। पलकों पर विभिन्न रंग लगाए जाते थे।
- **भौहों को आकार देना बंद कर दिया और** स्वाभाविक रूप में रखा जाता था।

सन् 1990 और वर्तमान

- कुल मिलाकर एक प्राकृतिक त्वचा रंग जिसमें एक बेहतर प्राकृतिक परिसज्जा थी, फैशन में था। होठों पर लाल रंग लगाया जाता था। **मैट** (matte) इसकी कुंजी थी।
- तथापि, 1990 के अंत के दौरान चमकदार, भड़किले और चमकीली मेकअप की व्यापक वापसी हुई।
- प्लास्टिक सर्जरी तकनीक में सुधार होता रहा और समाज अब पूर्णरूपेण मेकअप चाहता था।
- 1990 के अंत में मेंहदी के टेटू और बिंदी फैशन का अंग बन **गया**।

मेकअप लगाने के उद्देश्य

मेकअप लगाने का मुख्य उद्देश्य कम आकर्षक रूपों को न्यून करते हुए सुन्दर रूपों पर जोर देकर चेहरे की प्राकृतिक सुन्दरता को और बढ़ाना होता है। मेकअप एक कला है और एक मेकअप आर्टिस्ट के रूप में उसे कुछ **मूल सद्धांत की** जानकारी होनी चाहिए जो इस प्रकार है–

1) चेहरे की बनावट

2) रंग एवं इनकी एक दूसरे के साथ संबंध

3) **दृष्टि** भ्रम के सिद्धांत

आप सदा उस हल्की
बाहरी छुअन चाहती थीं

मेकअप लगाने के लिए कोई निर्धारित पैटर्न नहीं है; मेकअप प्रयोग में ग्राहक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर **एक ग्राहक से दूसरे ग्राहक की आवश्यकताओं में अंतर हो सकता हैं** मेकअप आर्टिस्ट को अपने ग्राहक के लिए मेकअप की योजना बनाते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए–

1) मेकअप- फेस के प्रकार
2) केश सज्जा
3) कपड़े, आंख, बाल और त्वचा के रंग में एकरूपता
4) चेहरे की छवि की विशिष्टता
5) ग्राहक का व्यक्तित्व
6) आयु
7) पेशा
8) अवसर

मेकअप के लिए प्रसाधन की वस्तुएं

सही मेकअप उत्पाद का चयन मेकअप प्रयोग की सफलता की कुंजी है। मेकअप उत्पादों की प्रत्येक वस्तु विभिन्न त्वचा प्रकारों के लिए भिन्न– भिन्न होती है। ये वस्तुएं पाउडर, क्रीम, द्रव और जेल के रूप में होती हैं। इन विभिन्न वस्तुओं में निम्नलिखित शामिल हैं–

1) फाउंडेशन
2) कांसिलर
3) पाउडर
4) ब्रश
5) आंखों से जुड़ी प्रसाधन वस्तुएं
6) होठों पर लगाने वाली प्रसाधन वस्तुएं

फाउंडेशनः—मेकअप का सबसे महत्वपूर्ण भाग फाउंडेशन है क्योंकि यह मेकअप आर्टिस्ट के लिए आधार होता है। फाउंडेशन सामान्यतया हल्के रंग का होता है और यह त्वचा की रंगत और रंग में भी सहायता करता है, छोटे दागों और दोषों को छिपाता है, त्वचा को अधिक युवा और मुलायम दिखाता है । फाउंडेशन पानी, पाउडर, तेल, ह्यूमेक्टेंट और पिग्मेंट का बना होता है। तेल आधारित फाउंडेशन सामान्य से शुष्क त्वचा प्रकार के लिए अच्छा होता है। तेल मुक्त उत्पाद अथवा जल आधारित उत्पाद विशेष रूप से तैलीय त्वचा के लिए अच्छा होते हैं क्योंकि ये उत्पाद त्वचा में और तेल नहीं छोड़ते हैं।

फाउंडेशन को जहां तक संभव हो वास्तविक त्वचा रंग से मिलना चाहिए। सही फाउंडेशन की जांच करने के लिए सबसे अच्छा तरीका **जॉलाईन पर** त्वचा को साफ करके फाउंडेशन की एक स्ट्रीप लगाना होता है। जो रंग त्वचा में मिल जाए वह सबसे सही रंग है।

फाउंडेशन के प्रकार	बेस	त्वचा के प्रकार	परिणाम	चित्र
द्रव	तेल आधारित	शुष्क, सामान्य, परिपक्व, संयुक्त	हल्का से मध्यम कवरेज	
द्रव	जल आधारित	तैलीय, सामान्य, संयुक्त	हल्का से मध्यम कवरेज	
क्रीम	तेल आधारित	शुष्क, सामान्य, परिपक्व	आसानी से मिल जाता है किंतु गहरा कवरेज देता है।	
जेल	जल आधारित	शोधित त्वचा, **सावंली** त्वचा, बेदाग त्वचा	**पारदर्शी** और अतैलीय कवरेज	
पाउडर/कॉम्पेक्ट	तेल, मोम अथवा पाउडर	शुष्क, सामान्य, दाग युक्त	गहरा कवरेज जो रंजकता के लिए प्रभावी होता है।	
मूज़	तेल	सामान्य संमिश्रण	**हल्के** से मध्यम कवरे़ज	

खनिज	खनिज आधारित	सभी प्रकार की त्वचा	बेहतर हल्का कवरेज देता है।	

प्रयोग **करने की** तकनीकः द्रव, क्रीम और ट्यूब फाउंडेशन को अंगुलियों **के पैरों** अथवा स्पंज से लगाया जा सकता है। पाउडर और कॉम्पेक्ट को ब्रश अथवा स्पंज से लगाया जा सकता है।

कांसिलरः—दागों और रंगहीनता को छिपाने के लिए **कां सलर्स** का इस्तेमाल किया जाता है। इनका प्रयोग फाउंडेशन को लगाए जाने के पूर्व या उसके बाद किया जा सकता है। सामान्यतया कांसिलर क्रीम आधारित होते हैं और ये विभिन्न रंगों और रूपों यथा ट्यूब, स्टिक, वेंड, पेंसिल और पोट में उपलब्ध हैं।

प्रयोग तकनीकः—इनको कांसिलर ब्रश या स्पंज के साथ लगाया जा सकता है। इसे समस्या ग्रस्त क्षेत्र में थोड़ी मात्रा में लगाएं और आस पास में उचित रूप में मिला दें।

पाउडरः—पाउडर फाउंडेशन को सेट करता है और इसका इस्तेमाल चमक रहित अथवा **डल या कीकेंद** चेहरे के लिए प्रयोग किया जाता है। पाउडर छोटे दागों को छिपाने में सहायता करता है और अत्यधिक चमक को समाप्त करता है एवं त्वचा में प्राकृतिक रंगत लाता है।

- खुले पाउडरों अथवा पारभासी पाउडर को सभी फाउंडेशनों में इसके रंग में बदलाव के बिना मिलाया जाता है।
- कॉम्पेक्ट अथवा प्रेस्ड पाउडर का सामान्यतया **प्रयोग** के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

प्रयोग तकनीकः— **लूस अथवा पारभासी पाउडर को ब्रश के द्वारा** लगाए। इसे संपूर्ण चेहरे पर लगाएं और पाउडर ब्रश की सहायता से अत्यधिक पाउडर को हटा दें।

ब्लशरः– ब्लशर चेहरे को आकार **देने** में सहायता करता है। यह प्राकृतिक गुलाबी रंग देने में सहायता करता है और यह प्रेस्ड पाउडर, पाउडर, द्रव, क्रीम, जेल आदि विभिन्न रूपों में उपलब्ध है।

प्रयोग तकनीकः–

- क्रीम और जेल ब्लशर को फेशियल स्पंज की सहायता से लगाया जाता है।
- तरल ब्लशर लेटेक्स स्पंज की सहायता से लगाया जाता है।
- शुष्क पाउडर और प्रेस्ड पाउडर का इस्तेमाल ब्रश या पफ की सहायता से किया जाता है।
- इसे सदा गाल की हड्डी के उपरी भाग पर लगाएं और अच्छी प्रकार से मिलाएं। नाक के अत्यधिक निकट ब्लशर को न लगाएं और आंख के बाहरी कोने से बाहर कभी न लगाएं।

आंखों के लिए प्रसाधन सामग्रीः– आंखों का मेकअप किसी भी प्रकार के मेकअप का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। सौंदर्य प्रसाधन की ये वस्तुएं आंखों की सुंदरता को परिभाषित करने में सहायता करती हैं। आंखों के कॉस्मेटिक में निम्नलिखित शामिल हैं–

(1) आई ब्रो शेडो अथवा पेंसिल
(2) आई लाइनर
(3) आई शेडो
(4) मस्कारा

आईब्रो शेडो अथवा पेंसिलः—इनका प्रयोग आंखों की भौंह के आकार को परिभाषित करने और इसके रंग में **वृद्ध** करने के लिए किया जाता है। इनका प्रयोग **खाली स्थान** भरने अथवा इनके रूप को सही करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

प्रयोग तकनीकः—यदि आप आईब्रो पेंसिल का प्रयोग कर रहे हैं तो प्राकृतिक बाल **की** वृद्धि का भ्रम **उत्पन्न** करने के लिए छोटे, मुलायम स्ट्रोकों का इस्तेमाल करते हुए इसका प्रयोग करें। पाउडर लगाने के लिए छोटे हाथ ब्रश और कोण टिप का प्रयोग करें। ब्रश **पर** शेडो लगाए और कृत्रिम छवि से बचने के लिए हल्के स्ट्रोक के साथ लगाएं।

आई लाइनरः—आई लाइनर आंखों **की** आउट लाइन को बनाता है और इसमें सुन्दरता लाता है। व्यक्ति के रूप के आधार पर आई लाइनर बरौनी रेखा के आस पास एक सुस्पष्ट रंग अथवा धब्बेदार रूप दे सकता है। आई लाइनर का इस्तेमाल बड़े और पूर्ण बरौनी वाली आंखों को सजाने के लिए किया जा सकता है। ये पेंसिल, द्रव, जेल, प्रेस्ड (टिकिया), टिप पेन के विभिन्न रूपों में उपलब्ध हैं।

प्रयोग तकनीकः–आप जिस भी प्रकार के आईलाइनर का इस्तेमाल कर रहे हों, यह महत्वपूर्ण है कि आंखों की पिपनियों में किसी प्रकार की शिकन को समाप्त करने के लिए भौंह को उठा कर पिपनियों को तान कर रखें और तब आईलाइनर लगाएं। इस लाइन को यथा संभव प्राकृतिक बरौनी रेखा के निकट रखा जाना चाहिए। पूर्ण लाइन को ब्रश की सहायता से मुलायम किया जा सकता है अथवा अपेक्षित प्रभाव के आधार पर इसे तराशा हुआ छोड़ा जा सकता है।

आई शेडोः–आंखों पर महत्व डालने अथवा इनकी बाह्य रेखाओं को बनाने के लिए आई शेडो का इस्तेमाल किया जाता है। ये कदाचित सभी संभव रंगों में उपलब्ध हैं। ये क्रीम, पाउडर, क्रेऑन, द्रव, जैल, टिकिया आदि विभिन्न रूपों में उपलब्ध हैं। ये विभिन्न प्रकार से सज्जित होती हैं यथा चमकरहित, रूक्षित, झिलमिलाहट और धात्विक, मोती युक्त अथवा ओस युक्त ।

अनुप्रयोग तकनीकः– आई शेडो आंखों को चमकीला और अधिक प्रभावशाली बनाता है। आई शेडो का इस्तेमाल ग्राहक की आंखों में **चमक** लाने के लिए किया जाना चाहिए तथा आंखों का मेकअप रंग ग्राहक के कपड़े के रंग के साथ मैच करे।

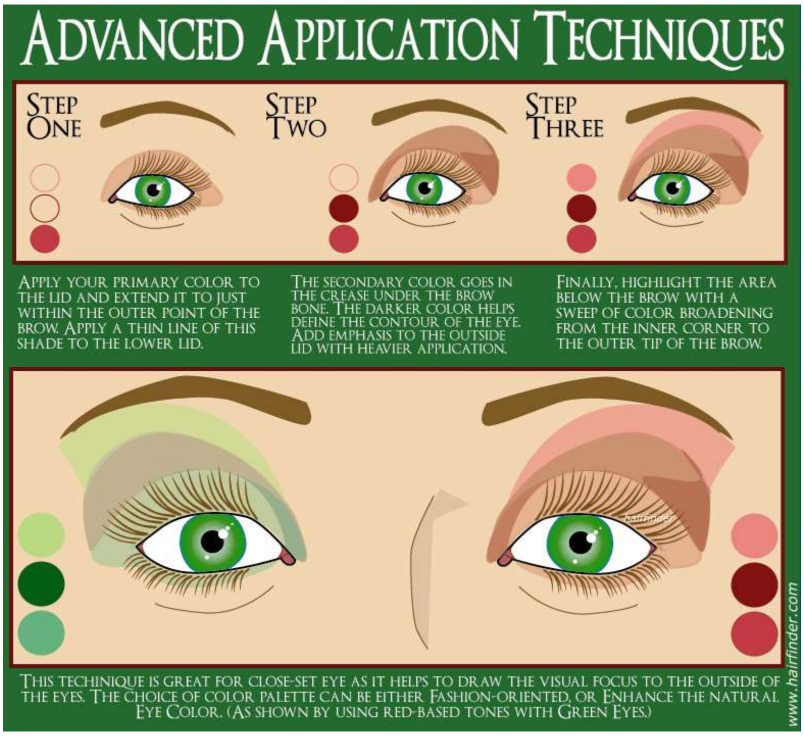

सामान्यतया आंखों के किसी भी प्रकार के मेकअप के लिए तीन आई शेडो का इस्तेमाल किया जाता है–

- बेस (हल्का रंग):– इस रंग का प्रयोग सामान्यतया आंखों पर त्वचा **के** रंग के लिए भी किया जाता है।
- बाह्य रेखा रंग (काला और वैषम्य रंग):–इसका प्रयोग बाह्य रेखा बनाने **व** आंखों की बरौनी रेखा को सुन्दर बनाने के लिए किया जाता है।
- चमक (चमकदार अथवा चमकरहित):– ये रंग एक विशिष्ट भाग को चमकदार बनाते हैं **(**भौंह की हड्डी अथवा आंख की पुतली**)**

आई शेडो को लगाने के लिए नए एप्लीकेटर अथवा साफ ब्रश का इस्तेमाल करें। आंख की पिपनियों पर रंग को उपर की ओर से बाहर की तरफ ले जाते हुए आंख की बरौनी के निकट आई शेडो लगाएं। अपेक्षित प्रभाव प्राप्त करने के लिए इसे मिलाएं।

मस्कारा:– मस्कारा आंखों की बरौनी को गहरा काला, मोटा, लंबा और सुन्दर बनाता है। एक मोटी परत लगाने की अपेक्षा कई परत लगाना अच्छा होता है। ये द्रव और टिकिया के रूप में और काला, भूरा, नेवी ब्लू, बैंगनी, गुलाबी आदि विभिन्न रंगों में उपलब्ध हैं। मस्कारा ब्रश सीधा अथवा वक्र हो सकता है जिसमें पतले या मोटे दांत हो सकते हैं।

प्रयोग तकनीक:–अपने ग्राहक को नीचे देखने के लिए करें। धीरे से भौंह के बाहरी कोने को उठाएं। उपरी पिपनियों के शीर्ष पर मस्कारा लगाएं। जब यह सूख जाए तो दूसरी परत लगाएं, और इस बार उपरी भौह के नीचे से उपर और बाहर की ओर लगाएं।

होठ के लिए कॉस्मेटिकः– चेहरे को सजाने और होठों के आकार को बेहतर बनाने के लिए लिप कॉस्मेटिक का इस्तेमाल किया जाता है। होठ का रंग समरसता और संतुलन लाते हुए मेकअप को पूरा करता है। बाजार में लिप कॉस्मेटिक की पूरी श्रृंखला **उपलब्ध** है।

लिप्सटिक–यह चमक रहित, रूक्षित, पारभासी जैसे कई रूपों में आता है।	
लिप **ग्लोज़** – इनका प्रयोग केवल प्राकृतिक सुंदरता अथवा लिप्सटिक के उपर पूर्ण चमकीली परत के रूप में किया जाता है।	
लिप पैंसिल– लिप पेंसिल कई रंगों में उपलब्ध है और होठों को सजाने और आउटलाइन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।	
लिप बाम–ये रंगहीन उत्पाद होते हैं जिन्हें होठों की त्वचा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए बनाया गया है।	
लिप **प्राइमरस** और **सीलरस** –लिप्सटिक को **फैलने से** रोकने के लिए लिप्सटिक लगाने से पूर्व लिप प्राइमरों का इस्तेमाल किया जाता है। लिप्सटिक को अधिक देर तक बनाए रखने के लिए इससे पूर्व **सीलरस** का इस्तेमाल किया जाता है।	

अनुप्रयोग तकनीक–लिप कलर को कंटेनर से सीधे नहीं लगाया जाना चाहिए, लिप्सटिक को सदा ब्रश से लगाया जाना चाहिए। लिप लाइन और होठों के लिए लिप्सटिक ब्रश का इस्तेमाल करें और उसके पश्चात **छोटे सीधे**-स्ट्रोक के साथ लिप्सटिक भरें। अधिशेष लिप्सटिक को टिश्यू पेपर से पोछ दें और इसे लंबे समय तक रखने के लिए पुनः लगाएं।

मेकअप ब्रश और अन्य उपकरण

मेकअप ब्रश विभिन्न आकार **और साइजो के मलते** हैं। साधारणतया प्रयोग किए जाने वाले ब्रश और उपकरणों में निम्न शामिल होते हैं–

मेकअप ब्रश

फाउंडेशन ब्रश	

काउसिंलर ब्रश	
पाउडर ब्रश	
आई शेडो ब्रश	
आई लाइनर ब्रश	

मस्कारा ब्रश	
ब्लश ब्रश	
लिप लाइनर ब्रश	
लिप्सटिक ब्रश	

उपकरण

चिमटी	

आई लेश कर्लर	
छोटी कैंची	
थंब पैलेट	

डिस्पोजेबल वस्तुएं

मेकअप स्पंज	
पाउडर पफस एवं पेंसिल शार्पनर	

टिश्यू पेपर कॉटन पेडस	
स्पंज छोर वाले शेडो एप्लीकेटर	
स्पेटूलाज़	

मेकअप रंग से संबंधित सिद्धांत

रंग अभिकल्प अथवा रंग **चक्र** का मूल सिद्धांत ग्राहक की त्वचा, बालों के रंग, आंखों के रंग के साथ सामंजस्य बनाने के लिए चमक, शेडो को संतुलित करना, मेकअप रंगों के समन्वयन और मैच करना होता है।

एक सफल मेकअप आर्टिस्ट बनने के लिए उन्हें रंगों के सिद्धांत को समझना चाहिए । रंगों की तीन श्रेणियां होती हैं– प्राथमिक, द्वितीय और तृतीय श्रेणी।

1) प्राथमिक रंग मूलभूत रंग होता है जिसे मिश्रण से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। ये रंग लाल, नीला और पीला हैं।

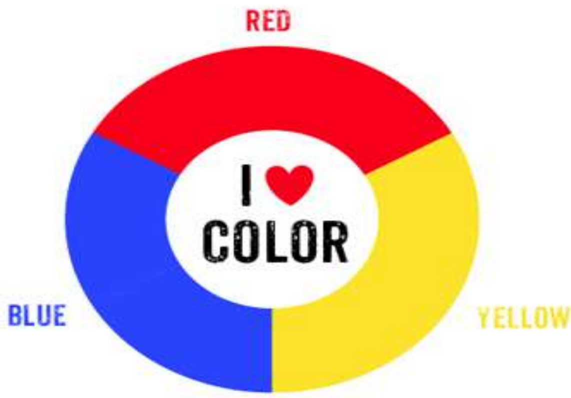

2)द्वितीय रंग दो प्राथमिक रंगों को समान मात्रा में मिला कर प्राप्त किया जाता है।

पीला+लाल= नारंगी
लाल+नीला = बैंगनी
पीला+ नीला = हरा

The Secondary Color Wheel

तृतीय रंग, रंग चक्र पर द्वितीय रंगों की समान मात्रा में मिलाने पर तैयार किया जाता है।

इन रंगों का नामकरण प्राथमिक रंगों और द्वितीय रंगों द्वारा किया जाता है।
अर्थात् नीला+ बैंगनी = नीला बैंगनी
लाल+नारंगी= लाल नारंगी
पीला+हरा= पीला हरा आदि

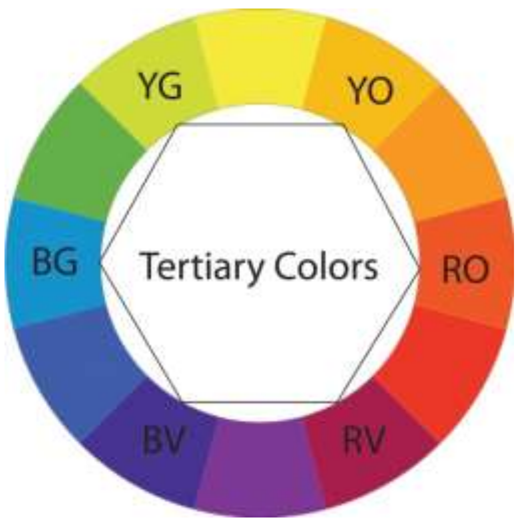

3) संपूरक रंग: रंग चक्र पर जो प्राथमिक और द्वितीय रंग प्रत्यक्षतः एक दूसरे के विलोम होते हैं उन्हें संपूरक रंग कहा जाता है। जब उन्हें एक दूसरे के आस पास रखा जाता है तो वे चमकीले दिखते हैं और बड़े वैषम्य प्रतीत होते हैं किंतु यदि उन्हें मिलाया जाता है तो वे उदासीन, भूरा रंग सृजित करते हैं।

लाल रंग हरे रंग का संपूरक रंग है।
पीला रंग बैंगनी रंग का संपूरक रंग है।
नीला रंग नारंगी रंग का संपूरक रंग है।

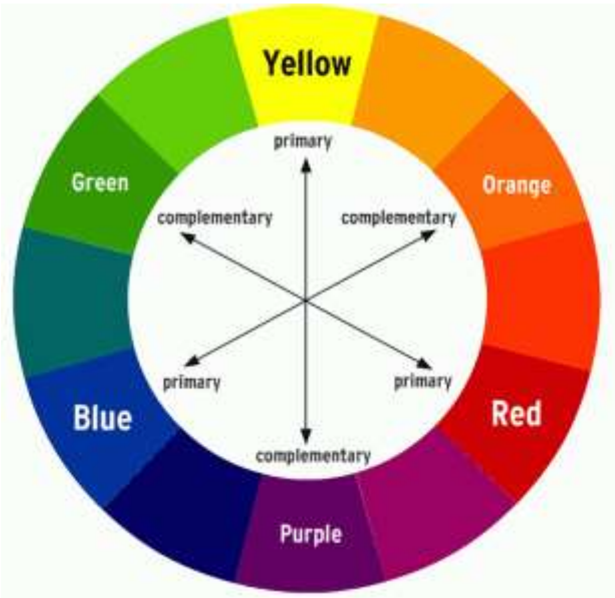

4) उष्ण रंगों की श्रृंखला में पीला, सुनहला, नारंगी, लाल रंग हैं और कुछ पीला हरा रंग भी है।

5) शीतल रंगः ये रंग शीतलता प्रदान करते हैं और इनमें नीला, हरा, बैंगनी, नीला लाल रंग शामिल हैं।

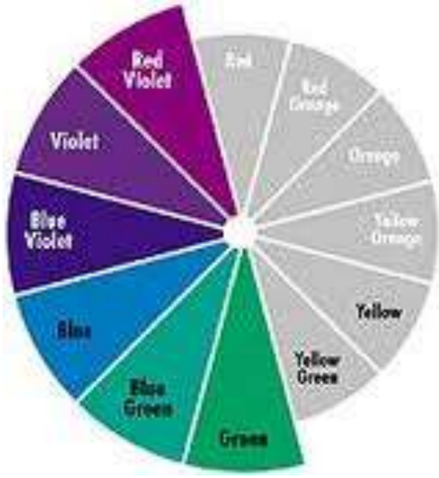

नोट– **(टिप्पणी)**

- लाल रंग उष्ण और शीतल रंग दोनों होते हैं। यदि लाल रंग का आधार नारंगी हो तो यह उष्ण होता है और यदि यह नीला आधारित हो तो यह शीतल रंग होता है।
- हरा रंग भी इसी तरह का रंग है, यदि हरे रंग में अधिक पीला हो तो यह उष्ण होता है और यदि इसमें अधिक नीला रंग हो तो यह शीतल रंग होगा।

आंखों के लिए संपूरक रंग :–

नीली आंख–सुनहला, उष्ण नारंगी, हल्का गुलाबी, तांबा, हल्का बैंगनी, जामुनी रंग।
हरी आंख–भूरा आधारित लाल, लाल– नारंगी, लाल बैंगनी, तांबा, जंग, गुलाबी, जामुनी, हल्का बैंगनी, बैंगनी।
भूरी अथवा काली आंख–इन रंगों वाली आंखों के लिए कोई भी रंग मैच करेगा।

प्रति संकेत

ग्राहक को मेक अप के लिए तैयार करने से पूर्व प्रति संकेत की पहचान की जाती है। कुछ त्वचा की स्थिति संक्रामक होती है और यदि इनमें से कोई भी संक्रमण मौजूद हो तो आपको मेक–अप नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे रोगों **से** अन्य ग्राहकों तक फैलने अथवा कॉस्मोलॉजिस्ट को होने का खतरा होता है और ऐसे ग्राहक को त्वचा रोग विशेषज्ञ के पास भेज दिया जाता है। ये संक्रामक त्वचा रोग विषाणु वाला, वायरल, फफूंद अथवा परजीवी वाला हो सकता है इसलिए निम्न संक्रामक रोग होने की स्थिति में सौंदर्य सेवा देने का कार्य नहीं करना चाहिए।

जीवाणुयुक्त संक्रमण	चर्मपूय (Impetigo)	
	फॉलिक्यूलिट्स (Folliculitis)	
	नेत्रशोथ (Conjunctivitis)	
	थ्बलनी (Styes)	
वायरल संक्रमण	विसर्पिका (Herpes)	

	मस्सा (Warts)	
	नेत्रशोथ (Conjunctivitis)	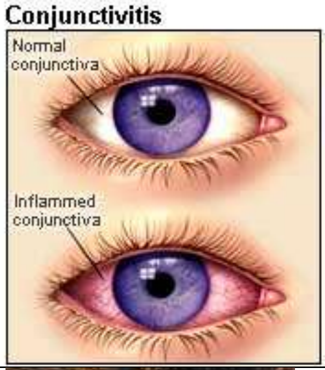
परजीवी संक्रमण	खुजली (Scabies)	
	यूकाग्रस्तता (Pediculosis)	

कुछ त्वचा रोग संक्रामक नहीं भी हो सकते है किंतु एक कॉस्मेलॉजिस्ट के रूप में आपको निम्नलिखित त्वचा प्रति संकेत के लिए सौंदर्य सेवा देते समय ध्यान रखना चाहिए:–

1) संवेदनशील अथवा एलर्जी युक्त त्वचा
2) एक्जिमा
3) गंभीर रूप से **सनबर्न**
4) **त्वचा में खुजली**
5) घाव और फुंसी
6) आंखों के आस पास त्वचा रोग

7) कोई भी संक्रामक त्वचा रोग (चर्मरोग विशेषज्ञ के पास ग्राहक को भेजना)

स्वास्थ्य और सुरक्षाः–एक कॉस्मेटोलोजिस्ट के रूप में हमें व्यक्तिगत स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए और कार्य स्थल पर किसी प्रकार की घटनाओं से बचने के लिए अन्य व्यक्तियों का ध्यान रखें। एक कॉस्मेटोलोजिस्ट के रूप में आपको कार्य स्थल पर निम्नलिखित चीजों का ध्यान रखना चाहिएः–

क) **फसलन** – कार्य स्थल पर किसी प्रकार के **फसलन** से बचना चाहिए।

ख) **कचरे** का निपटान–कॉटन जैसे साधारण कचरा उत्पादों को बंद कचरा पेटी में डाला जा सकता है किंतु किसी भी ज्वलनशील रसायनों अथवा उत्पादों का निपटान इनके उत्पादकों के निर्देशानुसार करना चाहिए।

ग) **हवादार**–कार्य स्थल पर्याप्त रूप से **हवादार** होना चाहिए ताकि गर्म या नमी युक्त या गंदी हवा निकल जाए एवं ताजी हवा एवं स्वच्छ हवा आ पाए।

घ) बिजली का झटका– बिजली का झटका गंभीर खतरा पैदा कर सकता है और यह घातक भी हो सकता है एवं दोषपूर्ण बिजली उपकरण अथवा इनके उपयोग से आग लग सकती है, क्षति हो सकती है और व्यक्ति घायल अथवा उनकी मृत्यु हो सकती है।

ड.) खतरनाक वस्तुः– कॉस्मेटोलॉजिस्ट का सामना कई रसायनों और वस्तुओं से होगा और यदि इनका इस्तेमाल सही तरीके से नहीं किया गया तो ये खतरनाक हो सकता है। दुर्घटनाओं से बचने के लिए कतिपय सुरक्षा दिशानिर्देश सहायक होगेंः–

क) निर्माताओं के दिशानिर्देश/ अनुदेशों का अनुपालन करना।
ख) यदि निर्माताओं द्वारा निर्देश नहीं दिए जाएं तो उत्पादों का मिश्रण न करें।
ग) रसायनों का भंडारण लेबल लगाकर और एयर टाइट कंटेनरों में रखें।
घ) एरोसोल को आग और गर्मी से दूर से रखें।

कॉस्मेटोलॉजिस्ट के लिए स्वास्थ्य और **सुरक्षात्मक सावधानियाँ**–

कार्य **स्थल**	व्यक्तिगत स्वास्थ्य और आचरण
• मेक अप कक्ष में प्रकाश होना चाहिए। • इसका फर्श आसानी से साफ किए जाने योग्य होना चाहिए। • प्रत्येक कार्यस्थल पर बंद कचरे का डिब्बा होना चाहिए। • उत्पादों और उपकरणों को **अलमारी** में रखा जाना चाहिए। • प्रत्येक इस्तेमाल के बाद कार्य स्थल, उपकरण, औजारों और साधनों को संक्रमण रहित करना चाहिए और कचरे का निपटान उपयुक्त तरीके से किया जाना चाहिए।	• व्यक्ति को साफ कपड़े पहनना चाहिए। • नाखुन छोटा और साफ सुथरा होना चाहिए। • अंगूठी और चूड़ी **जैसे** आभूषण नहीं **पहनने** चाहिए क्योंकि इनसे त्वचा में खरोंच आ सकती है। • मुख स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए क्योंकि यह बड़ा महत्वपूर्ण है। • सैलून में कम उंचाई अथवा समतल एंड़ी वाला चप्पल पहनना चाहिए। • तेज सुगंध से बचना चाहिए

अभ्यास प्रश्नः

प्रश्न 1: बाजार में उपलब्ध विभिन्न कॉस्मेटिक उत्पादों की सूची लिखें। इनमें से किसी एक का ब्यौरा दें और इसके प्रकार व अनुप्रयोग तकनीक बताएं।

प्रश्न 2: मेक अप करने के मुख्य उद्देश्य क्या है और मेक अप की योजना बनाते समय किन किन बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए।

प्रश्न 3: लघु उत्तर प्रश्नः

क) तीन जीवाणु संक्रमणों और तीन वायरल संक्रमणों के बारे में लिखें।
ख) उन चार बिंदुओं के बारे में लिखें जिन्हें सैलून में कार्य स्थल और व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखा जाना चाहिए।
ग) नीली आंखों और हरी आंखों के लिए संपूरक रंगों के बारे में लिखें।

प्रश्न 4: द्वितीयक रंगों को दर्शाते हुए रंग चक्र बनाएं और लेबल करें।

अभ्यास प्रश्न (व्यवहारिक):

प्रश्न 1: मूलभूत नेत्र मेकअप लगाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।
प्रश्न 2: यह प्रदर्शित करें कि रंग चक्र पर रंगों को कैसे मिलाएं और इच्छित रंग कैसे तैयार करें।
प्रश्न 3: मेक अप ब्रश और मेक अप उपकरणों की सफाई की प्रक्रिया को प्रदर्शित करें।
प्रश्न 4: वर्ष 1960 और 1980 के दौरान किए जाने वाले मेकअप को प्रदर्शित करें।

ग्राहक परामर्शः मेक–अप प्रक्रिया में पहला कदम ग्राहक से **ही** परामर्श करना होता है। मेकअप उस स्थिति से जुड़ा है कि लोग स्वयं कैसा **देखना** पसंद करते हैं और साथ ही वे अन्य को कैसा **दिखाना** चाहते हैं। मेक–अप सेवा को सदा संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू करना चाहिए। आप ग्राहक को देखकर उनकी व्यक्तिगत पसंद और ड्रेस पहनने के उनके तरीके का अनुमान लगा सकते हैं। इससे आपको उनके साथ परामर्श जारी रखने में सहायता मिलेगी। प्रत्येक ग्राहक अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं और उम्मीदों के साथ आते हैं। हमें सुनना चाहिए कि ग्राहक क्या कहना चाहते हैं और उनको सुझाव देना चाहिए किंतु आप अपना विचार न थोपें क्योंकि हर ग्राहक भिन्न है। ग्राहक को प्रोत्साहित करें कि वे अपनी किन्हीं चिंताओं से अवगत कराएं ताकि आप उनके साथ इन पर चर्चा कर सकें और उपयुक्त समाधान दे सकें।

जहां तक संभव हो सके ग्राहक की त्वचा की स्थिति, जिस कॉस्मेटिक उत्पादों का वह प्रयोग करती हैं, रंग से जुड़ी उनकी पसंद, किसी विशेष कॉस्मेटिक उत्पाद से एलर्जी के बारे में सूचना एकत्रित करें क्योंकि इससे उनके लिए सही प्रकार के उत्पादों के चयन में सहायता मिलेगी। उनसे उनकी मेकअप की आवश्यकताओं की जांच करने के लिए एक प्रश्नावली भरने के लिए कहें।

निम्न प्रकार के प्रश्न पूछेः

क) क्या वह सामान्य रूप में मेकअप करती है? यदि हां, तो वह कौन सा रंग और कौन से उत्पाद इस्तेमाल करती है?

ख) किस अवसर पर वह मेक–अप सेवाएं लेती हैंः–
- (i) कारोबार
- (ii) आनंद
- (iii) सामाजिक अवसर
- (iv) विवाह /गठबंधन जैसे विशेष अवसर

ग) मेकअप से उनकी क्या अपेक्षाएं होती हैं?

घ) मेक अप से वह किस प्रकार की सुंदरता की अपेक्षा करती है?

ग्राहक की अपेक्षाओं पर चर्चा करने पर समय देने और इस संपूर्ण प्रक्रिया में उन्हें शामिल करने से आत्मविश्वास और विश्वास बढ़ेगा। वह इस मेक–अप सेवा के दौरान अधिक आरामदायक महसूस करेगी।

इस सेवा के पूरे होने पर सादर प्राप्त सूचनाएं दर्ज करें, इससे इसी प्रकार के अन्य ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करने में सहायता प्राप्त होगी।

मेक अप संबंधी प्रश्नावली

प्रथम नाम ....   अंतिम नाम...

जन्म तिथि ....   वर्षगांठ...

आवासीय पता..

व्यवसाय..

दूरभाष (आवास)..   मोबाइल...

प्रश्न 1 क्या आपने कभी पेशेवर मेकओवर करवाया है?   हां / नहीं

प्रश्न 2 यदि हां, तो उस सेवा के दौरान आपको क्या पसंद या नापसंद आया ?

....

प्रश्न 3 क्या आप सामान्य तौर पर मेक अप करती हैं   हां / नहीं

प्रश्न 4 क्या आपको स्वास्थ्य संबंधी कोई ऐसी बीमारी है जो आपकी त्वचा अथवा आंखों को संवेदनशील बना सकती है? यदि हां, तो कृपया उसका ब्यौरा दें।

....

प्रश्न 5 क्या आपको किसी सौंदर्य प्रसाधन वस्तु से एलर्जी ज्ञात है? यदि हां, तो कृपया उल्लेख करें।

....

प्रश्न 6 आपके चिंता के विशेष क्षेत्र कौन से हैं?

....

प्रश्न 7 आपका पसंदीदा रंग कौन सा है?

....

प्रश्न 8 आप उस खास अवसर पर कौन से रंग और ड्रेस स्टाइल को पहनने वाली हैं?

....

प्रश्न 9 क्या आप कांटेक्ट लेंस पहनती हैं?   हां / नहीं

प्रश्न 10 आप अपने मेक–अप के लिए किसी आदर्श चेहरे के बारे में बताएं ....

....

ग्राहक का हस्ताक्षर   तिथि

त्वचा और रंग के प्रकार को निर्धारित करना

किसी ग्राहक हेतु मेक अप का डिजाइन करने के लिए आपको निम्नलिखित **को** समझना चाहिए:

- त्वचा के प्रकार और स्थिति
- त्वचा का रंग

	SKIN TYPE	ETHNICITY
	FAIR	Very Light Caucasian
	LIGHT	Caucasian Light Asian
	MEDIUM LIGHT	Tan Caucasian Light Hispanic
	MEDIUM DARK	Hispanic Deeply Tanned Caucasian Medium Asian
	DARK	Islander Native American Mulatto Light African-American
	DEEP	African-American

त्वचा का प्रकार और रंग: मेक–अप सेवा प्रदान करने के एक भाग के रूप में एक मेक–अप आर्टिस्ट के लिए यह आवश्यक है कि वह सर्वप्रथम त्वचा के प्रकार एवं उसकी अवस्था का विश्लेषण करे। विभिन्न व्यक्तियों में मूलभूत त्वचा की बनावट में कोई अंतर नहीं होता किंतु प्रत्येक व्यक्ति की त्वचा का मनोवैज्ञानिक कार्य भिन्न होता है, जो हमारी त्वचा के प्रकार का निर्धारण करता है। मेक–अप के लिए सही सौंदर्य वस्तुओं और उत्पादों के चयन के लिए त्वचा के प्रकार और उसकी अवस्था के संबंध में सूचना आवश्यक है। त्वचा के प्रकार और इसकी अवस्था की पहचान करने के तीन तरीके हैं –

(1) शुरूआती अवलोकन (ग्राहक से प्रश्न पूछकर) ।

(2) देख कर विश्लेषण (ग्राहक की त्वचा को देखकर)।

(3) स्पर्श द्वारा विश्लेषण कर (ग्राहक की त्वचा को स्पर्श कर और महसूस कर)।

मुख्यतः त्वचा चार प्रकार की होती है–

(क) सामान्य

(ख) शुष्क

(ग) चिपचिपा/ तैलीय त्वचा

(घ) **म श्रत** त्वचा

मेक–अप करते समय आप संवेदनशील, परिपक्व त्वचा जैसी कुछ अन्य त्वचा प्रकारों से रूबरू हो सकते हैं।

विभिन्न प्रकार की त्वचा की विशेषताएं:

क्र. सं.	त्वचा के प्रकार	विशेषताएं	तस्वीर
1.	सामान्य त्वचा	• रोमछिद्र का आकार छोटा होता है। • नमी की मात्रा सही होती है। • त्वचा में समान रूप से चमक होती है। • रंग स्वस्थ्य होता है, त्वचा पर कोई रंजक या दाग नहीं होता है। • छूने पर यह त्वचा गर्म महसूस होती है।	
2.	शुष्क त्वचा	• रोमछिद्र का आकार छोटा और सख्त होता है। • नमी की मात्रा सही नहीं होती है। • **त्वचा की संरचना ठीक नहीं होती हैं।** • समय पूर्व बुढ़ापा सामान्य है; आंखों, नाक, मुंह और गर्दन के आसपास झुर्रियां देखी जा सकती है। • त्वचा संवेदनशील **व पपड़ी वाली होती** है। • इस प्रकार की त्वचा में धब्बे और असामान्य रंजक देखे जा सकते हैं।	
3.	चिपचिपा/ तैलीय त्वचा	• रोमछिद्र बड़े होते हैं। • इसमें नमी की मात्रा अधिक होती है। • त्वचा रूखी और मोटी होती है। • कतिपय रोग यथा मुंहासे, कमडन, मिलिया आदि तैलीय त्वचा पर उभर सकते हैं। • सामान्यतया त्वचा पर असामान्य रंजक होते हैं।	

4.	**म श्रत** त्वचा	• टी–क्षेत्र में रोमछिद्र बड़े होते हैं जबकि गालों पर उनका आकार छोटा और मध्यम होता है। • तैलीय क्षेत्र में नमी की मात्रा अधिक होती है और शुष्क क्षेत्र में इसकी मात्रा कम होती है। • असामान्य रंजक होता है। • टी–क्षेत्र में दाग–धब्बे हो सकते हैं और शुष्क क्षेत्र में **को शका** खंडित हो सकते हैं।	
5.	स्वेदनशील त्वचा	• इस प्रकार की त्वचा में गाल के भाग में खंडित केशिकाएं हो सकती हैं। • त्वचा पर सतह **चत्तेदार** **(फ्लैकिंग)** होती है। • जो त्वचा संवेदनशील होती हैं वे कतिपय चीजों के प्रति एलर्जी होती हैं । नोटः संवेदनशील त्वचा के लिए सदैव हाइपो एलर्जिक उत्पादों का इस्तेमाल करें।	
6.	परिपक्व त्वचा	• इस प्रकार की त्वचा शुष्क हो जाती है क्योंकि सेबासियस ग्रंथियां और स्वैट ग्रंथियां कम सक्रिय होती हैं। • अनियमित रंजक के धब्बे प्रकट हो सकते हैं। • गालों पर खंडित केशिकाएं प्रकट हो सकती हैं। • मांसपेशी की कसावट में कमी आने से चेहरे के नूर में कमी आती है।	

त्वचा रंग का निर्धारणः

मनुष्य को विभिन्न स्रोतों से रंगों की प्राप्ति होती है–

- मेलेनोसाइट्स से उत्पन्न मेलेनिन हमे गहरा भूरा वर्ण प्रदान करता है। इसमें उपस्थित मेलेनिन की मात्रा और इसके प्रकार न सिर्फ हमारी त्वचा को रंग प्रदान करता है बल्कि हमारे बालों और हमारी आंखों को भी रंग प्रदान करता है।
- हिमोग्लोबिन में उपस्थित हेम लाल रक्त कोशिकाओं को लाल रंग प्रदान करता है। हिमोग्लोबिन की सही मात्रा से त्वचा का रंग स्वस्थ्य दिखता है।
- केरोटिन इस त्वचा रंग को पीला रंगत प्रदान करता है।
- ऑक्सीजन की कमी से त्वचा के रंग में नीलापन आता है विशेषकर होठों, अंगूठों और उंगलियों के शीर्ष भाग पर।

त्वचा रंग का निर्धारण करते समय हमें पहले यह निर्णय करना चाहिए कि क्या उक्त त्वचा हल्की है या मध्यम या गहरी है। उसके पश्चात यह निर्धारित करना चाहिए कि रंगत उष्ण है या शीतल।

एक बार जब आप त्वचा के रंग के बारे में सुनिश्चित हो जाते हैं तो अपने फाउंडेशन को मैच करें और त्वचा रंग के साथ आंख, गाल और होठों के रंगों को मैच करें।

- यदि त्वचा का रंग हल्का है तो मृदु स्वभाविक रूप के लिए हल्के रंगों का प्रयोग करें।
- यदि त्वचा का रंग मध्यम हो तो मध्यम रंग से उक्त रूप निखरेगा।
- यदि त्वचा का रंग गहरा हो तो गहरी रंगत सबसे उपयुक्त होगी।

विश्व के अलग अलग भागों में लोगों की त्वचा की रंगत में सामान्य अंतर होता है और इन्हें मुख्यतः तीन समूहों में बांट सकते हैं:

- यूरोपीय और अंग्रेज मूल से काउकेसियन (गोरी जातियां)
- पीले अथवा सुनहले हल्के रंग वाले एशियाई मूल के लोग (पूर्ववासी जातियां)
- काले अथवा नीले रंग वाले अफ्रीकी (काली जातियां)

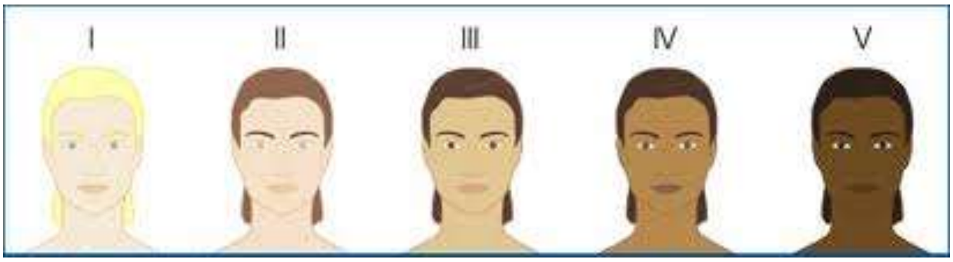

यह एक व्यापक अंतर है और यह संभव नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी श्रेणी में फिट करें।

सौंदर्य विशेषज्ञ के विचार से त्वचा को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है–

- उदासीन अथवा नीले रंगत वाला
- उष्ण अथवा नारंगी त्वचा रंगत

कार्य स्थल की तैयारी

1) मेक अप कक्ष प्रकाशमान और तटस्थ रंग से सज्जित होना चाहिए ताकि अनावश्यक छाया (Shadow) सृजन से बचा जा सके।

2) कक्ष पर्याप्त रूप से हवादार होना चाहिए।

3) प्रत्येक मेक अप आर्टिस्ट के लिए एक आईना, एक टेबल और प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए।

4) इलेक्ट्रीक प्वाइंट पर्याप्त होने चाहिए और इनके इस्तेमाल से पूर्व इसकी जांच कर ली जानी चाहिए।

5) गर्म और ठंडा पानी आने के लिए वाशबेसिन होना चाहिए।

6) आरामदायक तरीके से कार्य करने के लिए तापमान और नमी सही स्तर में होना चाहिए और यह स्थिर हो ताकि मेक अप के सामानों का रख रखाव सही तरीके से हो।

7) मेक अप कक्ष में प्रकाश भरपूर हो , आदर्श रूप में वही प्रकाश हो जिस प्रकाश में मेक अप को देखा जाना है क्योंकि रंग का आभास प्रकाश के बदलने पर बदल सकता है।

8) मेक अप अनुप्रयोग के लिए पर्याप्त जगह होना महत्वपूर्ण है । चूंकि मेक अप के कंटेनरों को साफ करना सामान्यतया कठिन होता है इसलिए जिन उत्पादों की आपको आवश्यकता हो केवल सदा उन्हें ही खोलें; और किसी भी चीज को लगाने से पूर्व उन सभी चीजों का ढ़क्कन खोलें। जब आपका अनुप्रयोग का कार्य संपन्न हो जाए तो अपने हाथ साफ कर लें और कंटेनरों को बंद कर दें।

ग्राहक को मेक अप के लिए तैयार करना

ग्राहक को मेक अप कक्ष में ले जाएं। मेक अप कार्य शुरू करने से पूर्व ग्राहक के साथ आप मेक अप योजना के बारे में चर्चा करें और उनके रिकार्ड कार्ड में महत्वपूर्ण ब्यौरों को नोट करें।

1. अपने हाथ साफ करें।

2. अपने ग्राहक को गाउन या साफ तौलिया लपटने दें अथवा उनके कपड़ों को ढ़कने के लिए **कैप** दें।

3. बालों की रक्षा करने के लिए हेयर लाइन के आसपास हेडबैंड अथवा हैयर क्लिप लगाएं।

4. चेहरे और गले में पहने किसी भी आभूषण को हटाकर सुरक्षित स्थान पर रख दें।

5. उनसे रिकार्ड कार्ड के अनुसार किन्हीं ज्ञात सौंदर्य प्रसाधन उत्पादों के प्रति एलर्जी के बारे में पूछे।

6. सफाई: मेक अप प्रक्रिया के लिए प्रथम आवश्यक कार्य त्वचा की सफाई है क्योंकि इससे त्वचा को मेक अप के लिए तैयार किया जाता है।

ग्राहक की त्वचा के प्रकार के अनुसार क्लींजर का चुनाव किया जाना चाहिए । कई प्रकार के क्लींजर आजकल उपलब्ध हैं:

- क्लींजिंग मिल्क
- फोमिंग क्लींजर
- क्लींजिंग बार
- औषधियुक्त क्लींजर
- क्लींजिंग ग्रेन्यूल्स

- आई मेक अप रिमूवर

आई मेक अप को हटाना: यह सुनिश्चित करें कि ग्राहक की आंखें बंद हों, भींगी हुई रूई पर आई मेक अप रिमूवर लें और उपरी आंख की पलकों पर आई मेक अप को बाहर की ओर पोछें । मेक अप लगी रूई को फेंक दें। दूसरी आंख के लिए नई रूई का इस्तेमाल करें।

लिप मेक अप को हटाना: भींगीं रूई पर उपयुक्त क्लींजर लगाएं, लिप्सटिक को पूर्णत: हटा दें । मेक अप लगी रूई को फेंक दें।

चेहरे और गले को अच्छी तरह से उपयुक्त क्लींजर से साफ करें। चेहरे और गले में थोड़ी मात्रा में क्लींजर लगाएं और इसे हल्का से मले और भींगी हुई रूई से क्लींजर के पूरी तरह हट जाने तक हटाते रहें। भींगी हुई रूई से एस्टेरीजेंट (तैलीय त्वचा के लिए) और टोनर (शुष्क त्वचा) को चेहरे और गले पर लगाएं।

7. आवर्धक लैंप के इस्तेमाल से त्वचा की जांच करें। उन क्षेत्रों की पहचान करें जहां विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

8. मोस्चेराइजर (यदि आवश्यक हो) लगाएं ।

मेक अप की तैयारी

एक बार जब आप परामर्श सत्र के दौरान सारी सूचनाएं एकत्रित कर लें तो आपको उक्त ग्राहक के लिए उपयुक्त मेक अप योजना के चयन की आवश्यकता होगी।

मेक अप करते समय मूलभूत और आवश्यक जरूरतों के बारे में ध्यानपूर्वक सोचें। मेक अप का प्लान बनाते समय निम्न के बारे में ध्यान रखें।

- किस संदर्भ में ग्राहक मेक अप की योजना बना रही है।
- किस क्षेत्र में विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।
- कपड़ों, आंखों और बालों का रंग कैसा है?
- त्वचा के प्रकार और तदनुसार ही मेक अप उत्पादों का चयन।
- चेहरे का आकार, चेहरे की खासियत, आयु और ग्राहक का पेशा।
- अनुप्रयोग क्रम।
- **प्रकाश की आवश्यकता** ।
- मेक अप लगाने के लिए आवश्यक समय का आकलन करें। अपेक्षित समय के आकलन में यथार्थवादी बने।

ग्राहक के साथ मेक अप योजना पर चर्चा करें। और आवश्यक समायोजन करें।

मेक अप का अनुप्रयोगः

1. एंटीसेप्टिक साबुन से अपने हाथ होएं।

2. ग्राहक **को कैप पहनायें**। गले के **कैप** और सिर **पर हैडबैड** का प्रयोग करें।

3. उचित क्लींजर से चेहरे और गले को अच्छी तरह से साफ करें।

4. टोनर और मोस्चराइजर का इस्तेमाल करें।

5. बेस लगानाः

क) थोड़ा सा प्राइमर लें और चेहरे पर समान रूप से लगा लें।

ख) कांसिलरः फाउंडेशन की अपेक्षा थोड़ा हल्का एक या दो रंगों का चयन करें। इसे आंखों के नीचे के छोटे–छोटे दागों या काले धब्बों को छिपाने के लिए लगाएं। कांसिलर में त्वचा की रंगत को सही करने के लिए **कई बेस रंग** हो सकते हैंः

1. हरा– यह उच्च रंग (लाल धब्बे) की प्रतिक्रिया में सहायक होता है।

2. नीला– हल्की (पीला) त्वचा से प्रतिक्रिया करता है।

3. नारंगी– नीले/काले धब्बों से प्रतिक्रिया करता है।

इसे ब्रश, स्पंज या अंगूली से लगाएं

ग) हाइलाइटरः भौंह रेखा, मस्तक, टुड्डी और गले की हड्डी को उभारने के लिए उजले या हल्के रंग का प्रयोग करें। स्पंज या **अंगुली** के **पैरों** सहारे इसे समान रूप से मिलाएं।

घ) कंटोरिंगः गाल की हड्डियों और अन्य आकृतियों, जिन्हें आप छोटा प्रतीत करना चाहते हैं, उनके नीचे अधिक गहरा रंग लगाएं। विभाजक रेखाएं बनने से बचने के लिए इसे सही तरीके से मिश्रित करें।

6. फाउंडेशन लगाएं:

ग्राहक की त्वचा के सदृश्य फाउंडेशन के समान रंग का चयन करें।

ग्राहक के जबड़े की रेखा अथवा ललाट पर फाउंडेशन के रंग की जांच करें।

होंठों और **आई लड** सहित संपूर्ण चेहरे को ढ़कने के लिए फाउंडेशन लगाएं।

फाउंडेशन के भौंह पर अवरूद्ध होने से बचें।

मुलायम ब्रश अथवा कॉस्मेटिक स्पंज की सहायता से फाउंडेशन लगाएं । कवरेज का परिक्षेप भिन्न हो सकता है, यदि वैज स्पंज का इस्तेमाल किया जाता है तो कवरेज हल्का होगा और यदि शुष्क स्पंज का इस्तेमाल किया जाता है तो कवरेज भारी होगा।

बाल रेखा और जबड़ा रेखा के आस पास विभाजक रेखाएं बनने से बचने के लिए फाउंडेशन को अच्छी तरह से मिलाएं।

7. पाउडर लगाना:

प्रति संक्रमण से बचने के लिए टिशु पर थोड़ी मात्रा में पाउडर निकालें। लगाने के लिए पाउडर ब्रश या पफ का इस्तेमाल करें। अच्छे परिणाम के लिए पारभासक पाउडर लगाएं। अपने ग्राहक से आंखों को बंद रखने के लिए कहें। पाउडर पफ का इस्तेमाल करें, संपूर्ण चेहरे पर पाउडर प्रेस करें और उसके पश्चात अतिरिक्त पाउडर को हटाने के लिए बड़े पाउडर ब्रश का इस्तेमाल करे। चेहरे के बाल को समतल करने के लिए अंतिम सिरे पर नीचे की ओर घुमाएं।

8. ब्लशर का प्रयोग:

यदि आप पाउडर ब्लशर का इस्तेमाल करते हैं तो इसके पूर्व फेस पाउडर का इस्तेमाल करें। यदि आप क्रीम ब्लशर का इस्तेमाल करते हैं तो पहले ब्लशर का इस्तेमाल करें और उसके पश्चात फेस पाउडर का इस्तेमाल करें। इससे ब्लशर को शेट करने और क्रीम ब्लशर की चमक को हटाने में सहायता प्राप्त होगी।

- नाक से कम से कम 1.5 इंच (दो अंगुली) हटा कर गाल पर रंग लगाएं।
- आंखों के कोटर क्षेत्र में गाल के रंग को मिश्रित न करें।
- ब्रश चलाने की दिशा उपर की ओर और बाल रेखा में नीचे की ओर होनी चाहिए।
- ब्लशर का विस्तार मस्तक अस्थि से बाहर नहीं होना चाहिए।

9. आई मेक अप का इस्तेमाल:

क) भौंह का रंगः आई ब्रो शेडो या पेंसिल के उपयुक्त रंग का चुनाव करें। भौंह पर ब्रश चलाएं ताकि अधिशेष फाउंडेशन या पाउडर को हटाया जा सके। आकार और रंग भरने के लिए हल्के हाथ से आई ब्रो रंग लगाएं।

ख) आई शेडोः

- हल्के आधार वाले रंग का चयन करें और आंखों की संपूर्ण पलकों पर लगाएं।
- शेडिंग कलर के रूप में भौंह की झुर्री तक मध्यम रंग लगाएं।
- आंखों को सुंदर बनाने के लिए आंखों की पुतली के भीतर उपरी भाग में आंखों के बाहरी कोने से गहरे रंग लगाएं।

ग) आई लाईनरः

- यदि आप पेंसिल लाईनर का इस्तेमाल कर रहे हैं तो इसे इस्तेमाल करने से पहले और बाद में तेज करें।
- स्पष्ट लाईन बनाने के लिए तरल लाईनर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- आई शेडो (चमक रहित) के ब्रश को पानी में भींगों कर लाईनर की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।
- जहां तक संभव हो बरौनी तक लाईनर लगाएं।

घ) मस्कराः अपने ग्राहक को नीचे देखने के लिए कहें। बरौनी पर कंघी करें। मस्करा ब्रश से नीचे से लगाते हुए उपर बरौनी तक इसे लगाएं।

बरौनी को स्वाभाविक छल्ला प्रदान करने के लिए मस्करा लगाने के पूर्व या उसके बाद आई लैस कर्लर का इस्तेमाल करें।

होठों के मेक अप का इस्तेमालः

क) लिप प्राइमर/ बामः लिप प्राइमर या बाम लगाने के लिए ब्रश का इस्तेमाल करें।

ख) लिप लाइनरः अपने ग्राहक को अपने होठों को फैलाने के लिए कहें। सर्वप्रथम होठों के बाहरी किनारों पर लाईन खीचे और उसके पश्चात लिप लाइनर भरें और लिपस्टिक के रूप में इसका इस्तेमाल करें। यह लिप्सटिक और रंग को अधिक देर तक बनाए रखता है।

ग) लिप्सटिकः लिप ब्रश से लिप्सटिक लगाएं । अपने ग्राहक को होठों को शिथिल करने और थोड़ा खोलने के लिए कहें। उर्ध्व दिशा में लिप्सटिक स्ट्रोक करें। टिशू से अधिशेष लिप्सटिक को पोछकर हटा दें। पुनः लिप्सटिक लगाएं।

घ) लिप ग्लो**स**: यदि आवश्यक हो तो ब्रश का उपयोग करते हुए थोड़ी मात्रा में लिप ग्लो**स** लगाएं।

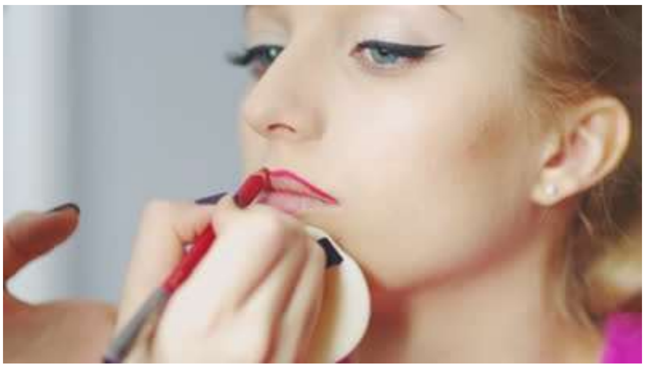

अभ्यास प्रश्न (सैद्धांतिक):

प्रश्न 1. ग्राहक से परामर्श करते समय पूछे जाने वाले **कुछ** प्रश्न लिखें।

प्रश्न 2. त्वचा के प्रकार की सूची दें। तैलीय त्वचा प्रकार की विशेषताओं के बारे में लिखें।

प्रश्न 3. उन बिंदुओं को लिखें जिन्हें ग्राहक को मेक अप के लिए तैयार करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए।

प्रश्न 4. ग्राहक के लिए आई मेक अप की प्रक्रिया लिखें।

अभ्यास प्रश्न (व्यवहारिक):

प्रश्न 1. मेक अप के लिए ग्राहक को तैयार करने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।

प्रश्न 2. मेक अप करने के पूर्व त्वचा विश्लेषण की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।

प्रश्न 3. मेक अप लगाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।

अध्याय –3: **कोरेकटिव** मेक अप

शोधक मेक अप में मुख्यरूप से हल्के और गहरे रंग का प्रयोग कर चेहरे की रूपरेखा और विशिष्टता को उभारने पर विशेष बल दिया जाता है।

चेहरे की रंगत पर हल्के या गहरे आधार का प्रयोग कर आप उसकी विशिष्टि को उभार या छायित कर एक विभ्रम पैदा कर सकते हैं।

छायाकरण : छायाकरण में आधार का प्रयोग कर गहरे मेक अप छायाभास को मिला कर चेहरे के आकार या विशिष्टता को घटाया जाता है।

विशिष्टता प्रकट करना: विशिष्टता प्रकट करने के लिए चेहरे पर हल्के रूप–सज्जा छायाभास को मिलाया जाता है ताकि चेहरे के आकार या रूपरेखा को उभारा जा सके ।

रेखाएँ : **आइब्रो पै संल** या आईलाईनर के द्वारा नेत्र क्षेत्र में रेखाओं के प्रयोग से विभ्रम पैदा किया जाता है।

सामान्यतः हाईलाईट अनुप्रयोग के क्षेत्र	सामान्यतः छायाभास अनुप्रयोग के क्षेत्र
• भौंहों की ऊपरी हड्डी	• गाल की हड्डी के नीचे के गड्ढे
• पलक का मध्य भाग	• ठोढ़ी के नीचे की हड्डी
• ललाट का मध्य भाग	• **हेयरलाइन**
• गाल की हड्डी	• **नाक की हड्डी के साथ**
• **ठोड़ी**	• जबड़े की रेखा **(कनपटी)**

1. चेहरे का आदर्श अनुपात और आकृति :

रूपसज्जा उपयोग करने का मुख्य कारण ग्राहक के चेहरे के अनाकर्षक पहलूओं को छिपा कर आकर्षक पहलूओं को उभारना है। रूपसज्जा का प्रयोग एक कला है साथ ही असरदार बनाव श्रृंगार का लक्ष्य ग्राहक के व्यक्तित्व को उभारना है। जिस प्रकार एक कलाकार अपने कैनवास को अलग–अलग खण्डों में बाँटता है उसी प्रकार रूपसज्जाकार भी शोधक बनाव–श्रृंगार का प्रयोग करने से पहले चेहरे को अलग–अलग हिस्सों में विभक्त कर लेता है। चेहरे की आकृति को तीन क्षैतिज और तीन उर्ध्वाकार रेखाओं से बाँट दिया जाता है।

क्षैतिज खण्ड

1. **हेयरलाइन** से लेकर नासिका सेतु तक
2. नासिका सेतु से लेकर नाक के अग्र भाग तक
3. नाक के अग्र भाग से लेकर ठोढ़ी के नोक तक

उर्ध्वाधर खण्ड

1. दाहिने **हेयरलाइन** से लेकर दाहिने आँख की पुतली तक
2. दाहिने आँख की पुतली से लेकर बाएँ आँख की पुतली तक
3. बाएँ आँख की पुतली से लेकर दाहिने **हेयरलाइन** तक

आकृति समन्वय के स्वीकार्य मानक

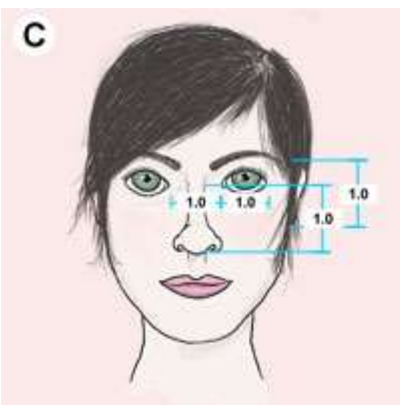

स्वर्णिम अनुपात

1. एक अण्डाकार आकृति सामान्यरूप से **गाल** की हड्डियों के मध्य पाँच आँख की दूरी के बराबर **होती** है।
2. आँखों की सज्जा एक आँख की चौड़ाई तक होना चाहिए।
3. भौंहों का उच्चतम मेहराब आँख की परितारिका से ऊपर होना चाहिए।
4. **भौहं** का भीतरी किनारा आँख के भीतरी किनारे के ठीक ऊपर होना चाहिए।
5. नाक का फैलाव एक आँख की चौड़ाई के समान होना चाहिए।
6. मुँह दो आँखों की चौड़ाई के समान होना चाहिए।
7. कान और नाक का निचला हिस्सा एक ही स्तर पर स्थित होना चाहिए।
8. नाक की लम्बाई चेहरे की लम्बाई का एक–तिहाई होना चाहिए।
9. ऊपरी होंठ की चौड़ाई निचले होंठ के मुकाबले कम हो।
10. मुँह का किनारा आँख की पुतली के ठीक नीचे हो।

चेहरे की विशेषताएं और आकार का विश्लेषण :

चेहरे का आकार चेहरे की हड्डियों की बनावट से प्रभावित होता है।

मूल रूप से चेहरे का आकार सात तरह का होता है। लक्षणों के सही अनुपात वाले अण्डाकार चेहरे को आदर्श माना जाता है।

चेहरे का आकार	चेहरे का आकार	विशेषता
अण्डाकार	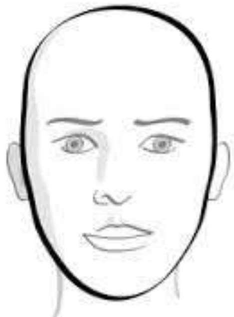	इस प्रकार के चेहरे को उत्कृष्ट माना जाता है। ऐसे चेहरे की लम्बाई इसकी चौड़ाई के मुकाबले 1.5 गुणा ज्यादा होती है। इस आकार के चेहरे पर शोधक रूप–सज्जा की जरूरत नहीं होती है।
गोलाकार	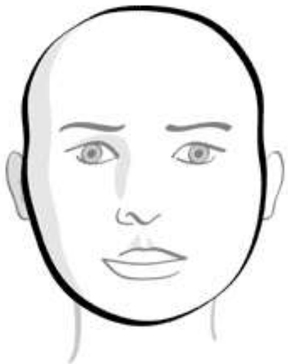	• इस तरह के चेहरे की लम्बाई और चौड़ाई समान होती है जिसके फलस्वरूप इसका आकर वृत जैसा होता है। • ललाट और जबड़े की रेखा की चौड़ाई लगभग बराबर होती है। • चेहरा गाल की हड्डियों के समीप सर्वाधिक चौड़ा होता है। • जबड़े की रेखा और केशरज्जू गोल होते हैं।

चौकोर (वर्गाकार)	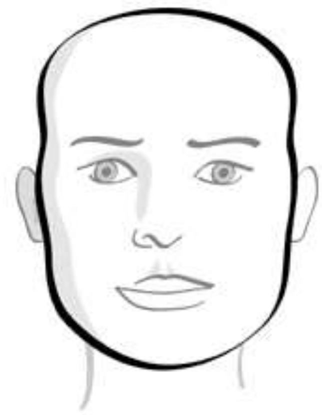	• चेहरा लम्बाई और चौड़ाई में लगभग समान होता है। • जबड़े की रेखा और ललाट की चौड़ाई एक बराबर होती है। • गाल और चेहरे के बगल का हिस्सा लगभग सीधा होता है। • ललाट चौड़ा और केशरज्जू सीधा होता है। • चेहरा गाल की हड्डियों पर सर्वाधिक चौड़ा होता है।
आयताकार	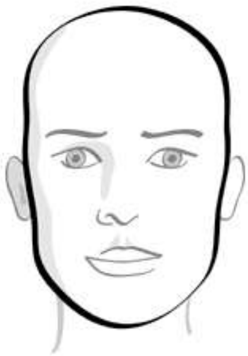	• चौड़ाई के मुकाबले चेहरे की लम्बाई ज्यादा होती है। • ठोढ़ी नुकी**ली** होती है। • गालोंकी रेखायें और चेहरे के बगल का हिस्सा सीधा होता है। • ललाट लम्बा और चौड़ा होता है तथा केश रज्जू पर गोल हो सकता है। • ललाट पर चेहरा सर्वाधिक चौड़ा होता है।
त्रिकोणीय (नाशपाती)	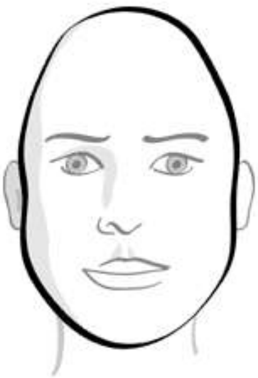	• चेहरे की लम्बाई चौड़ाई से अधिक होती है। • जबड़े की रेखा ललाट से चौड़ी होती है। • जबड़े की रेखा चौड़ी और मजबूत होती है। • ललाट संकीर्ण होता है। • चेहरा जबड़े की रेखा पर सर्वाधिक चौड़ा होता है।
उल्टा त्रिकोण (दिल के आकार का)	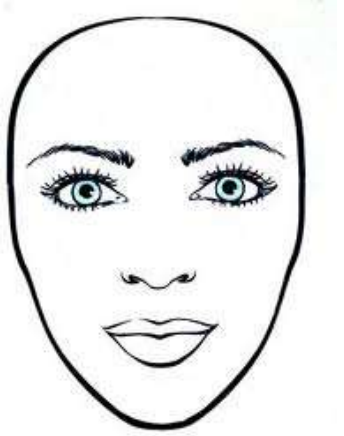	• ललाट और जबड़े की रेखा बराबर लगती है। • ठोढ़ी नुकी**ली** होता है। • गाल की रेखा और चेहरे के बगल का हिस्सा जबड़े की रेखा पर आकर खत्म हो जाता है। • केशरज्जू पर ललाट चौड़ा और गोल होता है। • चेहरा ललाट पर सर्वाधिक चौड़ा होता है लेकिन गाल की हड्डी भी चौड़ी और प्रमुखता से नजर आती है।

डायमंड	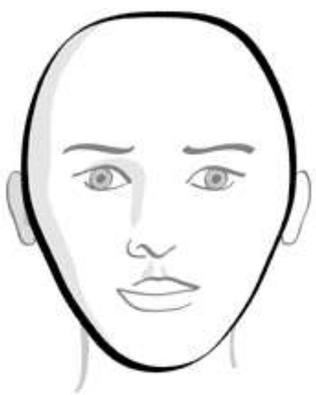	• चेहरा चौड़ाई के मुकाबले ज्यादा लम्बा होता है। • जबड़े की रेखा और ललाट की चौड़ाई एक समान होती है। • ठोढ़ी नुकी**ली** होती है। • गाल ऊँचे और नुकीले होते हैं। • ललाट संकीर्ण होता है। • चेहरा गाल की हड्डियों पर पर सर्वाधिक चौड़ा होता है।

चेहरे के विभिन्न आकारों के लिए शोधक रूप–सज्जा :

चेहरे का आकार	**कोरेकटिव** तकनीक
अण्डाकार	इस प्रकार के चेहरे को उत्कृष्ट माना जाता है। इस आकार के चेहरे में शोधक रूपसज्जा की आवश्यक्ता नहीं होती है।
गोलाकार	• चेहरे को पतला दिखाने के लिए सिर के ऊपरी भाग से जबड़े तक **शे डंग** उत्पादों का प्रयोग करें। • कान के समानान्तर त्रिभुज के आकार में ब्लशर (blusher) का उपयोग करें।
चौकोर (वर्गाकार)	• जबड़े की रेखा और केशरज्जू के कोणें पर **शेड** प्रदान करें। • सिर के ऊपरी भाग और गाल की हड्डियों के क्षेत्र में छायाकरण का प्रयोग करें। • ब्लशर का प्रयोग चक्राकार गति में करते हुए सिर के ऊपरी भाग तक जायें।
आयताकार	• ललाट पर विशेष बल दें। • ठोढ़ी के बगल के हिस्सों और जबड़े की रेखा के कोणों पर छायाभास प्रदान करें। • गाल के भरे हुए हिस्सों पर ब्लशर का प्रयोग करें; इसे गाल की हड्डियों पर प्रयोग करते हुए सिर के ऊपरी भाग तक ले जायें।
त्रिकोणीय (नाशपाती)	• ललाट पर विशेष बल दें। • नुकीली ठोढ़ी पर छायाभास का प्रयोग करें। • ललाट के किनारों ओर सिर के ऊपरी भाग पर छायाकरण का प्रयोग करें। • ब्लशर का प्रयोग गाल की हड्डियों के नीचे सिर के ऊपरी भाग की तरफ ऊपर और नीचे की दिशा में करें।
उल्टा त्रिकोण (दिल के आकार का)	• **शे डंग** उत्पादों का प्रयोग केशरज्जू पर करें। • ठोढ़ी की लम्बाई कम करने के लिए **शे डंग** उत्पादों का प्रयोग करें। • चेहरे की रेखा और सिर के ऊपरी भाग को विशिष्टता प्रदान करें। • गाल की हड्डियों पर ब्लशर का उपयोग करें।
डायमंड	• **शे डंग** उत्पादों का इस्तेमाल ऊँची ठोढ़ी के मध्य भाग में करें ताकि उनकी लम्बाई कम दिखे। • सिर के ऊपरी भाग और जबड़े की रेखा पर विशेष बल दें। • गाल की हड्डियों पर ब्लशर का प्रयोग करें।

आँखों के लिए **कोरेकटिव** मेक अप :

चेहरे की विशेषताओं को संतुलित करने में आँखों का विशेष महत्व होता है। आँखों पर किया गया शोधक रूपसज्जा का सही प्रयोग विभ्रम पैदा कर चेहरे और रूपसज्जा के पूरे **प्रभाव** को काफी बढ़ा देता है।

आंखों का आकार	शोधक तकनीक
काले धब्बे	काले धब्बों को कम करने के लिए सही **कंसीलर** का प्रयोग करें।
गोलाकार आँखें	• पलकों के ऊपर गहरे आई–शैडो का प्रयोग करें। • आई–लाईनर को ऊपरी एवं निचली पलकों के बाहरी हिस्से तक लगायें; इस तकनीक से आँखें लम्बी नजर आती है।
छोटी आँखें	• ऊपरी पलक पर हल्के रंग का आई–शैडो लगाएं। • अंदरूनी पलक पर सफेद आई–लाइनर **पै संल** का प्रयोग करें। • भौंह की रेखा को विशिष्टता प्रदान करें ताकि आँखों का क्षेत्र खुला नजर आए। • निचली पलक के बाहरी किनारे पर हल्के रंग के आई–लाइनर का प्रयोग करें। • बाहरी किनारे की बरौनी पर **ध्यान** केंद्रित करते हुए **मस्कारा** का उपयोग करें फिर आई–लैश–कर्लस प्रयोग में लाएं।
गहरी आँखें	• हमेशा हल्के रंग के आई–शेडों का इस्तेमाल करें। • ऊपरी और निचली पलकों के बाहरी किनारों पर बाहर की तरफ बढ़ते हुए आई–लाइनर का प्रयोग करें। • निचली पलक के अंदरूनी हिस्से में पतली आई–शैडो रेखा प्रयोग में लाएं।
लंबी पलकें	• ऊपरी पलक के मध्य भाग में हल्के हाईलाईटर का प्रयोग करें। • ऊपरी पलक की रूपरेखा बनाने के लिए गहरे आई–शैडो का इस्तेमाल करें। • हल्के आई–लाइनर का प्रयोग सिर्फ निचली पलक पर ही करें।
बड़ी आँखें	• ऊपरी पलक के क्षेत्र में **मैट** आई–शैडो का प्रयोग कर अच्छी तरह मिलाएं। • भौंहों की रूपरेखा को विशिष्टता प्रदान करें। • आई–लाईनर का प्रयोग सिर्फ नीचे की पलक के अन्दरूनी हिस्से में करें।
नजदीक स्थित आँखें	• ऊपरी पलक के अन्दरूनी हिस्से में हल्के आई–शैडो का प्रयोग करें। • ऊपरी पलक के बाहरी किनारे पर गहरे आई–शैडो का प्रयोग करें। • भौंहों के बीच दूरी बनाएँ। • ऊपरी पलक के मध्य भाग से लाइनर का इस्तेमाल शुरू कर उसे बढ़ाते हुए आँखों के बाहरी किनारे तक जाएँ।
चौड़ी आँखें	• ऊपरी पलक के अन्दरूनी हिस्से में गहरे आई–शैडो का प्रयोग करें। • ऊपरी पलक के बाहरी हिस्से में हल्के आई–शैडो का प्रयोग करें। • भौंहों की अन्दरूनी रेखाओं को बढ़ाएं ताकि वह एक–दूसरे के करीब नजर आए। • गहरे आई–लाइनर का प्रयोग ऊपरी पलक के अन्दरूनी आधे हिस्से में करें।

नाक के लिए **कोरेकटिव** मेक अपः

बड़ी नाक	• नाक पर गहरे फाउंडेशन का प्रयोग करें। • नाक के बगल और गाल के हिस्सों पर हल्के फाउंडेशन का प्रयोग करें। • नाक के पास ब्लशर का प्रयोग करने से बचें।
छोटी नाक	• नाक के मध्य भाग और आँखों के बीच हल्के फाउंडेशन का प्रयोग करें।
चौड़ी नाक	• नाक की नासाछिद्र के बगल में गहरे फाउंडेशन का इस्तेमाल करें। • नाक के मध्य भाग में हल्के फाउंडेशन को लगा कर अच्छी तरह मिलाएँ।

<u>होंठ के लिए **कोरेकटिव** मेक अप :</u>

होंठ की बाहरी रूपरेखा काफी हद तक सुनिश्चित होती है और इसमें बदलाव काफी जटिल होता है। होंठ के ऊपर और नीचे की त्वचा पर किया गया रंगों का इस्तेमाल बहुत ज्यादा नजर आता है। फिर भी कई तरह के रंगों और शोधक तकनीकों का प्रयोग कर सही अनुपात का विभ्रम पैदा किया जा सकता है।

पतले होंठ	• होंठ **पै संल** का प्रयोग कर मनचाहा आकार रेखांकित करें। • लिपस्टिक के रंग का इस्तेमाल करें। • पॉउडर से **अवशो षत करने** के पश्चात फिर से रंग लगााएँ।
छोटा मुहँ और होंठ	• होंठों को रेखांकित करने वाली **पै संल** का प्रयोग कर ऊपरी और निचले होंठों की रूपरेखा बनाएँ। • हल्के या **तुषारिक** रंगों में लिपस्टिक का प्रयोग करें।
बड़े,भरे हुए होंठ	• होंठों की प्राकृतिक रेखा के ठीक अन्दर एक महीन रेखा बनाएँ। • ध्यानाकर्षण से बचने के लिए हल्के, **मैट** और प्राकृतिक रंगों के इस्तेमाल से बचें। • होंठों पर चमकीले उत्पादों के प्रयोग से बचें।
असमयित होंठ	• आधार लगाएँ। • जरूरी सुधारों के लिए **लप–पै संल** का प्रयोग करें। • एक मूल रंग का प्रयोग करें, अतिरिक्त लिपस्टिक को साफ करें। • होंठों का रंग लगाएँ।
झुर्रीदार होंठ	• होंठों पर आधार लगाकर अच्छे से पाउडर का प्रयोग करें। • होंठ–तुलिका की मदद से होंठों की रूपरेखा बनाएँ। • रूपरेखा के अन्दर **मैट** लिपस्टिक का प्रयोग करें। • कभी भी लिप–ग्लौस का प्रयोग न करें।

अभ्यास प्रश्न (सैद्धान्तिक) :

1. चेहरे के सात मूल आकारों को ठीक करने के लिए **शे डंग** और हाइलाईटर के प्रयोग का तरीका प्रदर्शित करें।
2. निम्नलिखित के लिए शोधक रूप–सज्जा लिखें।
   क. चौकोर चेहरा
   ख. छोटी आँखें
   ग. चौड़ी नाक
   घ. झुर्रीदार होंठ
3. रेखांकन के द्वारा चेहरे के आदर्श अनुपात का वर्णन करें।

अभ्यास प्रश्न (व्यवहारिक) :

1. चेहरे के आकार को ठीक करने के लिए छायाकरण और हाईलाईटर के प्रयोग का तरीका प्रदर्शित करें।
2. चेहरे के विभिन्न आकारों के लिए शोधक रूपसज्जा का प्रदर्शन करें।
3. नजदीक अवस्थित और चौड़ी आँखों के लिए **शे डंग** रूपसज्जा का वर्णन करें।
4. विषम होंठ और बड़े नाक की शोधक रूपसज्जा का प्रदर्शन करें।

दिन का मेकअप

दिन के रूपसज्जा के लिए बहुत ही सौम्य एवं **प्राकृतिक** दिखने वाला प्रभाव सर्वोत्तम होता है। रूपसज्जा **प्राकृतिक** सौन्दर्य को बढ़ाने वाला होना चाहिए न कि वह कृत्रिम लगे। **कोरेकटिव** रूपसज्जा का प्रयोग काफी सूक्ष्मता से किया जाना चाहिए क्योंकि दिन की **रोशनी** में किसी भी प्रकार की संशुद्धि नजर आ जाती है। त्वचा की रंगत को एकरूपता प्रदान करने के लिए हमेशा हल्के और उसी रंग का आधार प्रयोग में लायें। दिन के समय आँखों के लिए तेज रंगों के प्रयोग से बचें तथा हल्के ब्लशर का प्रयोग करें। काजल का उपयोग कर आँखों के क्षेत्र को प्रदर्शित करें या अगर आई–लाइनर को प्रयोग में लाते हैं तो उसे सावधानी पूवर्क लगाकर अच्छे से मिला लें। होंठों की रेखा और लिपस्टिक का रंग समान होना चाहिए साथ ही उसका प्राकृतिक दिखना भी बहुत जरूरी है। ध्यान रहे कि किसी भी प्रकार की रेखा लक्षित न की जा सके उसे होठों पर ठीक से मिलाएँ।

<u>संध्याकालीन रूपसज्जा</u> :

संध्याकालीन रूपसज्जा का सिद्धान्त दिन के रूपसज्जा के सिद्धान्त के समान ही है। **हॉला क** गालों और होठों के आस–पास ज्यादा रंगों का प्रयोग कर कृत्रिम **रोशनी** के प्रभाव का प्रतिकार किया जा सकता है। रूपरेखांकन कान्तिवर्धकों के सतर्क प्रयोग द्वारा चेहरे की विशेषताओं को उभारें। गाल एवं आँखों के आसपास **चमकीले** रंगों का प्रयोग किया जा सकता है। आँखों को **व शष्ट** बनाने के लिए कृत्रिम–**आइलैशन** का प्रयोग करें। आँखों के रंग को अधिक आकर्षक बनाने के लिए **फैशन** शेड्स अथवा **मस्कारा** का प्रयोग करें। लिप–ग्लौस या **चमकीले** लिपस्टिक का प्रयोग आपके संध्याकालीन रूपरंग में अधिक मोहकता जोड़ देता है।

<u>दुल्हन का मेक अप</u>

दुल्हन की रूपसज्जा या श्रृंगार भारतीय विवाह के समय किया जाने वाला एक विशेष अवसर रूपसज्जा है। भारतीय दुल्हन श्रृंगार ; परंपरा, धर्मविधि एवं धर्म के अनुसार एक से दूसरे प्रांत में बदल जाता है। दुल्हन की रूपसज्जा करते समय यह ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि श्रृंगार दिन के लिए है या रात के लिए, घर के अंदर के कार्यक्रम के लिए है कि घर के बाहर के कार्यक्रम के लिए, साथ ही इस महत्वपूर्ण पहलू का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए कि श्रृंगार को कृत्रिम प्रकाश में देखा जायेगा या नैसर्गिक प्रकाश में।

श्रृंगार के रंग का उस अवसर पर पहने जाने वाले दुल्हन के परिधान से सामंजस्य होना चाहिए। इसके बाद अवसर के अनुरूप रूपसज्जा उत्पादों का चयन कर उसका सही प्रयोग करें।

शादी समारोह में छायांकण एक प्रमुख कार्य होता है इसलिए रूप–सज्जाकरण के समय समारोह के अवसर होने वाली **रोशनी** एवं चमक का ध्यान रखें। **रोशनी** की चमक जितनी ज्यादा होगी रूपसज्जा की रंजकता उतनी कम दिखेगी। ऐसे में रूपसज्जा का गहन प्रयोग होना चाहिएं। चूँकि विडियोग्राफी की **रोशनी** में तेल आधारित रूपसज्जा पिघल सकती है इसलिए यह सलाह दी जाती है कि ऐसे अवसरों पर जलरोधक आधार वाले जैसे कि पैनकेक, सूपरा कलर इत्यादि का प्रयोग करें। आँखों की सज्जा के लिए मैट परिसज्जा रंगों के प्रयोग पर बल दिया जाता है और चमक लगाकर कर इसे उजागर किया जाता है। ललाट पर दुल्हन बिंदी का प्रयोग सामान्यतः उस राज्य में चलने वाले लोकाचार पर निर्भर करता है।

रूप–सज्जा क्रम :

1. ग्राहक को तैयार करें।
2. दाग–धब्बों को छिपायें।
3. त्वचा के आधार पर पैनकेक/ फाउंडेशन का प्रयोग करें।
4. चेहरे की रूपरेखा का **निर्धारण**
5. ब्ल**शर** का प्रयोग करें।
6. भौंहों की सज्जा करें / भौंहो के नीचे की जगह को प्रकाशित करें।
7. अगर जरूरी समझें तो कृत्रिम बरौनियों का प्रयोग करें।
8. आँखों की सज्जा (आई–शैडो और आई लाईनर) का प्रयोग।
9. दुल्हन बिंदी का प्रयोग
10. अंजन (मस्करा) का प्रयोग
11. होंठों के रंग का प्रयोग

नाट्यशाला एवं दूरदर्शन के लिए रूपसज्जा :

नाट्यशाला के लिए मेक अपः

छोटी नाट्य मंडलियों में कलाकार अपने रंग–रूप का खुद से ध्यान रखते हैं और बहुत सारी महिला कलाकार ज्यादातर समय सामान्य रूपसज्जा का ही प्रयोग करती है।

बड़े–बड़े सभागारों में प्रदर्शन बड़े पैमाने पर होता है इसलिए कलाकार खुद से रूपसज्जा की जिम्मेवारी नहीं लेता है। बड़े सभागारों में प्रदर्शन करते समय रूपसज्जा, दूरदर्शन एवं सिनेमा में किये जाने वाले रूपसज्जा को काफी तीक्ष्ण और भरी होना चाहिये।

चूँकि सभागारों में **कहीं** क्लोजअप नहीं होता है इसलिए रूपसज्जा और बालों का गहरा और सुस्पष्ट होना जरूरी है।

नाट्यशाला के लिए रूपसज्जा करते समय दूरी और **रोशनी** का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मंच पर रूपसज्जा अत्यधिक बोझिल या भारी नहीं होना चाहिए। आप सही रंगों और छायाकरण का चुनाव कर उन्हें सही जगह पर लगायें ताकि चेहरे को स्पष्टता दी जा सके।

सामान्य तौर पर मंच की अभिनेत्रियों के लिए सुस्पष्ट नेत्र सज्जा, चमकदार लिपस्टिक और गालों पर गहरे रंगों का प्रयोग रूपसज्जा में प्रयुक्त किये जाने वाले प्रमुख तत्व हैं। रूपसज्जा के समय किसी भी प्रकार की गहरी रेखा के उभरने से बचें। गहरे रंगों का प्रयोग करें लेकिन उनका इसतेमाल सही जगहों पर हो और उन्हें अच्छे से मिलायें। बड़े सभागारों में सिर्फ सामने की पंक्ति में बैठे कुछ लोग ही रूपसज्जा प्रभेद को समझ सकते हैं, मध्य और अंतिम पंक्ति के दर्शक इसे प्रदर्शन, लिबास, **रोशनी** और कृत्रिम बालों के एक संपूर्ण चित्र के तौर पर ही देखेंगे।

दूरदर्शन के लिए मेक अप :

दूरदर्श्न एवं सिनेमा के लिए मेक अप कलाकारों एवं दूसरे कलाकारों जैसे अभिनेता, निर्देशक, छायाकार, लाईट–मैन, कला निर्देशक आदि के मध्य सही तालमेल होना चाहिए ताकि मनचाहा प्रभाव उत्पन्न किया जा सके। इसके अलावा दूरदर्शन या सिनेमा के लिए मेक अप करने से पहले कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है :

1. रंगों का चयन फिल्मांकन के लिए प्रयोग की जाने वाली फिल्म पर निर्भर करता है।
2. फिल्मांकन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली **रोशनी** और रंगों का प्रभाव उत्तपन्न करने के लिए उपयोग किये जाने वाले फिल्टर मेक अप के लिए रंगों के चयन को प्रभावित करते हैं।
3. कपड़ों की शैली और रंग मेक अप को प्रभावित करते हैं।
4. मेक अप का निर्धारण करते समय कलाकार के चेहरे का आकार, विशिष्टता, त्वचा की रंगत बहुत महत्वपूर्ण कारक हैं।
5. कलाकार का चरित्र एवं अभिनीत की जाने वाली भूमिका मेक अप निर्धारण का एक महत्वपूर्ण कारक है।

देह–सज्जा कला और गोदना :

बॉडी मेकअप कला में मॉडल का शरीर कलाकार का कैनवास बन जाता है जो रूपसज्जा का एक सर्वाधिक अभिव्यक्तिकारक एवं रचनात्मक रूप है। इतिहास की शुरूआत से ही मानव अपने शरीर पर अपने आप को अभिव्यक्त करने का सचेत प्रयास, अपनी सामाजिक हैसियत का दिखावा, धार्मिक अभिरूचि या राजनैतिक पसंद को दिखाने के लिए चित्रकारी करवाते या गोदना बनवाते थे। पारम्परिक तौर पर रंग सजावट की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। इसलिए दुनिया की विभिन्न जनजातियों में अपने शरीर को रंग से सजाने की क्रिया उनके अनुष्ठानों और शुभअवसरों का महत्वपूर्ण अंग बन गया।

बॉडी मेकअप के लिए मेहँदी की चित्रकारी एक पारम्परिक तकनीक है। पारम्परिक तौर पर मेहँदी हाथों और पैरों पर लगाई जाती है लेकिन हर धर्म में इसका प्रतिरूप अलग ही होता है। आजकल देहसज्जा के लिए स्थायी गोदना काफी प्रचलित है। यह ऐसे लोगों के लिए है जो अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करना या अपनी पहचान को व्यक्त करना चाहते हैं।

<u>**बॉडी मेकअप** कला की तकनीकें</u> :

बॉडी मेकअप कला, कला का ऐसा स्वरूप है जिसमें जहाँ तक आपकी सोच का सवाल है उसकी कोई सीमा नहीं है। इस कला को संभव बनाने के लिए लगभग हर प्रकार के माध्यमों जैसे कि जल–रंग, चिकनाईयुक्त–रंग, छद्मावरण उत्पाद, सिलिकॉन–रंग या फूहार सज्जा इत्यादि। रंगों के अतिरिक्त पंखों, बटनों, फूलों, जिप इत्यादि का उपयोग भी उपयुक्त त्वचा गोंद का प्रयोग कर किया जा सकता है।

<u>अस्थायी गोदने का प्रयोग</u> :

1. सर्जिकल स्पीरिट का प्रयोग कर त्वचा को ठीक से साफ कर लें। यह त्वचा से तैलीय प्रभाव को समाप्त कर देगा।
2. एक अभिकल्पना को कागज पर रेखांकित करें। अब उस अभिकल्पना को मुक्त हाथों से या कार्बन की मदद से ग्राहक के शरीर पर उकेरें। इस कार्य के लिए स्टेनसिल तकनीक का भी प्रयोग किया जा सकता है।
3. अब अपने चुने हुए मीडियम का रंग भरें।
4. अधिक समय तक चलने के लिए गोदने पर **पाउडर** बुरक कर सुखायें या स्थिरीकरण स्प्रे का छिड़काव करें।

<u>**फोटोग्राफी** के लिए रूपसज्जा</u> :

फोटोग्राफी के लिए रूपसज्जा किसी खास अवसर पर जिस व्यक्ति का **फोटो** तैयार करना है के आधार पर निर्धारित किया जाता है। एक **फोटोग्राफर** को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि **फोटो** नैसर्गिक प्रकाश में या कृत्रिम प्रकाश में लिया जाना है साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि **फोटो** रंगीन होगा या श्वेत–श्याम या दोनो। इन बातों को ध्यान रखते हुए सही उत्पादों का चयन कर सही परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

फोटो के लिए रूपसज्जा आरंभ करने के पूर्व प्रथम चरण में ग्राहक से **बातबीच** कर उसकी त्वचा का विश्लेषण, उसके चेहरे की विशिष्टता, **एलर्जी** और छद्मावरण किये जाने वाले स्थानों को समझें। दूसरी महत्वपूर्ण चीज जो **फोटो** के लिए रूपसज्जा की तैयारी के पूर्व सुनिश्चित कर लेनी चाहिए कि **फोटो** निकालने का समय क्या है, स्थान जैसे खुले में या घर के अंदर है, साथ ही स्थान पर **रोशनी** की क्या व्यवस्था है। इन सभी कारकों को ध्याान में रखते हुए रूपसज्जा उत्पादों का चयन कर उसका तदनुसार प्रयोग करें।

<u>प्रौढ त्वचा के लिए रूपसज्जा</u>:

जैसे जैसे त्वचा की उम्र बढ़ती है उसका रंग फीका हो जाता है साथ ही वह पतला भी हो जाता है। झुर्रियाँ, गालों के क्षेत्र में पतली रेखाओं का उभरना, जबड़े और भौंहों के पास की त्वचा ढ़ीली हो जाती है। उम्र के साथ चेहरे की त्वचा अपना तनाव खो देती है क्योंकि चेहरे पर चर्बी वाली कोशिका घट जाती है ; त्वचारूखी हो जाती है, उसकी सेबैसुअस और सनड्रीफेरस ग्रन्थियों की सक्रियता कम हो जाती है।

प्रौढ़ त्वचा पर रूपसज्जा करने के पूर्व **निम्न ल खत** बिन्दुओं का अवश्य ध्यान रखना चाहिए :–

1. त्वचा से मेल खाता **तौ लय** फाउंडेशन का चयन करें।
2. पारभासी पॉउडर का हल्का प्रयोग करें लेकिन आँखों की कोटर में इसके प्रयोग से बचें।
3. वार्म टोन में ब्लशर का प्रयोग करें, बहुत चमकीले **शे डंग** से बचें।
4. केवल मैट आई शैडो का भूरे या ग्रे रंग का प्रयोग करें। चमकीले और तुषारित रंगों से बचें।
5. भौहों को बनायें तथा अगर जरूरी लगे तो शोधक प्रयोजन के लिए कृत्रिम बरौनियों का प्रयोग करें।
6. होंठो को आकार देने के लिए लिपलाईनर का प्रयोग करें। **क्रीम** लिपस्टिक का प्रयोग करें । लिपग्लॉस का प्रयोग न करें क्योंकि इससे होठों से लिपस्टिक **फैल** सकती है।

छद्मावरण मेक अप

किसी विशिष्ट उत्पाद की मदद से त्वचा के अवांछित और अनचाहे **निशानों** को छिपाने की कला को छद्मावरण कहते हैं। ऐसे क्षेत्र जिन्हें छद्मावरण की आवश्यक्ता हो सकती है, निम्नलिखित हैं –

क्र0 सं0	समस्याग्रस्त क्षेत्र
1.	जन्म चिन्ह
2.	कोलास्मा
3.	सफेद दाग
4.	पोर्ट वाईन धब्बा
5.	स्टॉबेरी का निशान
6.	उभरी नसें
7.	पेसोरिएसिस
8.	मुहाँसो का दाग
9.	वर्णक धब्बा
10.	जलने के चिन्ह
11.	घिस्सा
12.	गोदना

त्वचा को अगल–बगल के त्वचा की रंगत में रंग कर प्रभावित समस्याग्रस्त क्षेत्र का छद्मावरण किया जा सकता है। त्वचा को सही रंगत प्रदान कर सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने के लिए हमेशा सही उत्पादों का चयन करना चाहिए।

अपनी निम्नलिखित विशेषताओं की वजह से छद्मावरण लेप अन्य साधारण प्रसाधनों से भिन्न होते हैं –

वे **हाइपो एलर्जी** होते हैं

उसमें एसपीएफ की मात्रा होती है।

वे अपारदर्शी होते हैं तथा 75% तक कारगर होते हैं।

एक बार सही से **सु**सज्जित कर दिये जाने पर ये जल प्रतिरोधक भी होते हैं।

<u>कुछ छद्मावरण उत्पाद निम्नलिखित है</u> –

1. कवरमार्क – दिन भर 15 एसपीएफ प्रदान करता है।
2. डर्माब्लेण्ड – यह 24 घंटे तक काम करता है, एक नमीप्रदायक लेप की पतली **परत** चेहरे पर लगा लेने के पश्चात इसे लगाना आसान हो जाता है।
3. डर्माकलर – छिड़कने के पश्चात यह 24 घंटे तक जल प्रतिरोधक का कार्य करता है।
4. केरोमॉस्क – यह 08 घंटे चलता है।
5. वेल – यह 24 घंटे तक काम करता है, अधिक गर्मी में चेहरे पर चू सकता है। रूखी त्वचा पर लगाना आसान होता है।

<u>छद्मावरण लगााना</u>–

1. जहाँ छद्मावरण का प्रयोग करना हो उस स्थान को रूई में टोनर लगा कर साफ करते हैं ताकि उस स्थान पर तेल का अंश न रहे।
2. जहाँ छद्मावरण का प्रयोग करना हो उस जगह का ठीक से अध्ययन करें।
3. **पाउडर** को **पाउडर** पफ की मदद से लगाायें। पुनः अधिक **पाउडर** छिड़कने से पहले कुछ देर प्रतीक्षा करें।
4. स्थान को भींगी रूई से ढ़क कर 10 मिनट के लिए छोड़ देते हैं। एक मेकअप प्लेट में रंग को आपस में तब तक मिलाएँ जब तक अगल बगल के त्वचा की रंगत से मिल न जाये।
5. छद्मावरण लेप का एक पतला स्तर एक **पै संल** या स्पॉज की मदद से लगााते हैं।
6. लेप को ठीक से मिलाएँ ताकि किसी भी तरह का सीमांकन परिलक्षित न हो।
7. **पाउडर** से स्थिर करें।
8. अगर जरूरत हो तो छद्मावरण लेप का और स्तर लगायें।
9. **पाउडर** आभास को खत्म करने के लिए चेहरे पर हल्का पानी स्प्रे करें।
10. छद्मावरण लेप को स्थिर होने दें।

<u>सावधानियाँ</u>:

छद्मावरण वाले स्थान पर किसी भी तेल आधारित **उत्पाद** का प्रयोग न करें।

छद्मावरण वाले स्थान पर साबुन और **शार्बर** कर उपयोग न करें।

आमतौर पर छद्मावरण लेप जल प्रतिरोधक होता है फिर भी सावधानी स्वरूप तौलिये या टिशू पेपर से इसे सूखा बनाएँ रखें।

<u>अभ्यास प्रश्न **(**सैद्धान्तिक**)**:</u>

1. दिन के रूपसज्जा एवं संध्याकालीन रूपसज्जा में अंतर स्पष्ट करें।
2. रंगशाला के लिए रूपसज्जा करते समय किन बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए।
3. किन परिस्थितियों में छद्मावरण रूपसज्जा की जाती है। छद्मावरण रूपसज्जा के प्रसाधनीय उपयोग की चर्चा करें।
4. **फोटोग्राफी** के लिए रूपसज्जा करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिये।

<u>अभ्यास प्रश्न **(**व्यवहारिक**)**:</u>

1. दुलहन की रूपसज्जा करने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।
2. छद्मावरण रूपसज्जा की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।
3. स्टेनसिल तकनीक का प्रयोग कर शरीर पर गोदना बनाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।
4. प्रौढ़ त्वचा पर रूपसज्जा करने की प्रक्रिया का वर्णन करें।

हर्बल कॉस्मेटिक (जड़ी बूटी युक्त प्रसाधन सामग्री)

प्रयोगात्मक

भूमिका

हर्बल कॉस्मेटिक को ''प्राकृतिक कॉस्मेटिक'' के नाम से भी जाना जाता है। सभ्यता की शुरूआत से ही मानवजाति में अपनी सुन्दरता से दूसरे को प्रभावित करने का एक प्रबल झुकाव रहा है। उस समय कोई सुन्दरता के लिए कोई **फेस** क्रीम या कोई कॉस्मेटिक सर्जरी नहीं **थी**। उन्हें केवल प्रकृति के बारे में जानकारी थी जिनका संग्रह आयुर्वेद में किया गया है। आयुर्वेद के विज्ञान से आयुर्वेदिक कॉस्मेटिक बनाने के लिए कई जड़ी बूटियों और फूल–पत्तियों का इस्तेमाल किया जाता था जो सचमुच काम करता था। आयुर्वेदिक कॉस्मेटिक न सिर्फ त्वचा में निखार लाता था बल्कि शरीर पर बाहरी प्रभावों के विरूद्ध एक ढ़ाल का भी कार्य करता था।

हर्बल फेश पैक तैयार करना

मेरीगोल्ड **फेस** पैक

मेरीगोल्ड फूल जो गैंदा फूल के नाम से लोकप्रिय है, आपके अपने बागीचे मे आसानी से उपलब्ध है।

बेसन और हल्दी पैक

बेसन या पीसा चना दाल एवं हल्दी आपके अपने रसोई घर में तत्काल उपलब्ध होता है। आप बेसन और हल्दी पाउडर को मिलाकर दूध या पानी के साथ पेस्ट बना सकते हैं।

घर में बनाए जाने वाले फेश पैक

शहद और नीबू–रस पैक

यदि आपके घर में शहद और ताजे नीबू हों तो यह एंटीऑक्सीडेंट का एक बहुत अच्छा स्रोत होगा। इसमें मोस्चराइजिंग गुण भी होता है। थोड़ा सा शहद लें और इसमें नीबू का रस मिलाएं। अब आप त्वचा पर निखार लाने के लिए अपने चहरे पर लगाएं।

प्राकृतिक मार्जक (एक्सफोवाइलेटिंग स्क्रब)

एक चम्मच चावल का आटा लें और इसे चंदन लकड़ी के चूर्ण में मिला दें। इसमें थोड़ा दूध मिलाएं और मुंहासे को हटाने के लिए इसे अपने चेहरे पर लगाएं।

अन्य प्राकृतिक पैक हैं–

- पके हुए केले से बना **फेस** पैक
- तैलिये त्वचा के लिए टमाटर मास्क
- अंगूर से बना पैक

संघटक एवं उद्देश्य

चना आटा (बेसन पाउडर)– त्वचा के लिए अच्छा, बेहतर आधार

हल्दी– त्वचा संबंधी एलर्जी के उपचार, घावों, दाग–धब्बों को ठीक करने के लिए। त्वचा में चमक लाता है। काले धब्बों से राहत दिलाता है।

नीम चूर्ण– मुंहासों, फुंसी के लिए अच्छा होता है। त्वचा को साफ रखता है।

खदीरा–अकाशिया कटेचु – आयुर्वेद के अनुसार त्वचा संबंधी रोग के लिए उपयोगी सभी जड़ी बूटियों में खदीरा सबसे अच्छा होता है।

मंजिष्ठा – रूबिया कोर्डिफोलिया– त्वचा के स्तर पर पित्त में संतुलन स्थापित करने के लिए यह एक अन्य सबसे बेहतर आयुर्वेदिक जड़ी बूटी है। इसका इस्तेमाल त्वचा संबंधी रोगों के लिए कई आयुर्वेदिक औषधियों में होता है।

बादाम चूर्ण–यह पोषण के लिए विटामिन ई का सबसे अच्छा प्राकृतिक स्रोत है।

चंदन लकड़ी चूर्ण (या पेस्ट)– घर में बनाए फेश पैक मिश्रण में प्राकृतिक सुगंध लाता है। यह पित्त में संतुलन लाता है, मुंहासे या मुंहासे के दाग के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

फुलर्स अर्थ (मुलतानी मिट्टी)–यह तैलिये त्वचा में सहायक होता है और खुले छिद्र को बंद करता है।

कैलमाइन चूर्ण – मुहांसा विशेषकर जिन मुंहासों से **पस** निकलता हो, उसे ठीक करने में सहायता करता है।

गुलाब जल– शीतलक होता है, यह पेस्ट बनाने में प्रत्येक चीज को मिलाने के लिए बेहतरीन होता है। यह मिश्रण में प्राकृतिक खुशबू लाता है।

हर्बल हेयर पैक बनाना

भृंगराज हेयर पैक

भ्रिंगराज को ''जड़ी–बूटियों का राजा'' कहा गया है क्योंकि इसमें बालों के पुनः उग आने के गुण होते हैं। पत्तों को पीसें और इसमें से काले हरे रस को निकालें। बाल के स्थायी रूप से सफेद होने से छुटकारा पाना, **व** एलोपेसिया और गंजेपन के लिए इसका रस लाभकारी होता है।

भृंगराज

ब्राह्मी

ब्राह्मी हेयर पैक

ब्राह्मी बालों की जड़ों को मजबूत बनाने और बालों को गिरने से रोकने एक औषधि के रूप में जाना जाता है। आप अपने स्थानीय बाजार से ब्राह्मी का पत्ता प्राप्त कर सकते हैं। अपने सिर पर ताजे ब्राह्मी पत्ते के पेस्ट लगाएं और इसे कम से कम 15 मिनट तक रखें। अगर आप पाउडर युक्त ब्राह्मी पत्तों का इस्तेमाल कर रहे हैं तो इसे एक रात गुनगुने पानी में भिंगोएं और हर दूसरे दिन इसे कम से कम 20 मिनट तक इस्तेमाल करें।

आंवला

शिकाकाई

बालों की देखभाल में आंवला अथवा भारतीय करौंदा का प्रभाव शुरू से ही **अच्छा** साबित **हुआ** है।

शिकाकाई और आंवला हेयर पैक

शिकाकाई और आंवला को 1:2 अनुपात में लेकर गुनगुने पानी में भिंगोएं। इस मिश्रण को बालों और सिर की त्वचा पर अगले दिन धोने से पूर्व कम से कम 20 मिनट तक के लिए लगाएं ।

शिकाकाई बालों की जड़ों को साफ करता है और इन्हें गंदगी मुक्त बनाता है। यह रूसी को भी समाप्त करता है। साथ ही साथ आंवला बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है और बालों को समय से पहले सफेद हो जाने से रोकता है। आंवला आपके बालों को प्राकृतिक रूप से काला रंग भी प्रदान करता है। साफ सिर त्वचा एवं पुनर्जीवन प्राप्त जड़ों के साथ आपका बालों निश्चित ही मजबूत, लंबा एवं तेजी से बढ़ेगा।

मेथी और आंवला हेयर पैक

मेथी

मेथी के बीच बालों के विकास के लिए बड़ा अच्छा संघटक हैं।

बड़े हल्के से भुने मेथी के बीजों का पाउडर बनाएं और इसे एक जार में रख दें। एक कप मेथी पाउडर को एक कप आंवला पाउडर के साथ गुनगुने पानी में रात भर भिंगोएं। अगले दिन इसे एक हेयर पैक के रूप में इस्तेमाल करें और लगभग 20 मिनट तक लगाए रख कर उसके पश्चात धोएं।

हर्बल हेयर ऑयल

जड़ी बूटी **सम्मिश्रण** तेल बनाना

तकनीकी रूप से हेयर ऑयल एक जड़ी बूटी **सम्मिश्रण** तेल होता है। **सम्मिश्रण** तेल बनाने की कई विधियां हैं। हमने निम्नांकित प्रक्रिया चुनी है–

1. सूखे पाउडर युक्त जड़ी–बूटी को छांटें।

2. एक चम्मच सूखे जड़ी–बूटी के पाउडर पर एक चम्मच उबला पानी डालें। इसे लगभग दो घंटे तक ऐसे ही रहने दें ताकि सूखी जड़ी– बूटी जलयोजित हो जाए।

3. इस हर्बल पेस्ट में सामान्य तापमान पर 4 से 5 चम्मच तेल डालें और इसे अच्छी प्रकार से मिलाएं। जलयोजित जड़ी–बूटी कण बरतन के तल में जमने की कोशिश करेगा।

4. कम आंच पर इस मिश्रण को गर्म करना शुरू करें। प्रारंभ में, जड़ी– बूटी कुछ तेल (तिल के तेल, बादाम तल और अरंडी तेल) को सोखेगा। जैसे ही तेल गर्म होगा, जड़ी –बूटी द्वारा सोखा गया जल भाप में बदल जाएगा और जड़ी –बूटी अवशोषित तेल को छोड़ना शुरू कर देगा। इसे कम आंच पर लंबे समय तक किया जाना चाहिए। कम आंच और अधिक समय से निषेचित तेल की गुणवत्ता अच्छी होगी। अंततः पाउडर युक्त जड़ी– बूटी नमी और तेल छोड़ेगी और बहुत हल्की हो जाएगी, वस्तुतः यह जड़ी–बूटी को भुनकर जला देगी।

5. तेल को फिल्टर करें और जड़ी–बूटी से ठोस पदार्थ को अलग कर दें।

6. नमी को समाप्त करने के लिए लगभग 20 मिनट तक कम आंच पर इस तेल को दोबारा गर्म करें। इसे ठंडा होने दें।

पद्धति

1. सभी सूखी जड़ी–बूटियों को भारी पेंदी वाले एक बरतन में मिलाएं।

2. एक अलग बरतन में पानी लेकर गर्म करें। सूखी जड़ी–बूटियों पर 5 चम्मच उबला पानी डालें।

3. जड़ी–बूटी को लगभग 2 घंटे तक के लिए जलयोजित (पानी में भिंगोंना) होने दें।

4. उसी बरतन में जलयोजित जड़ी–बूटी पर सारा तेल डाल दें। इसे अच्छी तरह से चलाएं।

5. कम आंच रखें ताकि तेल को थोड़ा गर्म किया जाए।

6. 2 से 3 घंटे तक के लिए इसे कम ताप पर बिना ढ़के भीगा रहने दें।

7. आंच को बंद कर दें और इसे ठंडा होने दें।

8. सभी ठोस चीजों को हटाने के लिए इसे फिल्टर करें।

9. कम ताप पर लगभग 30 मिनट तक के लिए अधिक नमी को दूर करने हेतु तेल को दोबारा गर्म करें।

10. तेल को ठंडा होने दें और अपारदर्शी कांच या प्लास्टिक बोतल में इसे रखें।

सभी प्रकार के हर्बल तेल के लिए नुस्खे

एक चम्मच हर्बल पाउडर + एक चम्मच पानी + चार चम्मच तेल

लाभ

– शुष्क बाल, घुंघराले दो मुंहे बाल की मरम्मत करता है।

– जीवाणु रोधी और फफूंद रोधी तत्वों से सिर की त्वचा साफ होती है।

– बाल झड़ना, बाल पतला होना और समय पूर्व सफेद होना रोकता है।

– मोटे बाल के विकास में सहायता प्रदान करता है।

– बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है, इसका पोषण करता है और बाल को मजबूती देता है।

– ये संघटक बालों को भारत में प्रचलित काले बाल के अनुकूल रंग से कवर करता है।

– इसकी मालिश से नींद अच्छी आती है।

अनुप्रयोग

– हर्बल तेल का प्रयोग रात में सोने से पूर्व किया जाना चाहिए ताकि यह आपके सिर की त्वचा और बालों पर रात भर असर करे। सुबह में आप **शैम्पू** का प्रयोग कर बालों का धो सकते हैं।

– सामान्य बालों के लिए इस हेयर ऑयल को सप्ताह में एक बार लगा सकते हैं। शुष्क बाल के लिए इसे सप्ताह में दो बार लगाया जा सकता है और तैलीय बाल के लिए इसका प्रयोग दो सप्ताह में एकबार लगाया जा सकता है।

– सामान्यतया, मालिश करने से पूर्व इस तेल को गुनगुना गर्म किया जाता है। यह आवश्यक नहीं है। तथापि, तेल ठंडा नहीं होना चाहिए। इसे सामान्य तापमान पर होना चाहिए।

हर्बल क्रीम

कोल्ड क्रीम सबसे पुराने कॉस्मेटिकों मे से एक है।

हर्बल क्रीम बनाना साधारण कोल्ड क्रीम बनाने जैसा ही आसान है। सुहागा को गर्म पानी में घोलें। विभिन्न प्रकार के मोम को एक साथ मिलाएं और लेनोलिन, सूअर की चर्बी में से किसी एक को मिलाएं और यदि आवश्यक हो तो बादाम तेल, जैतून को इस तेल में मिलाएं अथवा हर्बल विशेषताएं पाने के लिए आसवित जल में करमकल्ला को मिलाएं।

फार्मूला एक		फार्मूला दो	
सफेद बीवैक्स	20 प्रतिशत	बीवैक्स	20 प्रतिशत
सफेद मिनिरल ऑयल	50 प्रतिशत	मिनिरल ऑयल	40 प्रतिशत
गुलाब जल	29.5 प्रतिशत	जल	39 प्रतिशत
बोरेक्स	0.5 प्रतिशत	बोरेक्स	1 प्रतिशत
कुल	100 प्रतिशत	कुल	100 प्रतिशत

तरीका

एक बरतन में बीवैक्स और मिनरल ऑयल को गर्म करें और एक अन्य बरतन में पानी और बोरेक्स मिलाएं। डबल बॉयलर में 70 डिग्री सें0 तापमान पर इसे गर्म करें। महीन पेस्ट बनाने के लिए इन्हें एक साथ मिलाएं।

हर्बल **शैम्पू**

बाल और त्वचा एक दूसरे के साथ निकटता से जुड़े हैं। बाहरी बाल को बढ़ाने के लिए कोई भी अनुप्रयोग बेकार होता है। तथापि, गंदी सिर त्वचा की उचित सफाई का अधिक महत्व है। शेम्पू मृत पपड़ी, रूसी, तेल और तल पर जमी मैल को साफ करता है।

आयुर्वेदिक शेम्पू बनाना

1. सभी सूखे संघटकों को एक साथ मिलाएं।

2. एक कप सूखे संघटकों में तीन कप पानी मिलाएं।

3. इसे एक रात पहले हीं भिंगो दें।

4. इसे लोहे के एक बर्तन में गर्म करें। तापमान को एकदम कम कर दें। इसे तीन से चार घंटे तक पकने दें।

5. ताप प्रवाह को बंद कर दें। इसे ठंडा होने दें। किसी ठोस वस्तु के होने पर इसे निकाल दें। अपेक्षा अनुसार इसका तनुकरण करें।

6. वापस गर्म करें। उष्मा प्रवाहित करें और इसे उबालें। उष्मा प्रवाह को कम कर दें। द्रवित संघटकों को मिलाएं। पांच मिनट तक पकने दें। उष्मा प्रवाह को बंद कर दें। इसे ठंडा होने दें। अपेक्षा अनुसार इसे शीशे या प्लास्टिक के बोतल में रखें।

आयुर्वेदिक **शैम्पू** का इस्तेमाल कैसे करें?

यह एक मृदु **शैम्पू** होता है। इसका रोजाना या सप्ताह में एक दिन इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें जड़ी– बूटियों की अच्छी खुशबू होती है।

1. साधारण पानी से बाल को भिंगोएं।

2. सिर की त्वचा पर शेम्पू लगाएं। अगूंलियों से शेम्पू को सिर पर मिलाएं। इससे गंदगी और मृत ऊतक, जो बाल की जड़ों के साथ चिपका रहता है, ढ़ीला होगा ।

3. पूरे बाल में शेम्पू लगाएं।

4. इस शेम्पू को लगभग 20 से 30 मिनट तक रहने दें। इससे गंदगी को घुलने और बाल के रंग की पुनर्प्राप्ति में सहायता मिलेगी।

5. अंगुलियों से पुनः अपने सिर की त्वचा पर मलिए। रगड़ कर धोएं। इसे तब तक करें जब तक बालों से साफ पानी नहीं आने लगे।

नेल पॉलिश रिमूवर

नेल पॉलिश को नेल पेड या नेल पॉलिश रिमूवर से हटाया जाता है, यह एक कार्बनिक विलायक होता है किंतु इसमें तेल, सुगंधित और रंग मिला हो सकता है।

नेल पॉलिश रिमूवर के सूत्र

प्रथम सूत्र		द्वितीय सूत्र	
ब्यूटाइल स्टीयरेट	60 प्रतिशत	अरंडी का तेल	10 प्रतिशत
ईथाइल एसिटेट	40 प्रतिशत	डाईब्यूटाइल फेथेलेट	40 प्रतिशत
कुल	100 प्रतिशत	ईथाइल एसिटेट	50 प्रतिशत
		कुल	100 प्रतिशत

लोमनाशक

रसायनिक लोमनाशक समय समय पर अवांछित बालों, जो त्वचा के बाहरी भाग के उपर उग आते है, को अस्थायी रूप से हटाने में लाभदायक होता है। स्वस्थ त्वचा वाली कोई भी महिला इस लोमनाशक का इस्तेमाल किसी जलन के बिना कर

सकती है। इसे त्वचा पर लंबे समय तक नहीं रहने दें। प्रयोगकर्ता को सलाह दी जाती है कि वे अपनी बांह के एक भाग पर एक प्रतिक्रिया परीक्षण करें जो बाल रहित हो, इसमें लोमनाशक को थोड़ा सा लगाएं और लगभग पांच मिनट तक इसे रहने दें।

लोमनाशक पेस्ट

ताजे सल्फरयुक्त लाइम .... 25 प्रतिशत

कोलाइडल क्ले .... 5 प्रतिशत

कार्न स्टार्च ....15 प्रतिशत

अवक्षेपित चॉक .... 35 प्रतिशत

ग्लिसरीन .... 19 प्रतिशत

परफ्यूम .... 01 प्रतिशत

घरेलु वैक्स तरीका

- एक कप चीनी में एक चम्मच पानी मिलाएं।
- इसमें 2 से 3 नीबुओं का रस मिलाएं।
- धीमी आंच पर इसे गर्म करें और हिलाएं।
- यह पता करने के लिए कि वैक्स तैयार हो गया है, तैयार वैक्स का एक या दो बूंद पानी के कटोरे में मिलाइए।
- यदि वह बूंद नीचे तल में बैठ जाता है तो इसका अर्थ है कि वैक्स तैयार हो गया है।
- यदि वह बूंद पानी में घुल जाता है तो इसे कुछ और समय तक पकाएं और इसे फिर से जांचे।
- इसे एंटीसेप्टिक बनाने के लिए थोड़ा हल्दी पाउडर मिलाएं।

ईकाई दो खंड दो बालों की देखभाल

संघटकः

1.0 ईकाई समीक्षा और विवरण

- समीक्षा
- ज्ञान और कौशल निष्कर्ष
- अवधि
- अधिगम निष्कर्ष
- आकलन योजना

1.1 बाल संबंधी विकार (बालों का झड़ना, केनिटिज और रूसी, बालों में जूएं)

1.2 एडवांस हेयर कटिंग

1.3 स्थायी वेविंग

1.4 बालों को **सीधा करना** मजबूती/ रि–बांडिंग

1.5 बालों की रंगाई

1.6 बालों में चमक लाना/ हल्का रंग लगाना/ रूक्षित करना

1.0 ईकाई समीक्षा और विवरण

इस ईकाई में छात्रों को बालों की देखभाल, बालों की सज्जा और स्टाइल व रंग के विभिन्न तकनीकों के अभ्यास को कराते हुए त्वचा की देखभाल के लाभों के बारे में बताया जाएगा।

अवधिः कुल समयः 60 घंटे (थ्योरी 30 घंटे एवं 30 घंटे प्रयोग)

ज्ञान और कौशलः इस ईकाई के एक भाग के रूप में निम्नलिखित ज्ञान का आकलन अवश्य किया जाना चाहिएः

बालों संबंधी विकार

1. बाल झड़ने के विभिन्न प्रकार
2. बाल झड़ने के कारण
3. उपचार (शारीरिक और मौखिक)
4. एडवांस हेयर कटिंग
5. चेहरे के आकार, शरीर की बनावट, आयु, अवसर आदि का अध्ययन

6. स्थायी वेविंग/ रि बांडिंग, बांड के प्रकार, रॉड के प्रकार, परमिंग एजेंट और न्यूट्रलाइजर

7. बालों की रंगाई एवं चमक लाना– रंग के नियम, बालों के रंगों के प्रकार, लट परीक्षण, पट्टी परीक्षण, रिटचिंग।

संसाधन सामग्री

1. लौराइन नोर्डमेन द्वारा बताया गया सौंदर्य उपचारः फाउंडेशन स्तर दो, 2ड.

2. लौराइन नोर्डमेन द्वारा बताया गया पेशेवर सौंदर्य उपचार स्तर तीन, 2ड.

3. मिलाडेज स्टेंडर्ड कॉस्मेटोलॉजी, आईएसबीएनः 978–1–5625–3880–2

4. मेरी हेली द्वारा लिखित रिएजेंट/प्रेंटिश– हॉल टेक्स्ट बुक ऑफ कॉस्मेटोलॉजी

5. प्रेंटिश हॉल– ए बुक ऑन कॉस्मेटोलॉजी

अधिगम निष्कर्षः बालों की देखभाल

1.1 बालों के विकारों के प्रकार	निष्कर्ष
	आप निम्नलिखित को समझ पाएंगे ● विभिन्न प्रकार के बालों के विकार। (बालों का झड़ना, कैनिटीज, रूसी और जूएं भरे बाल) ● विभिन्न प्रकार के बालों के विकारों की पहचान करना ● कारण और उपचार
1.2 एडवांस हेयर कटिंग	आप निम्नलिखित को समझ पाएंगे ● चेहरे के आकार, शरीर की बनावट, आयु और अवसर की पहचान करना। ● सीधी रेखा में रेजर से कटिंग की पहचान करना। ● बालों को काटते समय सावधानियों की पहचान करना।
1.3 स्थायी वेविंग	आप निम्नलिखित को समझ पाएंगे ● पीएच स्केल की पहचान करना। ● बांडों के प्रकार की पहचान करना। ● सिर की त्वचा की पहचान करना। ● रॉडों के प्रकार, परमिंग एजेंट और न्यूट्रलाइजर की पहचान करना ● टेस्ट कर्ल, परमिंग प्रक्रिया, परमिंग के पश्चात बालों की देखभाल को जानना। ● ग्राहक से जुड़े रिकार्ड और पूर्व सावधानियों की पहचान करना।
1.4 सीधा करना/ रिबांडिंग करना	आप निम्नलिखित को समझ पाएंगे ● विभिन्न प्रकार के रिलेक्सरों की पहचान करना। ● ट्रॉली सेटिंग (सामग्री आदि)। ● वर्जिन हेयर ट्रीटमेंट की पहचान करना। ● ग्राहक के रिकार्ड और सुरक्षा संबंधी पूर्व सावधानियों की पहचान करना।
1.5 बालों की रंगाई	आप निम्नलिखित को समझ पाएंगे ● रंग नियम की पहचान करना। ● विभिन्न प्रकार की बालों की रंगाई की पहचान करना। ● लट परीक्षण और पट्टी परीक्षण की पहचान करना।

	• बालों की रंगाई की प्रक्रिया की पहचान करना। • रि टचिंग और पूर्व सावधानियों की पहचान करना। • ग्राहक संबंधी रिकार्डों की पहचान करना। • बाद में की जाने वाली देखभाल की पहचान करना।
1.6 बालों में चमक लाना/ हल्का रंग लगाना/ रूक्षित करना	आप निम्नलिखित को समझ पाएंगे • ब्लीचिंग के विभिन्न प्रकार की पहचान करना। • ट्रॉली सेटिंग (सामग्री आदि) की पहचान करना। • समयावधि का ध्यान रखना। • पट्टी परीक्षण, लट परीक्षण की पहचान करना। • कैप तकनीक, फ्वाईल तकनीक, स्टीचिंग और **वे वगं** की पहचान करना। • अत्यधिक ब्लीच/ कम ब्लीच किए गए बालों की पहचान करना। • ग्राहक संबंधी रिकार्ड और बाद में की जाने वाली देखभाल सहित पूर्व सावधानियों की पहचान करना।

आकलन योजनाः (शिक्षकों के लिए)

ईकाई दो	विषय	आकलन पद्धति	समय योजना	टिप्पणी
1.1	बालों के विकार के प्रकार	अभ्यासः प्रश्न और उत्तर, नकली मानव बालों का प्रयोग करें और प्रायोगिक प्रदर्शन करें।		
1.2	एडवांस हेयर कटिंग	अभ्यासः प्रश्न और उत्तर, नकली मानव बाल का प्रयोग करें और प्रायोगिक प्रदर्शन करें।		
1.3	स्थायी वेविंग	अभ्यासः प्रश्न और उत्तर, नकली मानव बाल का प्रयोग करें और प्रायोगिक प्रदर्शन करें।		
1.4	सीधा करना/ रिबांडिंग	अभ्यासः प्रश्न और उत्तर, नकली मानव बाल का प्रयोग करें और प्रायोगिक प्रदर्शन करें।		
1.5	बालों की रंगाई **(हेयर कलरिंग)**	अभ्यासः प्रश्न और उत्तर, नकली मानव बालों का प्रयोग करें और प्रायोगिक प्रदर्शन करें।		
1.6	बालों में चमक /रंगाई/ रूक्षित करना	अभ्यासः प्रश्न और उत्तर, नकली मानव बाल का प्रयोग करें और प्रायोगिक प्रदर्शन करें।		

बालों के विकार

बालों का झड़ना

प्रस्तावना

जैसे –जैसे हम परिपक्व होते हैं अथवा युवा यौन रूप से परिपक्व होते जाते हैं तो बालों में बदलाव आता है जिससे बालों में प्रतिरोधक्षमता समाप्त होती जाती है और यह मुलायम हो जाता है जिसे सवांरना आसान हो जाता है किंतु रसायनों के इस्तेमाल और पोषक आहार नहीं लेने के कारण बालों का झड़ना शुरू हो जाता है। सामान्य परिस्थितियों में रोजाना हमारे बाल कुछ न कुछ झड़ते हैं। प्राकृतिक रूप से रोजाना झड़ने वाले बाल इनके विकास चक्र के तीन पक्षों के परिणामस्वरूप है। विकास चक्र से निरंतर व्यक्ति के बालों की लटों में वृद्धि, इसका झड़ना और प्रतिस्थापन होता है। जो बाल टेलोजेन चरणों में झड़ते हैं, उन्हीं रोम छिद्र में अगले एनाजेन चरण में उनका प्रतिस्थापन नए बालों से हो जाता है। बालों का प्राकृतिक रूप से इस प्रकार गिरने का कारण बालों का रोजाना सामान्य रूप से झड़ना है। यद्यपि, बहुत पहले ही बालों के गिरने की अनुमानित दर 100 से 150 बाल प्रतिदिन बताया गया है, किंतु हाल में इसका अनुमान लगाया गया है कि प्रतिदिन औसत रूप से बालों के गिरने की दर 35 से 40 बाल है।

महिलाओं में गंजापन और बालों के गिरने के पैटर्न

बालों के झड़ने के कारण

(क) भावनात्मकः चिकित्सीय अध्ययन के अनुसार बाल झड़ने का भावनात्मक प्रभाव स्वीकार्य नहीं है। किंतु लोगों द्वारा कतिपय कारणों की पहचान की गई है कि निम्नलिखित कारणों से गंजापन देखा गया है।

बालों के झड़ने के कारण

- शारीरिक रूप से कम आकर्षक (स्त्री –पुरूष दोनों)
- कम दृढ़ता
- कम सफल
- अधिक आयु (लगभग पांच वर्ष अधिक दिखना)
- अप्रभावशाली व्यक्तित्व
- नकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक प्रभाव

(ख) शारीरिकः जिन महिलाओं के बाल असामान्य तरीके से झड़ते है, वे अन्यों से इसे छिपाने का प्रयास करती है और उन्हें चिंता होती है कि उनके बालों का झड़ना गंभीर बीमारियों का लक्षण है। अध्ययन बताता है कि माहिलाएं अपनी सुन्दरता के लिए अधिक प्रयत्न करती हैं क्योंकि महिलाओं में बालों का झड़ना पुरूषों की तरह असामान्य नहीं होता है। यदि महिलाओं में भी पुरूषों की तरह बालों का झड़ना शुरू हो जाए तो ये उनके लिए बड़ा अभिघातक हो सकता है। बड़ी संख्या में वे महिलाएं जिनके बाल असामान्य रूप से झड़ते हैं, वे चिंतित, असहाय और कम आकर्षक महसूस करती हैं। कई महिलाएं तो यह मानती हैं कि यह समस्या केवल उनके साथ ही है।

बालों के झड़ने के शारीरिक कारण

<u>बालों के झड़ने के कुछ अन्य सामान्य कारण</u>

1. आनुवांशिक
2. कुपोषण (लौह तत्व, प्रोटीन और विटामिन की कमी)
3. रसायनों का लगातार इस्तेमाल (परमिंग, कलरिंग, टिंटिंग हेयर, ग्रूमिंग उत्पाद आदि)
4. भावनात्मक दबाव (दाम्पत्य जीवन में समरसता और परिवार में उचित समायोजन नहीं होने के कारण कुंठा। प्यार के टूट जाने के कारण अवसाद, कार्य स्थल पर तनाव आदि)
5. प्राकृतिक आपदाएं
6. अत्यधिक डायटिंग
7. रक्त अल्पता
8. प्रसव पश्चात कमजोरी/एमटीपी (चिकित्सीय रूप से प्रिग्नेंसी को समाप्त करना)

असामान्य रूप से बालों के झड़ने के प्रकार

बालों और सिर की त्वचा के सामान्य विकारों का उपचार सैलून में किया जा सकता है। एक बाल विशेषज्ञ के रूप में आपको विकारों की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए तथा बालों के झड़ने जैसे सामान्य विकार को एलोपेसिया कहा जाता है। असामान्य रूप से बालों के झड़ने के सबसे सामान्य प्रकार निम्न हैं:–

(1) एलोपेसिया एंड्रोजेनिक
(2) एलोपेसिया एरियेटा
(3) एलोपेसिया पोस्टपार्टम

(1) एलोपेसिया एंड्रोजेनिकः इस एलोपेसिया का मुख्य कारण आनुवांशिक, आयु और हार्मोन में बदलाव है जो बाल के अंतिम सिरे को छोटा बनाता है और वेलस हेयर के रूप में परिवर्तित कर देता है। यह किशोरावस्था में शुरू होता है और इसे **चालीस** वर्ष की अवस्था तक देखा जा सकता है। महिलाओं में इसे समूचे सिर के उपर बालों के पतले होने के रूप में देखा जाता है।

एलोपेसिया एंड्रोजेनिक

(2) एलोपेसिया एरियेटाः इस स्थिति में गोल पट्‌टी के रूप में बाल झड़ता है। सिर पर कुछ गोल पट्‌टी हो सकती हैं या पूरे सिर पर यह हो सकता है। इस प्रकार का त्वचा रोग अपूर्वानुमेय होता है क्योंकि इसमें कोई दर्द, खुजली या जलन नहीं होती है। सामान्यतया कुछ महीनों की अवधि में यह पुनः उग आता है, किंतु वैसी स्थिति पुनः आ सकती है। कभी कभी यह बढ़कर पूरे सिर के बाल को गिरा सकता है (एलोपेसिया टोटलिस), अथवा शरीर के संपूर्ण बालों को गिरा देता है (एलोपेसिया यूनिवर्सलाइज)। एलोपेसिया एरियेटा सभी आयु वर्ग और जातियों के पुरूषों और महिलाओं में होता है और प्रायः यह बचपन से ही शुरू हो जाता है। सामान्यतया सिर की त्वचा में जलन का कोई निशान नहीं दिखाई देता है। एलोपेसिया एरियेटा उन लोगों को होता है जिनमें त्वचा संबंधी किसी विकार या रोग के स्पष्ट लक्षण नहीं होते है।

एलोपेसिया एरियेटा

(3) एलोपेसिया पोस्टपार्टमः इसे एलोपेसिया एडनाटा के नाम से भी जाना जाता है। ऐसी स्थिति में कुछ गर्भवती महिलाओं में अस्थायी रूप से बालों का झड़ना देखा जा सकता है। यद्यपि नई माता के लिए यह बड़ा अभिघातक होता है लेकिन बच्चा होने के एक वर्ष के भीतर ही सामान्य रूप से बाल आने शुरू हो जाते है।

एलोपेसिया पोस्टपार्टम

एलोपेसिया के विभिन्न प्रकार होते हैं जिन्हें सामान्यतया बुढ़ापे में बाल गिरने के रूप में देखा जा सकता है जिसे एलोपेसिया सेनाइलिस के रूप में जाना जाता है। कम आयु में ही बालों के गिरने को एलोपेसिया प्रिमेचुरा कहा जाता है। बाल रोम छिद्र में जलन के कारण बालों के झड़ने को एलोपेसिया फॉलिक्यूलेरिस के रूप जाना जाता है। खिंचाव के कारण अत्यधिक दबाव के कारण बालों के झड़ने को संकर्षण गंजापन कहा जाता है। अत्यधिक मजबूती से चोटी, विशेषकर बाल रेखा के चारों ओर मजबूती से बाल को बांधने से कम होते बाल जैसा गंजापन होगा। बालों को लगातार खींचने से हेयर फाइबर समय पूर्व ही पेपिला से खींच सकता है और इसके परिणामस्वरूप स्थायी रूप से बाल गिर सकते है।

बालों के झड़ने का उपचारः

हेयर पेपिला को पुनर्जीवित करना(खाद्य और तेल अनुप्रयोग) । ऐसे दो उत्पाद हैं जो बाल वृद्धि के उद्दीपन के लिए सिद्ध पाए गए हैं और इन्हें इस उद्देश्य के लिए एडीए द्वारा अनुमोदित किया गया है।

सीरिंज के रूप में उत्पाद जिसे सिर की त्वचा पर लगाया जाता है

(1) मिनोक्सीडिल
(2) फिनास्टेराइड

मिनोक्सीडिल को सिर की त्वचा पर दिन में दो बार लगाया जाता है और यह सिद्ध हुआ है कि यह बालों की विकास का उद्दीपन करता है। यह दो भिन्न स्ट्रेन्थ में उपलब्ध हैः 2 प्रतिशत सामान्य और 5 प्रतिशत अधिक क्षमता वाला। इसका कोई बाह्य प्रभाव नहीं होता है।

फिनास्टेराइड खाने वाली दवा है जो केवल पुरूषों के लिए होती है। किंतु इसके संभावित बाह्य प्रभाव होते हैं जिसमें वजन का बढ़ना भी शामिल है। यह दवा महिलाओं विशेषकर गर्भवती महिलाओं के लिए नहीं है।

बालों को झड़ने की प्राकृतिक रूप से रोकथाम कैसे करें

स्वस्थ्य बालों के लिए संतुलित आहार

बालों के झड़ने को छिपाने के लिए कुछ अन्य उपचार हैं यथा बाल प्रतिरोपण अथवा हेयर प्लग, ये स्थायी बाल प्रत्यारोपण तकनीक के सबसे सामान्य उपचार हैं। इस प्रक्रिया में उस भाग से रोम छिद्र, पेपिला और बल्ब सहित बालों के छोटे हिस्से को हटाना शामिल है जहां बाल अधिक घने हैं (सामान्यतया पिछले भाग से) और इन्हें गंजेपन वाले भाग में प्रतिरोपित करना। ये भाग अथवा बल्ब सामान्यतया नए स्थान पर उगते हैं।

बाल प्रतिरोपण

बाल विस्तार

केवल लाइसेंस धारी सर्जन हीं इस प्रक्रिया को आजमा सकते हैं और अपेक्षित परिणाम पाने के लिए कई और चीजें महत्वपूर्ण हैं। जहां तक लागत का प्रश्न है, यह बहुत ही खर्चीला होता है। हेयर स्टाइलिस्ट गैर चिकित्सीय विकल्प पेश करते हैं और कुछ सैलून इस प्रकार के बाल प्रतिरोपण उपचार यथा विग, नकली बाल, हेयर **वे वगं** और बाल विस्तार के लिए विशेषज्ञ होते हैं । सैलून स्थायी रूप से बाल के झड़ने से निजात पाने के लिए उच्च तीव्रता वाले विद्युतीय उपचार भी प्रदान करते हैं। विद्युतीय उपचार से सिर की त्वचा का उद्दीपन होता है और बालों के झड़ने से निजात पाने में लाभ प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त इंफ्रा रेड लैम्प उपचार, जिसमें सिर की त्वचा पर गर्मी पैदा की जाती है, से रक्त प्रवाह के उद्दीपन में सहायता मिलती है । यह तेल और पसीने की ग्रंथियों का भी उद्दीपन करती है जिसके परिणामस्वरूप तेल और पसीने के निकलने में वृद्धि होती है जो शुष्क सिर त्वचा के लिए अच्छा होता है।

समीक्षा प्रश्न

1. .... बाल झड़ने के असामान्य रूप का तकनीकी शब्द है।
2. .... बुढ़ापे मे होने वाले गंजेपन का एक रूप है।
3. .... गोल पट्टी में बालों का गिरना है।
4. .... बाल रोम छिद्र में संक्रमण के कारण होता है।
5. .... संपूर्ण शरीर और सिर की त्वचा वाले भाग से पूरे बालों का गिरना।

केनाइटिज

केनाइटिज सफेद बालों का एक तकनीकी शब्द है जिसका प्रयोग बालों के रंग बदलने के वर्णन के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसे तकनीकी रूप से बालों के प्राकृतिक मेलानाइन पिग्मेंट के रूप में जाना जाता है। कुछ लोगों के बाल बचपन या वयस्क होने के दौरान ही सफेद होना शुरू हो जाते है। इसे समयपूर्व बालों का सफेद होना कहा जाता है। दो प्रकार के केनाइटिज होते हैं।

बालों का समय पूर्व सफेद होना

1. जन्मजात केनाइटिज
2. अभिगृहीत केनाइटिज

जन्मजात केनाइटिज को रंजकहीनता भी कहा जाता है, जो बच्चा त्वचा,बाल और आंखों में पिग्मेंट के बिना जन्म लेता है खास कर सामान्य बाल वाला, उसके सिर पर स्थिति के आधार पर तेजी से अथवा धीरे –धीरे जन्मजात केनाइटिज विकसित हो सकता है।

अभिगृहीत केनाइटिज एजिस के साथ विकसित होता है जिसे जराग्रस्त कहा जाता है। समान्यतया जराग्रस्तता 50 से 60 वर्ष की आयु में शुरू होता है किंतु कभी कभी बालों का सफेद होना 30 वर्ष की आयु में शुरू हो जाता है। बालों के सफेद होने का सही कारण ज्ञात नहीं है। यद्यपि समय पूर्व केनाइटिज के लिए अनुवांशिकता भी उत्तरदायी होता है। यह चिंता अथवा लंबी बीमारी के कारण हो सकता है।

अभिगृहीत केनाइटिज

रिंगयुक्त बाल केनाइटिज का प्रकार है जिसका चित्रण संपूर्ण लंबे बालों के सफेद और पिग्मेंट युक्त बालों के वैकल्पिक बैंड द्वारा किया जाता है।

कारणः

(क) आनुवांशिक समस्या
(ख) लंबी बीमारी के बाद
(ग) रसायनों का अत्यधिक इस्तेमाल
(घ) जिन उत्पादों के प्रयोग की अवधि समाप्त हो गयी हो, उनका इस्तेमाल करना
(ड.) पोषण का अभाव
(च) कठोर जल का लगातार प्रयोग

सफेद बालों का उपचार

आयुर्वेदिक उपचार

सफेद बालों को ढ़कना

- ❖ बालों का रंगना अथवा हेयर डाई लगाना अथवा क्रैआन लगाना
- ❖ सफेद बालों को छिपाने के लिए विग अथवा बालों के टुकड़े लगाना

समीक्षा प्रश्न

1. सफेद बालों के लिए तकनीकी शब्द क्या हैं?
2. बालों में रंग लाने वाले पिग्मेंट का क्या नाम है?
3. मुख्य दो प्रकार के केनाइटिज क्या है?
4. बालों में पिग्मेंट के नहीं होने के लिए तकनीकी शब्द क्या हैं?
5. आयु बढ़ने के साथ सफेद होते बालों के लिए क्या चिकित्सीय शब्द हैं?

रूसी

रूसी सबसे सामान्य सिर की त्वचा के विकारों में से है। रूसी संक्रामक नहीं होती है। त्वचा में सदा नवीकरण होता है। त्वचा की जो परत हमारे शरीर को ढ़के रहती है उसका क्षय होता रहता है और अंदर से नयी कोशिका इसे प्रतिस्थापित करती है। एक सामान्य व्यक्ति प्रति वर्ष लगभग नौ पाउंड मृत त्वचा क्षय करता है। सामान्य और स्वस्थ्य सिर की त्वचा की कोशिका सामान्य रूप से छोटे और शुष्क पपड़ी के रूप में गिरती रहती है जिस पर हमारा ध्यान नहीं जाता है। यह नहीं मानना चाहिए कि रूसी शुष्क त्वचा है क्योंकि सिर की त्वचा तैलीय सिर की त्वचा से भिन्न हाती है जिसमें रूसी होने की संभावना अधिक होती है। शुष्क सिर की त्वचा पपड़ी रूसी युक्त बड़ी पपड़ी की अपेक्षा अधिक छोटी होती है और इस पर

ध्यान नहीं जाता है। शुष्क सिर की त्वचा त्वचाशोथ **सनबर्न** अथवा अत्यधिक उम्र के कारण हो सकता है और यह शीत ऋतु या शुष्क जलवायु में और भी प्रबल हो जाता है।

रूसी के कारण:

- रूसी का एक सीधा कारण इपीथेलियल पपड़ियों का अत्यधिक निकलना है। सतह से इसके बढ़ने और गिरने के बदले सूखी पपड़ियां सिर की खाल पर जमा हो जाती हैं।
- रूसी का अप्रत्यक्ष या संबद्ध कारण सिर की त्वचा की निष्क्रिय स्थिति है जो खराब रक्त संचार, संक्रमण, घाव, तंत्रिका के उद्दीपन में कमी, असंतुलित भोजन और सफाई का न होना है। इसके साथ–साथ तेज शेम्पू और शेम्पू के बाद बालों का अपर्याप्त रूप से उगना है।

रूसी

पिटिरियासिस रूसी का चिकित्सीय शब्द है जिसमें त्वचा कोशिकाओं का अत्यधिक उत्पन्न होना और जमा होना शामिल है। एक एक कर त्वचा कोशिकाओं के सामान्य रूप से गिरने के बदले बड़ी मात्रा में सिर की त्वचा और बालों या कंधों पर गिरता है। यह फफूंद के कारण होता है जिसे मूलतः पिटिरोस्पोरम और तकनीकी रूप से मेलेसिजा के नाम से जाना जाता है जिससे खुश्की और तनाव, आयु, हार्मोन जैसे कारक होते हैं और खराब साफ सफाई से फफूंद में बढ़ोतरी होती है और रूसी के लक्षण और भी बदतर हो जाते हैं।

पिटिरियासिस रूसी के दो मुख्य प्रकार हैं

(क) पिटिरियासिसकैपिटिज सिम्प्लैक्स (सुखी रूसी)

(ख) पिटिरियासिसस्टेटिटोआइड्स (तैलीय या विवर्ण रूसी)

पिटिरियासिसकैपिटिज सिम्प्लैक्सस्वाभाविक रूसी का तकनीकी शब्द है जिसकी विशेषता सिर की खाल में जलन, बड़ी बड़ी पपड़ी, खुश्की वाला सिर होती है। बड़ी संख्या में ये पपड़ियां सिर की त्वचा से चिपकी रहती हैं और बालों में उलझी रहती हैं और कंधों पर गिरी रहती हैं। रूसी रोधी शैम्पूओं, कंडिशनरों और टॉपिकल लोशन के नियमित इस्तेमाल से इसका बेहतर तरीके से हो सकता है।

पिटिरियासिसस्टेटिटोआइड्सगंभीर किस्म का रूसी है जिसकी विशेषता है कि यह तैलीय अथवा मोमयुक्त पपड़ियां सिर की खाल में चिपकी रहती हैं, इसमें सिम मिला होता है। जब इसमें लालपन और जलन होती है तो इसे चिकित्सीय शब्द में सेबोरिक डर्मेटिस कहा जाता है।

हर्बल और रूसी रोधी रसायनिक उपचार

उपचार : सल्फर और कोल तार मिलाकर रूसी के उपचार से त्वचा में रूखापन आ जाता है और बालों को संभालना दुष्कर होता है। आधुनिक रूसी रोधी शैंपू में फफूंदरोधी एजेंटस्पाइरीथियोन जिंक, सेलेनियम सल्फाइड अथवा किटोकोनोजोल रहता है जो मेलेसिजा की उत्पत्ति को दबा कर रूसी को नियंत्रित करता है। रूसी रोधी शैंपू जिसमें पेरिथियोन जिंक मिला रहता है वे सभी प्रकार के बालों के लिए विभिन्न फार्मूले में उपलबध है और इसे प्रतिदिन धीरे धीरे लगाया जाता है, इसे रंगे गए बालों पर भी लगाया जाता है। बेहतर व्यक्तिगत साफ सफाई और उचित स्वच्छता तकनीक महत्वपूर्ण है। विद्युतीय उपचार से इस स्थिति को एंटीसेप्टीक स्केल्प लोशन अथवा ओयांटमेंट के साथ ठीक हो सकता है।

समीक्षा प्रश्नः

1. .... रूसी का चिकित्सीय शब्द है।
2. .... शुष्क रूसी है।
3. .... तैलीय या मोमयुक्त रूसी है।
4. .... अनुप्रयोग से रूसी नियंत्रित होता है।

पैडीक्यूलो सस कैपिटिज

पैडीक्यूलो सस कैपिटिज अथवा सिर के जूएँ, एक रोग है जो सूक्ष्म यूका से होता है जो अंडे देता है और यह सिर की त्वचा के निकट बाल में रहता है। आप इसे सीधे नहीं देख सकते हैं क्योंकि ये अंडे देने के बाद अन्य व्यक्ति के बालों में चला जाता है। ये जूएं रूसी की सूक्ष्म पपड़ियों के समान दिखता है किंतु ये कस कर चिपके रहते हैं जिन्हें आसानी से नहीं हटाया जा सकता है।

बालों में सूक्ष्म जूएं और अंडे

सिर के जूएं सामान्यतय संक्रमित व्यक्ति के सिर से दूसरे व्यक्ति के सिर में फैलता है; इसका प्रसार एक बिस्तर पर सोने अथवा सिर पर रखने वाले कपड़े के इस्तेमाल से होता है। शरीर के जूएं प्रत्यक्ष शारीरिक संपर्क , कपड़े के इस्तेमाल अथवा जूएं से संक्रमित व्यक्ति की निजी वस्तुओं के इस्तेमाल से फैलता है। जघन जूएं अक्सर संक्रमित व्यक्ति के साथ अंतरग

संबंध से फैलता है। सिर के जूएं सिर के बालों, शरीर के जूएं कपड़े में और जघन जूएं मुख्यतः जघन प्रदेश में स्थित बालों में होते हैं।

प्रत्येक अंडे से एक निम्फ उत्पन्न हो सकता है जो वयस्क जूएं के रूप में बढ़ता और विकसित होता है। पूर्ण रूप से विकसित जूएं तिल के दाने के समान होती है । जूएं अपने सूई जैसे मुंह के हिस्से को त्वचा में डालकर प्रतिदिन 1 से 8 बार खून पीकर जीवित रहती है। जूएं त्वचा में छेद नहीं कर सकती है । निकट संपर्क के सहारे एक से दूसरे व्यक्ति में प्रसारित होने वाला सबसे सामान्य परजीवी हेड लाउज है।

सिर में जूएं के सामान्य कारण

1. खराब साफ सफाई
2. बालों की उचित पूर्वक साफ सफाई विशेषकर मानसून के मौसम में साफ सफाई का न होना।
3. बिना धोए एक ही तकिया कवर को लंबे समय तक इस्तेमाल करना।
4. एक ही तौलिये का कई लोगों द्वारा इस्तेमाल करना अथवा गंदे तौलिये का इस्तेमाल करना।
5. इस प्रकार के रोग का वास्तविक कारण निकट मित्र होते हैं।

उपचारः

यह स्थिति एकदम संक्रामक होती है और सैलून में जाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। ऐसे ग्राहक को डॉक्टर के पास भेजना चाहिए । बालों और शरीर में जूएं का सामान्यतया दवा युक्त शैम्पूओं अथवा क्रीम से धोकर उपचार किया जाता है। **जूओं** को निकालने के लिए छोटी दांतों वाले कंघे का इस्तेमाल किया जा सकता है और इससे बालों से **जूओं** को निकाला जा सकता है। उच्च तापमान पर कपड़ों को खौला कर साफ करने से शरीर की **जूऐ** मर जाती हैं। बालों और शरीर (कपड़ों) के **जूओं** के उपचार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए न कि घर के वातावरण पर। पेडिक्यूलोसिस औषधियां यथा लाइसिल अथवा मेडिकेयर का इस्तेमाल किया जाना चाहिए, **जूओं** से होने वाले संक्रमण से होने वाले सेप्टिक के लिए हमारे बायोटिक मलहम का इस्तेमाल करें। अलग तौलिए, कंघी और बिस्तरे की चादर का इस्तेमाल करें।

समीक्षा प्रश्न

1. सिर में होने वाले **जूओं** के किन्हीं दो कारणों का उल्लेख करें।
2. पशु परजीवी के तकनीकी शब्द क्या हैं?
3. निट का अर्थ क्या है?
4. **पैडीक्यूलो सस** औषधि का नाम लिखें।

अभ्यास प्रश्न
सैद्धांतिक
1. किसी बाल विशेषज्ञ के लिए सामान्य त्वचा, सिर त्वचा और बाल संबंधी रोग को समझने के क्या कारण हैं?
2. बाल विशेषज्ञ को किसी संक्रामक अथवा संक्रमण से फैलने वाली बीमारियों से ग्रसित ग्राहक का इलाज करने से मना क्यों करना चाहिए?
3. त्वचा, सिर त्वचा और बाल के संक्रामक रोगों के अध्ययन के क्या उद्देश्य हैं?

4. बालों के गिरने के क्या कारण हैं? बाल गिरने के विभिन्न प्रकारों और इनके इलाजों का उल्लेख करें।
5. कैनाइटिज का क्या अर्थ होता है? दो मुख्य कैनाइटिज और इनके उपचार का संक्षिप्त विवरण दें।
6. रूसी की व्याख्या करें, इनके प्रकार और उपचार के बारे में बताएं।
7. **पैडीक्यूलो सस** कैपिटिज के कारण क्या हैं? इनके कारण और उपचार के बारे में बताएं।

व्यवहारिक

1. किसी डमी या किसी छात्र पर बालों के झड़ने के प्रकारों का प्रदर्शन करें।
2. सामान्य प्रकार के कैनाइटिज का प्रदर्शन करें और विभिन्न रसायनिक उत्पादों द्वारा इसके उपचार को दर्शाएं।
3. किसी डमी या तस्वीर में विभिन्न प्रकार की रूसी का प्रदर्शन करें।
4. **पैडीक्यूलो सस** कैपेटाइट के विभिन्न प्रकार एवं इसके उपचार का चार्ट और तस्वीर की सहायता से प्रदर्शन करें।

इकाई–III

एडवांस हेयर कटिंग

एडवांस हेयर कटिंग में सम्मिलित हैं, चेहरे के आकार, चेहरे की हड्डीयाँ, शरीर की बनावट, रूपरेखा, उम्र और अवसर का अध्ययन। ग्राहक के लिए केश विन्यास चुनने से पहले उपरोक्त सभी कारकों का ध्यान रखना जरूरी है। हर केश विन्यास या कटिंग का निर्धारण ग्राहक की व्यक्तिगत विशिष्टता के आधार पर होनी चाहिए। पेशेवर केश प्रसाधक बनने के लिए एक व्यक्ति को हेयर कटिंग की मूल बातों की जानकारी के साथ–साथ इस विधा की प्रगितिशील स्थापनाओं का भी बेहतर ज्ञान होना चाहिए। एक केश प्रसाधक के पास सिर और उसके अलग–अलग हिस्सों का विश्लेषण करने की क्षमता होनी चाहिए। हेयर कटिंग हमेशा सिर के आकार के अनुरूप होना चाहिए। एक केश प्रसाधक (Hair Stylist) को केश–कर्तन के दौरान बालों की सही लम्बाई का ज्ञान कर पूरी प्रक्रिया के दौरान उसी के आधार पर बालों की कटाई करनी चाहिए। मनचाहे केश विन्यास के लिए सही ऊँचाई और आकार देने वाले औजारों का चयन उचित होता है। केश को आकार देना अथवा काटना एक परिभाषिक शब्द है जो बालों को लम्बे निर्बंध शैली में काटने का वर्णन करता है।

सूक्ष्म हेयर कटिंग में बालों को छोटी शैली में विशद रेखाओं के साथ काटा जाता है। प्रत्येक केश विन्यास का निर्धारण व्यक्तिगत विशिष्टताओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

क) चेहरे के आकारों का अध्ययन:

हेयर कटिंग या केश प्रसाधन (स्टाईलिंग) के पूर्व प्रत्येक ग्राहक की विशेषताओं का आधुनिक केश विन्यास के सिद्धान्तों के आलोक में ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाता है। ग्राहक की सर्वोत्तम विशेषताओं (सकारात्मक) के आधार पर उसकी बदतरीन (नकारात्मक) वैशिष्टय को छिपाना, जिससे चेहरे का ढ़ाँचा अधिक आकर्षक हो जाये ही सही मायनों में सफलता की कुंजी है। केश प्रसाधन में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने के लिए ।

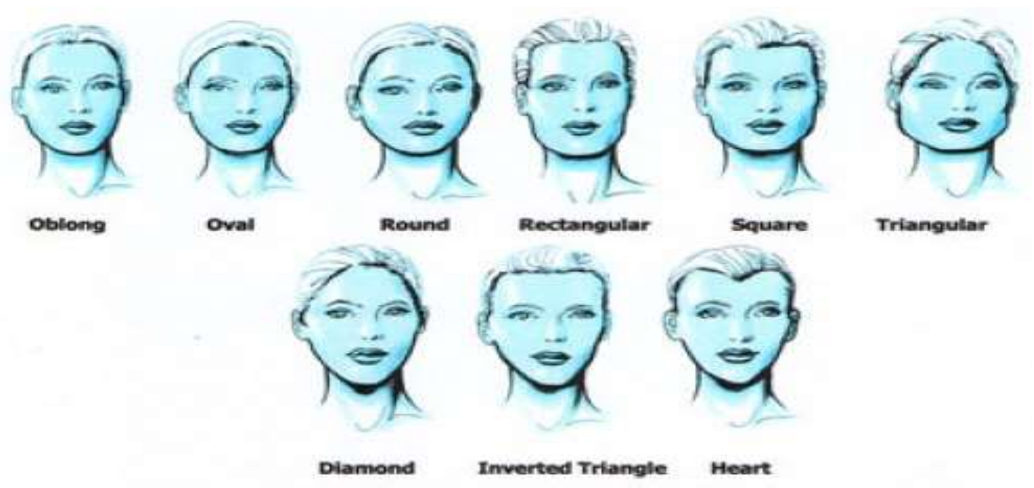

1 आयताकार	2 अण्डाकार	3 वृताकार	4 समकोणिक	5 वर्गाकार	6 त्रिकोणीय
	7 **डायमंड**	8 उल्टा त्रिभुजाकार	9 **हार्टशेप**		

चेहरे का आकार

- चेहरे का आकार : अग्रभाग और रूपरेखा, चेहरे की हड्डी एवं विशिष्टता
- शारीरिक बनावट
- पेशा
- उम्र
- अवसर

चेहरे की आकृति : अग्रभाग और रूपरेखा : एक ग्राहक के चेहरे की आकृति का निर्धारण उसके चेहरे की हड्डियों की स्थिति एवं विशिष्टिता के आधार पर किया जाता है। बालों की कटिंग या केश प्रसाधन में सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम ग्राहक के केशों को टिशु पेपर की मदद से या फिर पोनी टेल बनाकर सिर के पीछे कर लेना चाहिए ताकि चेहरे की आकृति सामने आईने में सूस्पष्ट हो सके। चेहरे की आकृति को मुख्य रूप से सात भागों में बाँटा जा सकता है यथा अण्डाकार, वृताकार, वर्गाकार, आयताकार, त्रिकोणीय, उल्टा त्रिभुज एवं **डायमंड**। केश प्रसाधन में सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने के लिए साधरणतः मन में चेहरे की अण्डाकार आकृति का **अभ्यास** निर्मित करना चाहिए।

अण्डाकार चेहरा : अण्डाकार चेहरे की आकृति प्रकटरूप में दोनो भृकुटीयों की अवस्थिति से डेढ़ गुणा तक लम्बी होती है। कपाल का हिस्सा ठोढ़ी के हिस्से से थोड़ा अधिक चौड़ा होता है। अगर नाक के आकार प्रकार या पार्श्वक में कुछ विशिष्ट न हो तो इस प्रकार के चेहरे पर सभी केश विन्यास जँचते हैं।

वृताकार चेहरा : प्रकटरूप में गोल **हेयरलाइन**, गोल ठोढ़ी एवं चौड़ा चेहरा इस चेहरे की विशिष्टता है। इस प्रकार के चेहरे पर कार्य करते हुए हमारा लक्ष्य चेहरे की लम्बाई का पार्श्वक निर्मित करना होगा ताकि चेहरा पतला लगे साथ ही साथ जो ऊपर के भाग को प्रबलता एवं पार्श्व को संवृति प्रदान करे।

वर्गाकार चेहरा : इस प्रकार के चेहरे की आकृति प्रकट रूप से कपाल के भाग में चौड़ाई लिए, मध्य का तीसरा भाग संकरा एवं जबड़े के पास वर्गाकार होता है। हमरा लक्ष्य होगा, वर्गाकार चेहरे को प्रतिसंतुलित करने के लिए सिर के ऊपर एवं

जबड़े के बराबर केशों को मुलायम कर सिर एवं जबड़े के बराबर में केशों में प्रबलता प्रदान करना ताकि कान के आसपास के भाग में चौड़ाई परिलक्षित हो।

<u>त्रिभुजाकार या नाशपाती के आकार का चेहरा</u> : प्रकटरूप में इस प्रकार के चेहरे में ललाट का का भाग संकरा तथा जबड़े एवं ठोढ़ी का भाग चौड़ा होता है। कपाल के भाग में प्रबलता प्रदान कर ललाट के संकरेपन को कुछ हद तक आवृत करने की चेष्टा करना हमारा लक्ष्य होगा।

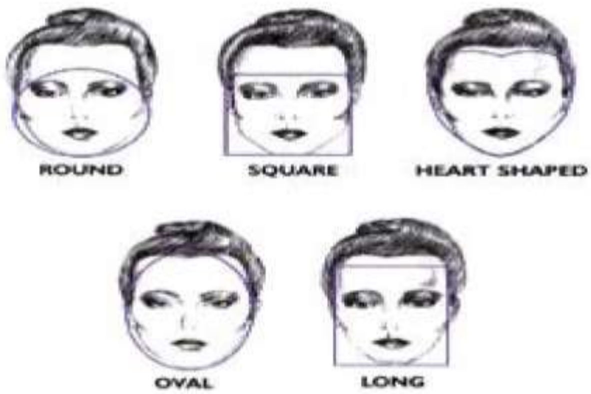

1.गोल 2. वर्गाकार 3. **हार्टशेप**
4. अण्डाकार 5. लम्बा

विभिन्न चेहरों के लिए हेयर कटिंग द्वारा केशों में प्रबलता

<u>आयताकार चेहरा</u> : देखने में ऐसा चेहरा लम्बा, संकीर्ण आकृति एवं धँसा हुआ होता है। ऐसे चेहरे के अग्रभाग में बालों को ऊपरी सतह के पास रखते हैं ताकि चेहरा छोटा और आकृति को विस्तीर्णता प्राप्त हो। बगल में चौड़ाई का **अभ्यास** प्रस्तुत करने के लिए बगल में प्रबलता दी जाती है। केशों की लम्बाई बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यह चेहरे को दीर्घरूपता प्रदान करता है।

<u>**डायमंड** चेहरा</u> : ऐसे चेहरे का **माथा छोटा**, गाल की हड्डी काफी चौड़ी और ठोढ़ी पतली नजर आती है। हमारा लक्ष्य केश को गाल की हड्डी पर माथे के निकट रखते हुए चेहरे को अण्डाकार रूप देना है ताकि जबड़े की रेखा के आस–पास का हिस्सा भरा नजर आये और इससे गाल की हड्डी के रेखा की चौड़ाई के कम होने का भ्रम होता उपस्थित हो। ऐसे केश विन्यास से बचें जिनमें केश कान के आस–पास के हिस्सों पर, **हेयरलाइन** से दूर जाते नजर आए।

<u>उल्टा त्रिभुजाकार चेहरा</u> : देखने पर ऐसे चेहरे में **माथा** चौड़ा और ठोढ़ी पतली नजर आती है। हमारा ध्यान बालों को बिना आयतन के सिर के निकट प्रसाधित कर **माथा** की चौड़ाई घटाना होगा। ऐसा करने से **माथो** की चौड़ाई कम और चेहरे के निचले हिस्से की चौड़ाई ज्यादा नजर आती है। **बालों की लट की सलाह दी** जाती है। कान के निकट मौजूद गाल की हड्डियों में जबड़े और गले के हिस्से पर पार्श्व–रूपरेखा को अत्यधिक चौड़ा रखें।

<u>चेहरे की रूपरेखा या पार्श्वचित्र</u> : पार्श्व चित्र चेहरे की **बाह्य** रूपरेखा है। एक चेहरे को तीन खण्डों में विभक्त किया जा सकता है, ललाट से भृकुटि तक, भृकुटि से नासिकांत तक और नासिकांत से लेकर ठोढ़ी के नीचे तक। व्यापक रूप से आदर्श आननी का कोण दस डिग्री, काल्पनिक ऊर्ध्व रेखा के ऊपरी भाग के 2/3 क्षेत्र होता है। चेहरे का निचला भाग ठोढ़ी से लेकर नासिका तक उसी काल्पनिक उर्ध्व रेखा के दस डिग्री कोण पर होता है।

माथे की रूपरेखा सही करने की निर्देशिका : अति चौड़े ललाट के शोधन के लिए ललाट के हर हिस्से पर बालों को गिरने दिया जाता है ताकि ललाट समानुपातिक लगे। बालों की गिरावट से खाली लगनेवाले जगहों को भर कर आसानी से अनुकूलित किया जा सकता है।

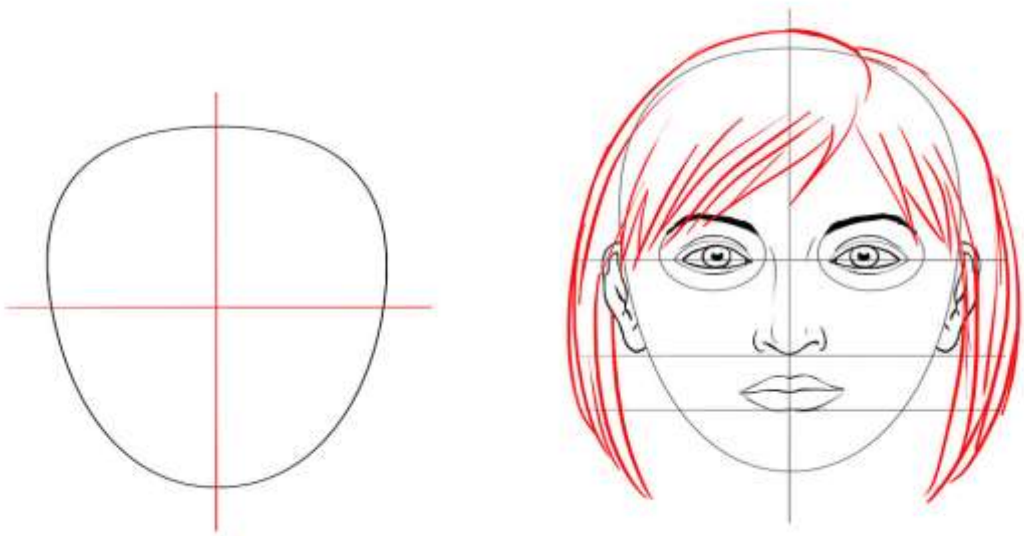

चेहरे के रूपरेखा के अनुरूप हेयर कटिंग

मध्य पार्श्व–रूपरेखा शोधन निर्देशिका : किसी भी अन्य विशिष्टता की अपेक्षा नाक की बनावट मुखाकृति को सर्वाधिक प्रभावित करती है। जब नाक अधिक बड़ा हो (चेहरे को अवतल बनाता हो) तो **माथे** पर बालों को गिरा कर या बालों को थोड़ा आगे निकाल कर संतुलन बनाया जाता है। खुले चेहरे के द्वारा छोटी नाक को आसानी से संभाला जा सकता है। चेहरे के आसपास अधिक बाल होने से नाक छोटी लगती है। आस–पास अवस्थित आँखें अक्सर लम्बे संकीर्ण चेहरे पर मिलती हैं। सिर के ऊपर बालों को पीछे की तरफ ले जायें। आँखें के आसपास गिरनेवाले बालों के नोक के पास प्रकाशक का प्रयोग करें ताकि चौड़ाई का भ्रम उपस्थित हो। दूर अवस्थित आँखों सामान्यतया चेहरे पर गोलाकार या वर्गाकार दिखते हैं। उच्च अर्ध बैंग का प्रयोग कर चेहरे में लम्बाई का आभास पैदा किया जा सकता है। ऐसा करने से चेहरे के बड़ा एवं आखों के समानुपातिक होने का विभ्रम पैदा होता है। बगल के हिस्से में बालों को ऊपर की अपेक्षा अधिक गहरा शेड दिया जायेगा।

चेहरे का निम्न–खण्ड शोधन प्रक्रिया : अगर ठोढ़ी अन्दर की तरफ झुकी हो और नाक अपेक्षाकृत लम्बा नजर आए तो बालों को ठोढ़ी की तरफ घुमाव प्रदान करना चाहिए। इस तरह एक अतिरिक्त दृष्टिभ्रम पैदा होता है कि ठोढ़ी नाक की समानुपातिक है। जब ठोढ़ी से गर्दन की दूरी कम हो तब बालों को ऊपर की तरफ पीछे झाड़ने से आँखों को ठोढ़ी के क्षेत्र से दूर ले जाती है।

शारीरिक बनावट : यद्यपि कहा यह जाता है कि औसत मानव शरीर समानुपातिक होता है, लेकिन अपवाद भी बहुत मिल जाते हैं। ग्राहक की केश–शैली उसकी लम्बाई एवं वजन के अनुकूल एवं समानुपातिक होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के सिर के आधार पर उसकी बाकी चीजों की समानुपातिकता परिभाषित होती है। औसत नौजवान की लम्बाई, कंधे और नितंब समानुपातिक होते हैं। कंधों के लिए ज्यादा छोटे बाल विन्यास सिर का आभास भी छोटा कर देंगे। यही विन्यास बड़े कुल्हों को और बड़ा दिखयेंगे। एक पेशेवर केश–विन्यासक के लिए कोई भी शैली तय करने से पहले सिर, कंधे एवं कूल्हे के समानुपातिकता को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

हेयर कटिंग के पूर्व शरीरिक बनावट, उम्र एवं अवसर का अध्ययन

पेशा :–

उम्र :–

अवसर :–

ख) चेहरे की आकृति के अनुसार हेयर कटिंग

एक श्रेष्ठ हेयर कटिंग हमेशा श्रेष्ठ विमर्श से आरंभ होता है। एक ग्राहक हमेशा एक नए रूप की तलाश में रह सकता है, वह जैसा महशूस करता हैं वैसा ही रूप–रंग प्रसारित करना चाहता है। हेयर कटिंग आरंभ करने के पूर्व पूर्ण विमर्श द्वारा यह तय करना चाहिए कि ग्राहक की बातों और आप की समझ के मध्य काई विभेद न रहे और हेयर कटिंग उपयुक्त हो। विमर्श हमेशा ग्राहक और विन्यासक के मध्य होना चाहिए। आप पायेंगे कि एक ग्राहक हमेशा कुछ सलाह देना भी चाहता है साथ ही कुछ पेशेवर सलाह प्राप्त कर उपयुक्त केश–शैली तय करना चाहता है। आपस में मिलकर अंतिम निर्णय तक पहुँचने और ग्राहक के लिए सर्वश्रेष्ठ केश–विन्यास तय करने के पूर्व ग्राहक के चेहरे की आकृति, उसके केश यथा वे घने हैं या पतले, अच्छे हैं या रूखे या सीधे हैं या घुँघराले या फिर ग्राहक के दिमाग में कोई खास केश–विन्यास है सब पर चर्चा होनी चाहिए की वह लुक समुचित है या नही।

मुखाकृति के अनुरूप हेयर कटिंग

विमर्श का अगला भाग है चेहरे की आकृति का विश्लेषण । एक श्रेष्ठ हेयर कटिंग वह नहीं है जो तकनीकी रूप से श्रेष्ठ है बल्कि श्रेष्ठ हेयर कटिंग वह है जो ग्राहक के चेहरे पर सही लगे। ग्राहक के चेहरे का विश्लेषण करने के लिए ग्राहक के सभी बालों को क्लिप के सहारे या एक तौलिये में लपेट कर सिर के पीछे की तरफ कर लें। अब चेहरे के सबसे चौड़े एवं सबसे संकरे बिन्दु का निर्धारण करें और संतुलन बिन्दु भी तय कर लें। चेहरे के शीघ्र विश्लेषण के लिए यह तय करना चाहिए कि क्या यह प्रबल रूप से चौड़ा या लम्बा है। उन बिन्दुओं की पहचान करें जिन्हें उभारना है या छिपाना है। मुखाकृति विश्लेषण के पश्चात आप अपने ग्राहक के लिए कौन सी केश–सज्जा श्रेष्ठ है तय करें। एक महत्वपूर्ण बात जो याद रखने योग्य है वह है **वज़न** और परिमाण भी खास जगह ध्यान खींचते है।

हेयर कटिंग या केश सज्जा के पूर्व केश की पाँच विशिष्टताओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए क्योंकि ये तत्व केशों का व्यवहार निर्धारित करते हैं; केशों का घनत्व, केश की संरचना, तरंग प्रतिरूप, केश रज्जू एवं वर्धन प्रतिरूप।

ग) औजारों का चयनः हेयर कटिंग के लिए अनेक प्रकार के औजार उपलब्ध हैं। हेयर कटिंग में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न औजारों की समझ से ही विभिन्न प्रकार के श्रेष्ठ केश–सज्जा की निर्मिति की जा सकती है। अच्छे और विश्वसनीय औजर निर्माताओं से ही उत्तम कोटि के औजार प्राप्त कर उनका समुचित ध्यान रखना चाहिए ताकि अच्छे परिणाम प्राप्त हों। बालों की संरचना, घनत्व एवं अवस्था के अनुसार प्रत्येक औजार का चयन करना चाहिए।

हेयर कटिंग के लिए औजारों का चयन

क) हेयर कटिंग कैंची : स्पष्ट और सीधी रेखा में हेयर कटिंग के लिए मुख्य रूप से इसका प्रयोग किया जाता है।

ख) **थ लंग शयरः** विरलीकरण कैंची का प्रयोग रूखे और गुच्छेदार बालों को हटाने के लिए किया जाता है इस कैंची को प्रतिरूपक, शुण्डाकार अथवा खांचेदार कैंची भी कहा जाता है। लेकिन खांचेदार कैंची के प्रतिरूप का निर्माण इस तरह किया जाता है कि उसके बड़े दाँत एक दूसरे से दूर रहें और ज्यादा बालों को हटा सके। केश का विरलीकरण बनाए जानेवाले केश–विन्यास पर निर्भर करता है। गाईड के रूप में केश की विभिन्न संरचनाओं का विरलीकरण निम्नलिखित रूप से करें।

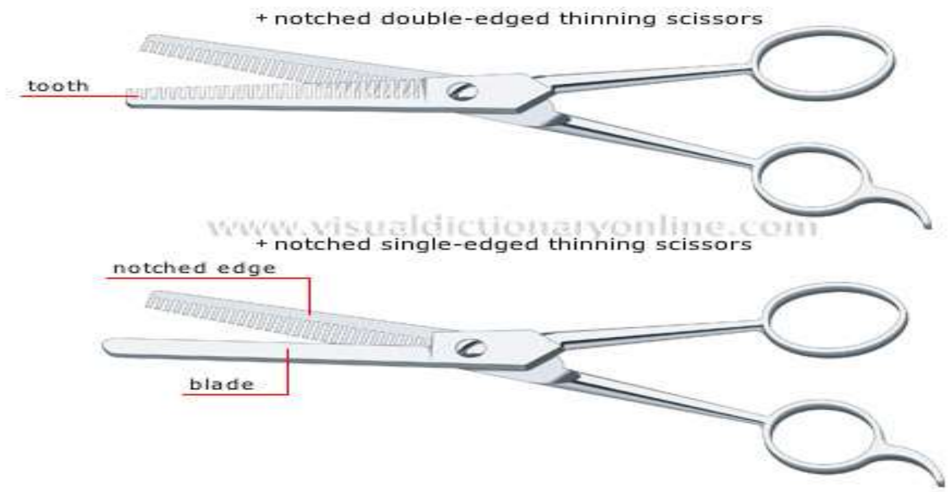

विरलीकरण कैंची के विभिन्न हिस्से

1. महीन केश : शिरोवल्क से 1/2 से 1 ईंच तक।
2. मध्यम केश : शिरोवल्क से 1 से 1.1/2 (डेढ़) ईंच तक।
3. खुरदरे केश : शिरोवल्क से 1.1/2 (डेढ़) ईंच से 2 ईंच तक।

केश **कम करने** का क्षेत्र बगल में दोनों कानों के ठीक ऊपर या गले की हड्डी पर होता है। केश को उसी आकार में छोड़ दें जिस आकार में आपने शुरूआत की थी ताकि कम बालों पर काम करना पड़े।

1. **नैप एरिया** (कान से लेकर कान तक) के क्षेत्र में विरलीकरण नहीं करना चाहिए क्योंकि आमतौर पर वहाँ केश के अधिक गुच्छे नहीं पाये जाते हैं।
2. सिर के बगल वाले हिस्सों में कानों के ऊपर।
3. चेहरे की **हेयरलाइन** के आसपास के क्षेत्र का 1/4 भाग। आमतौर पर केश रज्जू पर अधिक बाल नहीं होते हैं।
4. बालों के हिस्से में कटे हुए बालों के शिरे केश–विन्यास पूर्ण होने पर नजर आते हैं।

सावधानी : विरलीकरण कैंचियों का इस्तेमाल करते हुए इस बात की सलाह दी जाती है कि ऊपर की लटो के विरलीकरण से बचना चाहिए।

कैंची की मदद से बालों का विरलीकरण एवं सुगठन : सामान्य कैंची की मदद से बालों को विरल एवं छोटा करते समय बालों के छोटे खण्डों को विरलीकरण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली छोटी कैंची के लिए छोड. देना चाहिए। इस तकनीक में बदलाव भी किया जा सकता है। विरलीकरण की इस प्रक्रिया को फिसलते हुए आगे बढ़ना स्लीथरिंग कहते हैं।

स्लीथरिंग(फिसलते हुए आगे बढ़ना) : बालों के एक लट को तर्जनी और मध्यमा के बीच सीधा पकड़ लें और केवल झुके हुए लटों को काटें। कैंची को लटों के ऊपर नीचे ले जायें और हर बार शिरोवल्क की तरफ जाते हुए कैंची को थोड़ा बन्द करें। इस प्रक्रिया को प्रत्येक लट पर दो बार दुहरायें। वैकल्पिक तरीके के रूप में बालों को अंगूठे और तर्जनी से पकड़ते हैं। बालों को पीछे की तरफ ले जाते हैं। जैसा कि चित्र में दर्शया गया है छोटे बालों को पीछे की तरफ कंघी करें और उपरोक्त प्रक्रिया पूर्ण करें। यह सलाह दी जाती है कि लटों के छोर को अंगूठे और तर्जनी से पकड़ें।

ग) रेजर या उस्तरा : केशों को कुछ विशिष्ट संरचना प्रदान करने के लिए रेजर एक बहुत ही उपयोगी औजार है। यह बहुउपयोगी है। रेजर की मदद से हम केशों को ब्लन्ट कट, विरलीकृत या बालों के नोक को शुण्डीकृत कर सकते हैं। रेजर का उपयोग हम हर प्रकार के हेयर कटिंग के लिए कर सकते हैं। मुख्यरूप से दो प्रकार के रेजर उपयोग में लाये जाते हैं।

1. सुरक्षित या गार्डेड रेजर (इस प्रकार का रेजर अधिक सुरक्षा प्रदान करता है और ब्लेडों को बहुत काटने से रोकता है)
2. सीधा खुले ब्लेड वाला रेजर (अनुभवी केश विन्यासकों द्वारा यह बहुलता से प्रयुक्त होता है)

घ) **क्लिपर** : मुख्यरूप से छोटा शुण्डाकर बनाने में, केश को छोटा काटने में, केशों को क्षीण या सपाट बनाने में किया जाता है। **क्लिपर** का प्रयोग बिना सुरक्षा कवच के शिरोवल्क पर और सुरक्षाकवच के साथ केशों की विभिन्न लम्बाई पर किया जाता है।

मानव चालित रेजर

बिजली चालित रेजर एवं उसके संलग्नक

ड.) छोटी **क्लिपर** : यह सामान्य **क्लिपर** का ही छोटा प्रारूप है जिसका प्रयोग मुख्यरूप से गर्दन और कनपट्टी के बालों को छोटा करने के लिए ज्यादातर पुरूषों के बाल बनाने में या फिर छोटे बाल रखने वाली महिलाओं के लिए उपयोग में लाया जाता है।

च) चौड़े दाँतो वाली कंघी : जयादातर उलझे हुए बालों को सुलझाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। केश कर्तन कार्य में इसका उपयोग शायद ही होता है।

छ) खण्ड (सेक्शन) चुटकी (क्लिप) : यह अनेकों प्रकार के रंग, रूप और आकार में उपलब्ध हैं। ये प्लास्टिक या धातु के बने हो सकते हैं। साधारण तौर पर दो प्रकार के क्लिप या चुटकी इस कार्य में प्रयुक्त होते हैं – जबड़े वाला क्लिप और बत्तख के चोंच के आकार की क्लिप। ये दोनो छोटे और बड़े आकार में उपलब्ध हैं।

ज) **बराबर काम्ब** : मुख्यरूप से इसका प्रयोग गर्दन के बालों को और कनपट्टी के बालों को छोटा करने के लिए होता है। खासकर तब जब कंघी के ऊपर कैंची तकनीक से बालों की छटाई की जाती है। कंघी का संकरा सिरा बालों को सिर के अत्यधिक करीब में काटने में उपयोगी होता है।

केश कटिंग में उपयोगी विभिन्न प्रकार की कंघीयाँ

ञ) सज्जात्मक एवं कटिंग कंघी : इसे बहुप्रयोजन कंघी भी कहा जाता है। इसका उपयोग तकरीबन हर प्रकार के केश कटिंग एवं सज्जा के लिए होता है। यह 6 से 8 ईंच तक लम्बा हो सकता है; इसका एक सिरा महीन दाँतों वाला एवं दूसरा सिरा चौड़े दाँतो वाला होता है।

उस्तरे या रेजर को पकड़ना : एक सीधा उस्तरा या आकार प्रदान करने वाला उस्तरा केश कटिंग कार्य के लिए एक बहुउपयोगी औजार है, जिस से बालों की विशेषता उभारने के साथ ही साथ केशों को विभिन्न आकार दिया जाता है। उस्तरे को पकड़ना और उससे काम करना कैंची पकड़ने और उससे काम करने से बिल्कुल अलग है। उस्तरे को सही तरीके से पकड़ने एवं उससे काम करने की जितनी तैयारी और अभ्यास किया जायेगा काम करना उतना ही आसान होगा। कटिंग के लिए उस्तरे को पकड़ने की दो विधियाँ हैं।

1. विधि –क

क. उस्तरे को इस प्रकार खोलें कि उसका हत्था उसके धार वाली डंडी से ऊपर रहे। अब अपने अंगूठे और तर्जनी से धार वाली डंडी को पकड़ें फिर मध्य और उसके बाद वाली अंगुली से धार वाली डंडी को सहारा दें।

ख. अब कनिष्ठा को डंडी और धार वाली डंडी बीच ऊपर रखें और डंडी पर दबाब बनाऐं।

ग. जब एक छोटे खण्ड की कटाई कर लें तो उस्तरे को पुनः उस खण्ड के ऊपरी किनारे पर ले जायें। बेहतर नियंत्रण के लिए कटाई खण्ड को अपने सम्मुख रखें।

2. विधि –ख

क. उस्तरे की डंडी और धार वाली डंडी को सीधी रेखा में रखें।

ख. मूठ पर अंगूठा रखें तथा बाँकी उंगुलियों से डंडी के गिर्द लपेट दें।

उस्तरे से क्षीण केश समिश्रण :

उस्तरे से तीन प्रकार के क्षीण केश समिश्रण किये जाते है :–

क)हल्का क्षीण केश समिश्रण : उस्तरे को केशों की सतह के सामने तकरीबन सपाट रखा जाता है। ध्यान रहे जब धार को हल्का झुकाव दिया जाता है तो बहुत थोड़े ही बाल कटते हैं।

ख) भारी क्षीण केश समिश्रण : केश की लटों के पास उस्तरे की धार को 45 डिग्री के कोण पर रखतें हैं। चूँकि उस्तरा ज्यादा झुका होता है इसलिए **कटाई** की गहराई बढ़ जाती है। उस्तरे पर हल्का क्षीण केश समिश्रण से ज्यादा दबाब दिया जाता है।

ग)अग्रस्थ (सिरा) समिश्रण : उस्तरे के धार का कोण लगभग 90डिग्री रखा जाता है। बहुत छोटी लम्बाई का छिलाई प्रहार किया जाता है। अग्रस्थ सिरा समिश्रण को अग्रस्थ सिरा या ब्लण्ट कटिंग भी कहते हैं।

उस्तरे से केश कटिंग : उस्तरे से केश कर्तन केश कर्तन की अन्य तकनीकों से बिल्कुल भिन्न है क्योंकि इस तकनीक में केश कर्तन के लिए तेज धार वाले उस्तरे का प्रयोग किया जाता है। संतोषप्रद परिणाम प्राप्त करने के लिए इस तकनीक में अत्यधिक तकनीकी दक्षता, धैर्य एवं एकाग्रता की जरूरत होती है।

हेयर कटिंग की तैयारी :

1) रूपरेखा निर्धारित करें, गले के कपड़े और **प्लास्टिक कैप** को ठीक करें।
2) सिर के आकार, चेहरे की विशिष्टता एवं बालों की रूपरेखा की जाँच करें।
3) बालों के उलझावों को कंघी या ब्रश से ठीक कर लें।
4) बालों में मार्जक **(शैम्पू)** लगायें या उसे गीला कर लें।
5) केशों को चार या पाँच खण्डों में विभक्त कर लें।

प्रक्रिया : मध्य भाग के क्षैतिज लटों को पकड़ें। लम्बाई के लिए एक मार्गदर्शक लट का चुनाव करें। जब मार्गदर्शक लट बाहर गिरे, हाथ को बाहर और ऊपर की तरफ ले जाते हुए 45 डिग्री के कोण पर बालों को कटिंग करें। इसी प्रकार बाईं तरफ भी कटिंग करें। पुनः वापस लौटते हुए इस खण्ड के दाई तरफ कर्तन करें। बालों की काटते के समय हमेशा बालों को 45 डिग्री के कोण पर ही उठाएं।

स्लाइड हेयर कटिंग : इस तकनीक में बालों का विरलीकरण या कटिंग उँगली और कैंची के माध्यम से बालों की लमबाई कम करने के लिए किया जाता है। **स्लाइड** हेयर कटिंग **में लम्बे बालों को उ चत मापक्रप पर काटने का तरीका** है। इस तकनीक का प्रयोग सिर्फ गीले बालों पर ही करना चाहिए।

क्लिपर के प्रयोग द्वारा हेयर कटिंग के लिए खण्ड विभाजन

कंघी पर कैंची प्रणाली : यह केश–प्रसाधन विज्ञान में हेयर कटिंग की सर्वाधिक प्रचलित प्रणाली है। इस प्रणाली में आप बालों को कंघी से पकड़ कर कैंची की मदद से उसकी लम्बाई कम करते हैं। कंघी पर कैंची प्रणाली बालों के छोटे समिश्रण बनाने और लम्बे से लेकर अत्यधिक छोटे आकार में **बालों को काटने** के लिए उपयोगी है। रूखे एवं सूखे बालों पर यह तकनीक बहुत ही कारगर है। बालों को अपनी उँगलियों से ना पकड़ें। कंघी और कैंची को समरूपता से बालों के ऊपर चलायें।

कैंची और कंघी के माघ्यम से हेयर कटिंग

प्रक्रिया :

1) सिर के जिस खण्ड पर कार्य कर रहे हों उसके ठीक सामने खड़े हों ताकि कटिंग खण्ड आँखों के समक्ष रहे।
2) सर्वप्रथम कंघी को **हेयरलाइन** में प्रविष्ट करें तत्पश्चात कंघी को थोड़ा घुमायें ताकि कंघी के दाँतों का कोण सिर से दूर रहे।
3) अब कंघी के रीढ़ पर कैंची को अंगूठे की मदद से चलाते हुए कंघी को ऊपर नीचे करें।
4) अब कंघी के कोण को सिर से और दूर करें। समिश्रण क्षेत्र में पहुँच कर कटिंग बंद कर दें ताकि लम्बाई अधिक छोटी न हो तथा उससे बचा जा सके । (रूकें)

<u>सावधानियाँ</u> :

- एक समय में छोटे खण्ड पर ही कार्य करें। (कैंची के फल के बाहर कार्य न करें)
- हमेशा **हेयरलाइन** से शुरू करते हुए लम्बाई की तरफ बढ़ें। अगर आप चाहे तो पहले से कटे खण्ड में कंघी चलाते हुए नये खण्ड में प्रवेश कर सकते हैं।
- तिरछी रेखा में अपने कार्य खण्ड को पुनः जाँच लें ।
- जिन जगहों पर **स्कैल्प** के समीप महीन कटाई करनी हो खासकर कनपट्टी और **हेयरलाइन** के पास वहाँ **बारबर कॉम्ब** नाई कंघी का प्रयोग करें।

घुँघराले बालों की कटिंग :

सर्वप्रथम यह सुनिश्चित कर लें कि घुँघराले बाल काटने और सूखने के पश्चात कैसा व्यवहार करते हैं। घुँघराले बाल हल्के तरंगित से लेकर अत्यधिक घूँघरदार हो सकते हैं, और घुँघराले बालों वाले ग्राहक के बाल क्षीण, मघ्यम या रूखे प्रारूप के हो सकते हैं और उसका घनत्व हल्के से घना हो सकता है।

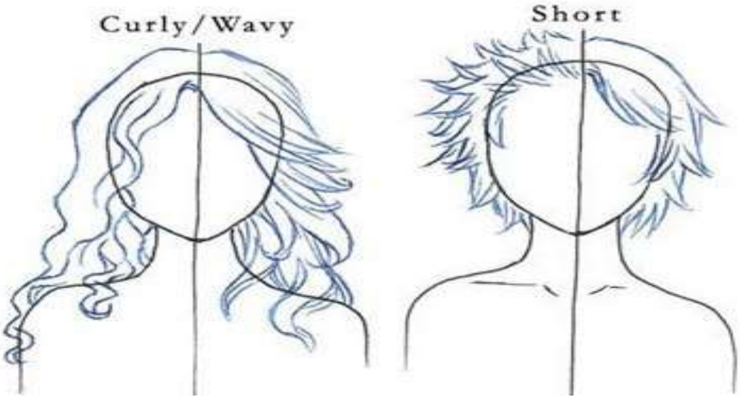

घुँघराले बालों की कटिंग लम्बा एवं छोटा

घुँघराले बालों की सज्जा : घूँघरों को हटाए या फ्रिज्ज किये बिना सुखाने के लिए अपसंघटक का प्रयोग किया जाता है। अपसंघटक को ब्लो ड्रायर की टोंटी से जोड़ दिया जाता है। सर्वप्रथम शिरोवल्क के निकट केशों को सुखायें, इसके बाद बालों को उँगलियों की मदद से उठायें और ड्रायर को घुमा कर बालों को सुखायें, घ्यान रहे ग्राहक की त्वचा जले नहीं। गुद्दी के पास से शुरू करे और बालों को उठाते हुए शिरोवल्क की तरफ बढ़ें। ऐसा करना तब और कारगर हो जाता जब केशों को पहले से रासायनिक रूप से तरंगित किया गया हो।

घूँघर बनाने के पश्चात अपसंघटक की मदद से घूँघर सुखाना

घूँघरदार बालों के कटिंग पूर्व याद रखने वाली बातें

- घूँघरदार बाल सामान्य सीधे बालों की अपेक्षा अधिक सिकुड़ते हैं। प्रत्येक 1/4 ईंच (0.6 से0मी0) भींगे बाल सूखने पर 1 ईंच (2.5 से0मी0) तक सिकुड़ सकते हैं।
- चौड़े दाँतों वाली कंघी का प्रयोग कर बालों की असमान लम्बाई ठीक करें।
- घूँघरदार बाल स्वमेव नैसर्गिक रूप से लम्बे हो जाते हैं।
- घूँघरदार बालों पर कभी भी **रेज़र** का प्रयोग न करें क्योंकि उस्तरे का प्रयोग बालों के क्यूटिकल को कमजोर बनाकर बालों को फ्रिज्जी बना देते हैं।

फ्रन्ज़ की कटिंग काटना : **फ्रन्ज़ एरिया** कपाल के दोनो किनारे पर होता है या कहें दोनों आँखों के बाहरी किनारे पर अवस्थित होता है। जब आप बालों के नैसर्गिक गिरावट पर काम करते हैं तब यह निश्चित करें कि आप सिर्फ उन्हीं बालों को काटेंगे जो उस क्षेत्र में पड़ता है क्योंकि प्रत्येक सिर की बनावट अलग होती है। ऐसा नहीं करने पर आप वैसे क्षेत्रों के भी बाल छोटे कर सकते हैं जो दरअसल उस क्षेत्र में नहीं पड़ते हैं और सारा केश विन्यास बिगर सकता हैं। कभी–कभी **फ्रन्ज़** के क्षेत्र में सिर्फ दो चार लटों के कटिंग की ही आवश्यक्ता होती है। ऐसा करने से केश मुँह के आगे से

हट जाता है। ऐसे में अधिक बाल काटने की जरूरत नहीं है। **फ्रन्ज़** पर जरूरत के अनुसार उस्तरे का भी प्रयोग किया जा सकता है।

परिशुद्ध या सूक्ष्म केश **कटिंग** : परिशुद्ध या सूक्ष्म केश **कटिंग** में केशसज्जा विज्ञान की सबसे आधुनिकतम सोच एवं तकनीक परिलक्षित होती है। परिशुद्ध या सूक्ष्म केश **कटिंग** के पाँच आधारभूत नियम हैं।

परिशुद्ध **कटिंग** के आधुनिकतम और बेहतरीन तरीके होते है

क) बालों को बहुत छोटे भागों में काटें: परिशुद्ध बाल काटनें में हम इन बड़े लटों को बाल क्षेत्र कहते हैं और सिर को मूल क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। उसके पश्चात प्रत्येक भाग को बहुत छोटे छोटे भागों में बांटा जाता है और आधे इंच से अधिक चौड़ा नहीं होता है जो बाल काटने पर नियंत्रण रखता है इसका तात्पर्य यह है कि सामान्यतया ये **कम हो** जाते हैं क्योंकि इनमें हुई गलतियों को आसानी से ठीक किया जा सकता है।

ख) सीधी और पैनी लाइनों में कटाई: यह महत्वपूर्ण है कि आपकी **कटिंग** सीधी हो। इसे समानांतर किनारों वाली कटाई भी कहते हैं। बालों की सीधी **कटिंग** की जाती है ताकि इनका अंतिम सिरा सीधा हो।

ग) बालों को कस कर और मजबूती से पकड़ें:—इससे यह सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी कि आपकी **कटिंग** साफ है और पैना छोर विषम होगा न कि सीधा। बालों को कस कर पकड़िए क्योंकि इससे **कटिंग** स्पष्ट होगी।

अंशाकित बाल **कटिंग**

बालों की सही **कटिंग** के लिए आवश्यक है कि इसे काटने से पूर्व शैम्पू किया जाए

बालों की उठाकर **कटिंग**

घ. जहां आवश्यक हो अंशाकित प्रभाव के लिए बालों को उठाएं :– बालों की **कटिंग** के प्रत्येक तरीके मूलभूत सिद्धांत इसे उठा कर काटना है। परिशुद्ध बालों की **कटिंग** में बालों के उठाने की पद्धति का एक नया अर्थ है। इस पद्धति में प्रयोग किए जाने वाले छोटे भागों के कारण बालों को उठा कर काटने से न सिर्फ इसे छोटे रूप में काटते हैं बल्कि एक अशांकित प्रभाव भी सृजित करते हैं। पारम्परिक बॉब एक लंबाई वाली **कटिंग** जैसा दिखता है किंतु वास्तव में प्रत्येक छोटे भाग को थोड़ा उठाया जाता है ताकि बाल अंशाकित हों। चूंकि प्रत्येक भाग अपने पिछले वाले से थोड़ा ही छोटा होता है, इसलिए बालों के वजन को संपूर्ण रूप से निचले भाग के बदले संपूर्ण सिर पर फैला दिया जाता है। बालों का अंतिम स्टाइल झूलने वाला और उछालदार हो जाता है।

ड. बालों को काटने के दौरान कई बार पुनःजांच करें:–पुनःजांच एक ऐसा कदम है जिसमें आप बालों की **कटिंग** का पुनर्मूल्यांकन करते हैं और आवश्यक होने पर इसका समायोजन करते है। पुनःजांच के लिए आपको उस स्थान पर होना चाहिए जहां से आप बालों की हुई **कटिंग** के कई भागों को एक साथ पकड़ने में समर्थ हो सकें। बालों को भिन्न दिशाओं में खीचें ताकि बालों की **कटिंग** का मूल्यांकन किया जा सके।

विभिन्न दिशाओं से बालों की पुनर्जांच करना

उदाहरण के लिए यदि बालों को काटने के लिए इन्हें क्षैतिज रूप से अलग–अलग किया गया है तो विषम सिरे की पुनर्जांच के लिए इसे उर्ध्व रूप में अलग–अलग करें।

समीक्षा प्रश्न

1. परिशुद्ध बालों की **कटिंग** को परिभाषित करें।

2. बालों की **कटिंग** में प्रयुक्त मुख्य उपकरणों के नाम क्या हैं?

3. अपेक्षित लंबाई तक बालों के पतला होने, धीरे–धीरे छोटा होने और **कटिंग** के चार मुख्य कारण बताएं।

4. बालों को फिसलनदार बनाने से आप क्या समझते हैं?

5. महिलाओं के बालों की **कटिंग** के पूर्व उनके बालों को अगल–अलग करने के क्या कारण हैं?

6. दिशानिर्देश से आप क्या समझते हैं?

7. आप घूंघरदार बालों की **कटिंग** कैसे करेंगे?

अभ्यास प्रश्न

सैद्धांतिक

1.बालों को आकार देने के लिए अपेक्षित विभिन्न उपकरण और औजार क्या हैं? बालों की **कटिंग** के समय आप कैंची के साथ कंघी को कैसे पकड़ेंगे?

2. **क्लिपर** से आप क्या समझते हैं? विद्युतीय **क्लिपर** के सावधानी पूर्वक इस्तेमाल की व्याख्या कीजिए।

3.आप घूंघरदार बालों की **कटिंग** किस प्रकार करेंगे? प्रक्रिया की व्याख्या करें।

4. मोटे बालों की अपेक्षा पतला बालों सिर की खाल से चिपका क्यों रहता है? इसकी प्रक्रिया और सावधानियों के बारे में लिखें।

5.परिशुद्ध बालों की **कटिंग** किसे कहा जाता है और यह हेयर सैलून के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है?

व्यवहारिक

1.तस्वीरों और डमी की सहायता से चेहरे के आकार को प्रदर्शित करें।

2.चार्टों और तस्वीरों की सहायता से शरीर की बनावट, आयु और अवसर को प्रदर्शित करें।

3. बालों की **कटिंग** कैंची, पतली कैंची, रेजर और **क्लिपर** (हाथ से चलाने वाला और बिजली से चलाने वाला) को प्रदर्शित करें।

4. बालों की **कटिंग** और परिशुद्ध बालों की **कटिंग** के लिए बालों को अलग– अलग करने की विधि को प्रदर्शित करें।

इकाई–**IV**

<u>स्थाई वेविंग / स्ट्रेटनिंग</u>

स्थाई वेविंग, सैलूनों में दी जाने वाली एक रासायनिक सेवा है। रासायनिक वेविंग केश को पूरी तरह बदल कर उसकी बनावट में भी स्थाई बदलाव लाता है। इसका प्रयोग केश को घुंघराला करने और उसका आयतन बढ़ाने के साथ–साथ केश को सवारने में आसान बनाने के लिए किया जाता है। रासायनिक केश उपचार हमें बालों के प्राकृतिक घुघरालेपन को बदलने की योग्यता देता है।

क्षारीय विलयन केश को मुलायम और **फूलकर** बना क्यूटिकल (केश की बाहरी परत) को बढ़ाता है जिसके कारण विलयन क्यूटिकल के रास्ते कोर्टेक्स (केश के बीच की परत जो मजबूत और क्षारीय होती है) में प्रवेश करता है, जो क्यूटिकल के ठीक नीचे होता है। कोर्टेक्स की पोलीपेप्टाईड **श्रृंखला** अंतिम रासायनिक बंधनों से जुड़े हाने के साथ तिर्यक बंधनी के द्वारा पार्श्व के रासायनिक बंधनों से भी जुड़े रहते हैं, जिससे केश के रेशे और संरचनाऐं बनती है। इन्हीं रासायनिक बंधनों के कारण बालों को उनकी प्राकृतिक घुंघराली बनावट के साथ मजबूती और लोच भी मिलती है।

PH स्केल

pH **स्केल** का प्रयोग जल के विलयन में अम्ल की मात्रा को जाँचने के लिए किया जाता है। हालांकि pH **स्केल** के द्वारा क्षारीय तत्वों का पता नहीं लगाया जा सकता है लेकिन अम्लीय तत्वों का पता लगा कर उन्हें कम जरूर किया जा सकता है। जल में घुलने वाली किसी भी चीज में जल के ध्रुवत्व के कारण अम्लीय या क्षारीय तत्व हमेशा मौजूद रहते हैं। यह **स्केल** 0.0 जो अम्ल की सबसे अधिक मात्रा है, से 14.0, जो अम्ल की सबसे कम मात्रा है, तक होता है। **स्केल** के मध्य का हिस्सा उदासीन होता है क्योकि इसमें बराबर मात्रा में अम्लीय और क्षारीय तत्व होते हैं। शुद्ध जल मध्यम या उदासीन होता हैं। केश में भी बराबर मात्रा में अम्लीय और क्षारीय तत्व होते हैं।

केश का pH

केश का अपना कोई pH नहीं होता है क्योंकि यह ठोस है; लेकिन इसकी बाह्यभित्ति का pH होता है। इसका pH **स्केल** पर 4.5 से 5.5 के बीच आता है। ऐसी कोई भी वस्तु जिसका pH 4.5 के नीचे हो, वह हमारे बालों पर अम्ल की तरह असर करेगा। वह बालों को कड़ा, उलझा हुआ और छोटा कर देगा। ऐसी कोई भी वस्तु जिसका pH 5.5 से ज्यादा हो वह हमारे बालों पर क्षारीय असर करेगा और उसके प्रयोग से हमारे बाल मुलायम, **फूले** और बड़े होंगे। केश पर किसी भी चीज के इस्तेमाल के बाद बाह्यभित्ति का pH 4.5 से 5.5 के बीच वापस आ जाना चाहिये। इससे आपके द्वारा दी गई सेवा लम्बे समय तक टिकेगी और आपके ग्राहक के बाल भी सवारने में आसान हो जाएंगे।

<u>पेप्टाइड बंधन</u>

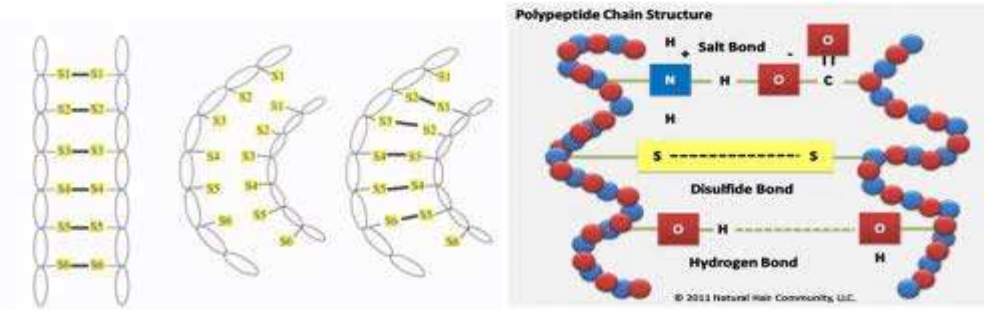

केश के विभिन्न रासायनिक बंधन

एमिनो अम्लों को जोड़ने वाले रासायनिक बंधनों को पेप्टाइड बंधन या अंतिम बंध कहा जाता है। ये बंधन एक साथ जुड़कर एमिनो अम्ल (प्रोटीन) की एक श्रृंखला तैयार करता है जिसे पॉलीपेप्टाइड श्रृंखला कहा जाता है। यह बंधन आपस में जुड़ कर एमिनो अम्लों से बने हुए लम्बे कुण्डलित समूह होते हैं। यह आपस में माला के मनकों जैसे जुड़े रहते हैं। इस बात की जाँच बहुत जरूरी है कि रासायनिक सेवा प्रदान करने से पहले पेप्टाइड बंधन टूटे नहीं वरना केश कमजोर हो कर टूट सकते है। जल एक सर्वविलायक है जो अपने अन्दर किसी भी वस्तु को उसके **pH** मान सहित घोल सकता है।

<u>डाईसल्फाइड बंधन</u>

दो कोशिकीय एमिनो अम्ल आपस में मिलकर डाईसल्फाइड बंधन का निर्माण करते हैं जो पॉलीपेप्टाइड श्रृंखला या अंतिम बंधन के ऊपर स्थित होते हैं। डाईसल्फाइड बंधन एक कोशिकीय सल्फर अणु को एक पॉलीपेप्टाइड अणु श्रृंखला से दूसरे कोशिकीय सल्फर अणु को दूसरे पॉलीपेप्टाइड श्रृंखला के पार्श्व में जोड़ता है ताकि आक्सीकृत प्रारूप में कोशिका का निर्माण संभव हो सके। डाईसल्फाइड बंधन पेप्टाइड बंधन से कमजोर होते हैं जबकि हाइड्रोजन बंधन या लवण बंधन से बहुत अधिक मजबूत होते हैं। डाईसल्फाइड बंधन गर्मी या शीत से नहीं टूटता है क्योकि यह त्रिकोणीय और सर्वाधिक मजबूत बंधन होता है। रासायनिक संक्रियाओं यथा बालों को मुलायम या अनाविष्ट करने या फिर बालों को कठोरीकृत कर नया आकार देने में या कायिक संक्रियाओं में जैसे बालों को वेष्टन छड़ के गिर्द लपेटने इत्यादि की क्रियाओं में डाईसल्फाइड बंधन के फलस्वरूप स्थाई लहर या छल्ला बनाना संभव हो पाता है।

लवण बंधन

विपरीत विद्युतीय आवेशों के आकर्षण के फलस्वरूप लवण बंध का निर्माण होता है। pH मान (Potential Hydrogen – pH से हम जल की अम्लीयता का पता लगाते हैं) के बदलते ही लवण बंधन आसानी से विखंडित हो जाते हैं तथा pH के सामान्य होते ही फिर से पुनर्गठित हो जाते हैं। बालों में अत्यधिक लवण बंधन होते हैं (**कुल** बालों का 1/3 भाग) ।

हाइड्रोजन बंधन

हाइड्रोजन बंधन क्षीण कायिक बंध है जो दो विपरीत विद्युत आवेशों के परस्पर आकर्षण के कारण निर्मित होता है। हाइड्रोजन बंधन पानी से आसानी से विखण्डित हो जाता है और बालों के सूखते ही पुनः अपने पुराने स्वरूप में लौट जाता है।

शर्करा बंधन

यह अंतिम बंधन है जो पॉलीपेप्टाइड श्रृंखला के बीच तिर्यक बंधनी के रूप में रहता है, इसे इस्टर (या शर्करा) बंधन भी कहते हैं। हम जानते हैं कि यह बंधन एमिनो अम्लों में दो अलग–अलग प्रोटीन श्रृंखलाओं के मध्य रहता है। हमारा सोचना है कि यह केराटीनाइजेशन (kertinization) के दुष्प्रभाव के कारण बनता है। यह बंधन हमारे बालों में अपघर्षण के विरोध को बढ़ाता है।

केश के निर्माण में बंधनों का योगदान

जैसा कि हम देखते हैं, बंधन कोशिकाओं को बदल कर केश के ठोस रूप में परिवर्तित करते हैं। एमिनों अम्ल आपस में पेप्टाइड बंधनों से जुड़े रहते हैं। पेप्टाइड श्रृंखला आपस में पॉलीपेप्टाइड बंधनों से जुड़े रहते हैं। पॉलीपेप्टाइड श्रृंखला कुण्डलित होकर हेलिक्स (Helix) बनाते हैं और इनमें से तीन कुण्डलियाँ या हेलिक्स आपस में जुड़ कर प्रोटोफाइब्रिल (Protofibril) का निर्माण करते हैं। फिर सात से ग्यारह प्रोटोफाइब्रिल आपस में गुंथकर माइक्रोफाइब्रिल (Microfibril) बनाते हैं। बहुत सारे माइक्रोफाइब्रिल फिर आपस में मिल कर मेक्रोफाइब्रिल (Macrofibril) और हजारों की संख्या में मेक्रोफाइब्रिल आपस में गुंथकर कोर्टेक्स (Cortex) का निर्माण करते हैं। यह सारी क्रिया रोमकूपों (Follicles) में होता है। ठीक इसी समय क्यूटिकल (Cuticle) की परतों का निर्माण हो रहा होता है। यह सारी क्रिया एक नर्म, स्पंजी ऊत्तक जिसे अन्तस्था (Medulla) कहते हैं के इर्द–गिर्द होती है।

भौतिक बदलावों का प्रयोग करते हुए सैलून की कार्यप्रणाली

सैलूनों की व्यवहारिक दुनिया में, रासायनिक बंधनों के कारण ही बालों को लचकदार तनन मजबूती (Tensile Strength) मिलती है। लचकदार तनन मजबूती उस बल का विरोध करती है जो दो वस्तुओं को एक–दूसरे के विपरीत दिशा में खींचता है। यही मजबूती बालों को कंघी करने या रगड़ने के दौरान टूटने से बचाती है। सैलूनों में कभी भी केश के सारे बंधनों को तोड़ने की सलाह नहीं दी जाती है बल्कि ऐसे रासायनों के प्रयोग की सलाह दी जाती है जो खास बंधनों पर ही असर करते हैं।

जल; लवण और हाईड्रोजन बंधनों को तोड़ता है। लेकिन बाल के सूखते ही हाईड्रोजन और लवण बंध एक नया आकार ले लेते हैं और तब तक उसी आकार में रहते हैं जब तक उन बंधनों पर फिर से जल का इस्तेमाल ना किया जाये।

रासायनिक बदलावों का प्रयोग करते हुए सैलून की कार्यप्रणाली

केश में स्थायी बदलाव के लिए रासायनों का प्रयोग जरूरी है। कॉस्मेटोलाजी (Cosmetology) में रासायनिक बदलावों के लिए दो रासायनिक प्रतिक्रियाओं का इस्तेमाल किया जाता है:–

- घटाव या **अवकारक** (Reduction)
- उपचयन या ऑक्सीकरण (Oxidation)

अपचयन या **अवकारक** का प्रयोग सैलूनों में पॉलीपेप्टाइड सृंखला के बीच मौजूद डायसल्फाइड बंधनों को तोड़ने के लिए किया जाता है। **अवकारक** के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले सामन्य तत्व हैं, स्थायी तरंग लोशन (Permanent Wave Lotion) और रासायनिक शिथिलकारक (Chemical Relaxer)। यह दोनो तत्व बालों के नैसर्गिक घुंघरालेपन में बदलाव लाते हैं।

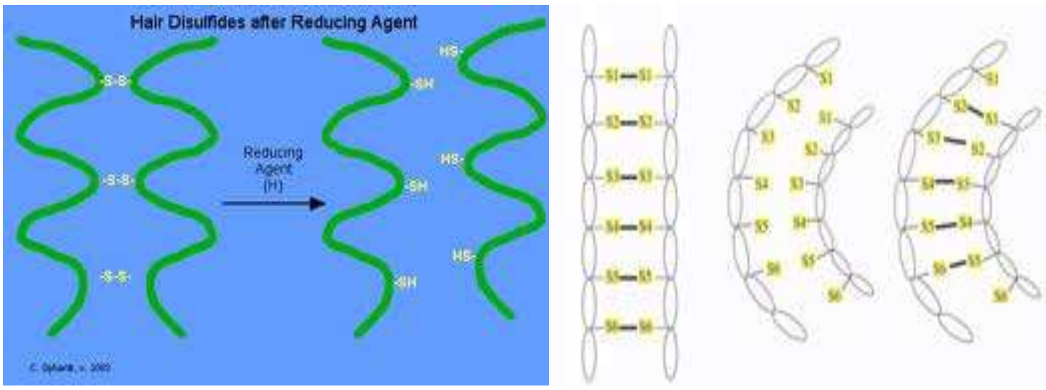

केश के डायसल्फाइड बंधनों को तोड़ने की प्रक्रिया

उपचयन या ऑक्सीकरण प्रक्रिया का प्रयोग सैलून में रासायनिक बंधनों के पुनर्गठन में किया जाता है ताकि रंगों में कृत्रिम रंजक (Pigment) अणुओं (Molecules) का आपस में जुड़ाव हो जाए या केश के प्राकृतिक वर्ण–रंजकों का रंग हल्का हो जाए। हाईड्रोजन पेरोक्साइड (H2O2) सैलून में इस्तेमाल किया जानेवाला सबसे सामान्य ऑक्सीकरण–विलयन है। उदाहरण के लिए :– स्थायी वेव प्रक्रिया लोशन कम करता है और इसे अवकरण एजेंट कहा जाता है क्योंकि यह बालों को इलेक्ट्रोन प्रदान करता है। प्रसंस्करण लोशन में भी रसायनिक बदलाव होते हैं, इसमें ऑक्सीकरण होता है क्योंकि इससे इलेक्ट्रोन बाहर निकलता है।

ग्राहक परामर्श और **रिकार्ड** में ग्राहक के बालों की लम्बाई, बनावट, रंग और हालत का पूरा लेखा–जोखा करने के साथ ही साथ दी जाने वाली सेवा से अपेक्षित परिणामों का निर्धारण किया जाता है। ग्रााहक को दी जाने वाली किसी भी सेवा से पहले पूरी जानकारी का पुनर्निर्धारण किया जाता है कयोंकि हर ग्राहक के इतिहास में कुछ परिवर्तन हुए हो सकते हैं। इसमें घूंघर (Perm) के प्रकार, उसका आकार, रैपिंग तकनीक, प्रक्रिया समय और अंतिम परिणाम की जानकारी भी रखी जाती है। **रिकार्ड रखना** चाहिए**,** ताकि रासायनिक उपचार के पश्चात पिछले परिणामों और अभी के परिणाम का अंतर पता किया जा सके, अगर कुछ नया बदलाव नजर आये तो उसे भी दर्ज कर लेना चाहिए।

सिर की त्वचा का परीक्षण

बालों का परीक्षण एक सफल रासायनिक केश सेवा का महत्वपूर्ण अंग है। पूर्ण परीक्षण से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि केश किसी रासायनिक सेवा के बाद कैसा व्यवहार करेगा। साथ ही इसकी मदद से बहुत सारी अन्य परेशानियों का भी निदान किया जा सकता है। केश परिक्षण के छः अति महत्वपूर्ण घटक हैं :–

1) सिर की त्वचा की स्थिति (Scalp Condition)
2) संरचना (Texture)
3) घनत्व (Density)
4) छिद्रिलता (Porosity)
5) प्रत्यस्थता या लोच (Elasticity)
6) केश की लम्बाई एवं वर्धन प्रारूप (Hair Length and Growth Pattern)

सिर की त्वचा की स्थिति(Scalp Condition) : सिर की त्वचा का किसी भी प्रकार के अपघर्षण, जलन अथवा खुले हुए जख्मों का अच्छे से निरीक्षण करते हुए चौड़े दाँत वाले कंघे से उलझनों को सुलझाएं। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कंघी करते समय सिर की त्वचा या शिरोवल्क को खुरचें नहीं। अगर सिर की त्वचा में कोई समस्या हो तो तब तक पर्म न करें जब तक वह ठीक न हो जाए, क्योंकि इस प्रक्रिया में इस्तेमाल किये जानेवाले रासायनिक विलयन के कारण ग्राहक के सर की त्वचा में जलन अथवा उत्तेजना हो सकती है।

बालों की संरचना(Texture) : केश की संरचना का परीक्षण करने के लिए केश की लट लें और सुनिश्चित करें कि वह रूखे है, अच्छा है या बहुत अच्छा है। यह जानने का सबसे अच्छा तरीका है कि एक सूखी लट को अपनी उँगलियों से छू कर महसूस करें। रूखे बालों पर दूसरे प्रकार के बालों के मुकाबले ज्यादा ध्यान देना **पड़ता** है। आमतौर पर स्थाई तरंग विलयन को रूखे बालों के अंदर घुसने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना **पड़ता** है। अच्छे बाल बालों की आम संरचना है। इन्हें सबसे सामान्य माना जाता है और इन पर काम करने में भी कोई परेशानी नहीं होती है। बहुत अच्छे बाल आसानी से टूट सकते हैं लेकिन इस्तेमाल करने में बहुत आसान होते हैं। एक सामान्य नियम है कि बहुत अच्छे बाल, अच्छे और रूखे बालों के मुकाबले जल्दी और आसानी से प्रतिक्रिया करते हैं ।

बालों का घनत्व (Density) : बालों के घनत्व से हमें पता चलता है कि सिर पर कितने बाल हैं, साथ ही साथ यह **क** बाल मोटे अथवा पतले होने की ओर भी इशारा करता है। एक ही तरह के बालों की संरचना वाले अलग–अलग व्यक्तियों के सिर पर केश का घनत्व अलग–अलग हो सकता है। कई लोग जिनके बालों की संरचना बहुत अच्छी होती है उनके बालों का व्यास काफी कम होता है पर उनका घनत्व अधिक होता है, फलस्वरूप उनके सिर पर प्रति स्क्वेयर ईंच बालों की संख्या बहुत होती है।

बालों की छिद्रिलता(Porosity): बालों की छिद्रिलता उसकी नमी सोखने की क्षमता को कहते हैं। बालों की छिद्रिलता सीधे तौर पर क्यूटिकल की परत के ऊपर निर्भर करता है। बालों की छिद्रिलता को तीन भागों में बाँटा गया है – प्रतिरोधी, सामान्य और छिद्रिल। खाश कर प्रतिरोधी बाल कड़े होते हैं और उनके क्यूटिकल की परत सघन होती है। यह किसी भी चीज के अंदर प्रवेश का विरोध करती है। प्रतिरोधी बालों के लिए किए जाने वाले रासायनिक उपचार में ज्यादा क्षारीय विलयन की जरूरत होती है। अधिक pH क्यूटिकल को बढ़ाता है और एक जैसी संतृप्ति और संसाधन की इजाजत देता है। प्रतिरोधी केशों को रासायनिक विलियन के धीमे और लगातार इस्तेमाल की जरूरत होती है ताकि उसकी पूर्ण संतृप्ति हो सके।

प्रत्यस्थता या लोच(Elasticity): स्थाई तरंग बनाते समय केश का लोच एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्यस्थता या लोच केश के फैलाव या संकुचन की क्षमता को कहा जाता है। हर प्रकार के केश में लोच होता है लेकिन यह बहुत अच्छे से बहुत बुरे के अलग–अलग श्रेणीक्रम में होता है। लोच के बिना केश में कोई घुंघरालापन लाना संभव नही हो सकता है। लोच जितना ज्यादा होगा केशों में तरंग उतने लम्बे समय तक टिकेंगे क्योकि केश का शिथिलीकरण होगा।

केश की लचक क्षमता ही स्थायी तरंग के सफलता की कूँजी है।

- बहुत अच्छे लचक वाले बाल ही लोचदार घूंघर और स्थिर तरंग बनाते हैं।
- अच्छे लचक वाले बाल सामान्य लोचदार घूंघर और तरंग बनाते हैं।
- जिन बालों में सामान्य लोच होता है वह कम लचकदार घूंघर बनाते हैं।
- बहुत ही कम लोच वाले बाल जिन्हें निर्जीव केश (Limp Hair) भी कहा जाता है, वह घूंघर में बहुत ही कम लचीलापन प्रदान करते हैं।

बालों की प्रत्यस्थता या लोच क्षमता को परखने के लिए एक सूखे बाल को दो हाथों की तर्जनी और अंगूठे के मध्य पकड़ लें और उन्हें धीरे–धीरे खीचें। अगर बाल का मध्य भाग खिचाव पैदा करने पर भी नहीं टूटे तो यह दर्शाता है कि बाल में बढ़िया लचक है। बाल में खिचाव पैदा करने के उपरान्त छोड़ने पर अगर बाल पुनः अपने पूर्व स्थिति को प्राप्त कर लेता है तो यह बालों में की बेहतर लोच क्षमता को दर्शाता है। अपर्याप्त या **निम्न** लोच क्षमता वाला बाल खींचने पर मध्य से टूट जाता है।

बालों की लम्बाई और **वृद्ध** प्रतिरूप(पैटर्न)

बालों की लम्बाई भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसे ध्यान में रखना चाहिए। बालों की औसत लम्बाई का आधा वेविंग में कोई खास समस्या उत्पन्न नहीं करता है। हालाँकि अगर ग्राहक अपने बाल छः इंच या उससे लम्बा रखता है तो वेविंग और लपेटन में कई तरह की समस्या हो सकती है। बालों की अत्यधिक लम्बाई के चलते उन्हें एक–दूसरे के करीब लपेटा नहीं जा सकता है जिसके फलस्वरूप सिर की त्वचा के नजदीक एक अच्छा और मजबूत तरंग प्रतिरूप नहीं बन पाता है। इसके अतिरिक्त अत्यधिक बालों का भार भी बालों में तरंग को ज्यादा देर टिकने नहीं देगा। फलतः कोई भी केशविन्यास चुनते समय बालों की लम्बाई के साथ उनकी संरचना, लोच और घनत्व का ध्यान रखना भी जरूरी है।

बाल **वृद्ध** प्रतिरूप का भी परीक्षण किया जाना चाहिए। ज्यादातर उदाहरणों में सिर के शीर्ष भाग का केश चेहरे की तरफ बढ़ने लगता है और शेष केश हल्के गोलाकार आकृति में या तो बगल में एक तरफ या दूसरी तरफ बढ़ने लगता है। केशों को टूटने से बचाने के लिए उन्हें उसके नैसर्गिक बढ़ाव की दिशा में लपेट देना चाहिए। बालों में लिफ्ट प्राप्त करने और कॉलिक (Cowlick) से बचाने के लिए आप को अपने द्वारा किए जा सकने वाले संभावित नुकसान के प्रभाव को संतुलित करना होगा। करीने से भी किया गया लपेटन केश के नैसर्गिक **वृद्ध** प्रतिरूप के खिलाफ ही जाता है। नैसर्गिक केश **वृद्ध** प्रतिरूप पर पर्म का इस्तेमाल कर मनचाहा केश विन्यास प्राप्त करना रासायनिक तरीके के प्रयोग से ज्यादा आसान है।

पर्म छड़ का चुनावः पर्म छड़ घूँघर का आकार प्रकार निर्धारित करते हैं। छड़ों का निर्माण अक्सर हल्के वजनदार प्लास्टिक से होता है। एक आदर्श छड़ का हल्का लचीला होना आवश्यक होता है ताकि प्रयोग करते समय बाल ठीक प्रकार से आकार ग्रहण कर सके। लकड़ी के छड़ भी फैशन में आते जाते रहते हैं लेकिन ये न सिर्फ नुकसानदायक होते हैं बल्कि इसे साफ करना भी कठिन होता है। लकड़ी के छड़ पानी में जल्दी खराब भी हो जाते हैं। छड़ विभिन्न आकार के होते हैं (बड़े छड़ 3/4 ईंच से लेकर छोटे छड़ 1/8 ईंच) लम्बाई तक के होते हैं। छड़ का चुनाव संभावित घूँघर का आकार और

बालों की लम्बाई देख कर तय की जानी चाहिए। अच्छा घूँघर प्राप्त करने के लिए बालों का लम्बा होना जरूरी है ताकि उन्हें छड़ों पर ढ़ाई बार लपेटा जा सके (S आकार में) ।

लचकदार छड़

कुंडलित छड़

चक्करदार छड़

छड़ की लम्बाई का चुनाव ग्राहक के सिर के आकार और उसके हर हिस्से की चैाड़ाई के हिसाब से करें। अगर बाल छोटे हों तो डेढ़ ईंच या उससे छोटे छड़ का इस्तेमाल करें। पौने तीन ईंच का छड़ सर्वश्रेष्ठ होता है यह सिर के हर हिस्से पर फिट बैठता है और सही परिणाम देता है। अगर सिर बहुत बड़ा है तो पूरी लम्बाई के छड़ का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं छड़ो का इस्तेमाल लपेटन विधि में खास प्रभाव जैसे स्पाईरलिंग (Spiraling) के लिए भी किया जाता है।

पर्मिंग के लिए प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के छड़

छड़ों का आकार और उसका प्रतिरूप घूँघर का निर्माण करता है। सीधे छड़ों का व्यास एक समान होता है। इसके मध्य भाग का व्यास भी किनारों के व्यास के बराबर ही होता है। इन छड़ों का प्रयोग पेशेवर लोगों द्वारा नैसर्गिक घूँघर बनाने के लिए किया जाता है। अवतल छड़ (Concave Rods) किनारे पर बड़े और मध्य में छोटे होते हैं। अवतल छड़ों का इस्तेमाल हल्के लम्बे बालों पर किया जा सकता है लेकिन यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि जैसे–जैसे हम बालों को शिरोवल्क की तरफ लपेटते जायेंगे घूँघर का व्यास भी (खासकर मध्य भाग में) बढ़ता जायेगा। घुमावदार छड़ों (Spiral Rods) का प्रयोग लम्बें बालों पर घूँघर बनाने और उन्हें लचीलापन प्रदान करने के लिए किया जाता है। पर्म फंदे (Perm Loops) और पर्म छड़ अलग–अलग वस्तु है। पर्म फंदों का निर्माण नर्म प्लास्टिक से किया जाता है और इन्हें एक दूसरे से जोड़ा भी जा सकता है। लम्बे बालों की पर्मिंग के लिए यह एक वैकल्पिक उपकरण है। यह तरीका लम्बे बालों के लिए पारम्परिक तरीकों से ज्यादा तेज है और इसमें बालों पर अत्यधिक भार भी नहीं दिया जाता जिससे कि बाल टूट सकते हों।

पोस्तीन(End Papers) सोखने वाले कागज होते हैं जो पर्म औजारों द्वारा बालों को लपेटते समय उनके सिरों को संभालते हैं। पोस्तीन की लम्बाई बाल के सिरों से ज्यादा होनी चाहिए ताकि बाल लम्बे और सुलझे रहे और उनमें कांटिया (Fish Hook) ना बनने पाये। पोस्तीन प्रयोग के सामान्य तकनीक हैं – सिंगल फ्लैट रैप (singal flat wrap), डबल फ्लैट रैप (double flat wrap) और बुकएंड सिंगल पेपर रैप (bookend single paper wrap)। सिंगल फ्लैट रैप सीधे छड़ों के साथ ज्यादा असरकारक होता है। इस विधि का इस्तेमाल छोटे बालों में बाल की उस लट पर किया जाता है जिसे लपेटा जा रहा हो। डबल फ्लैट रैप का प्रयोग ऐसे बालों पर किया जाता है जिनमें दो **एंडपेपर** लगे होते हैं, एक लपेटे जाने वाली लट के ऊपर और दूसरा नीचे। यह बाल के सिरों पर पूरी पकड़ देने के साथ ही उन्हें औजार की पूरी लम्बाई में एक समान रूप से फिट कर देता है। बुकएंड सिंगल पेपर रैप में एक आधे मुड़े हुए **एंडपेपर** का प्रयोग किया जाता है जो बालों के सिरों पर लिफाफे की तरह रहता है। बुकएंड सिंगल पेपर रैप अत्यधिक नमी को सोख लेता है और इसका प्रयोग छोटे छड़ों और बहुत छोटे बालों पर किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करें कि बाल औजार की पूरी लम्बाई पर ठीक से फिट हो जाए तथा छड़ के मध्य की तरफ बालों के सिरों का गुच्छा न बनाए।

स्थायी वेविंग कारक(Parmanent Waving Agent):

थिओग्लाईकोलिक अम्ल (Thioglycolic Acid) एक सामान्य स्थाई वेविंग लोशन है। यह एक बदबूदार रंगहीन द्रव है। थियोग्लाईकोलिक अम्ल हाईड्रोजन उत्तसर्जित करता है जिसके फलस्वरूप स्थाई वेविंग विलयन (कारकों) में रूपांतरण प्रक्रिया होती है। कड़े पर्म लोशन में थियो (thio) के साथ हाईड्रोजन की भी मात्रा ज्यादा होती है। हाईड्रोजन अणुओं की मात्रा जितनी ज्यादा होगी, डायसल्फाइड बंधन भी उतनी ही मात्रा में टूटेंगे। थिओग्लाईकोलिक अम्ल ऐसा अम्ल है जो ना बालों को ज्यादा उद्यात बनाता है ना ही कोर्टेक्स के अंदर ही जाता है। यह जरूरी है कि इसमें अमोनियम थियोग्लयकोलेट (Ammonium Thioglycolate / ATG) नामक क्षारीय कारक मिलाया जाय जो खारा होता है। क्षारीय चीजों में ATG एक प्रमुख उत्प्रेरक तत्व या रूपांतरण कारक है।

स्थायी तरंगों के प्रकार

क. अमोनियम थियोग्लयकोलेट ATG आज के समय की सबसे अधिक क्षारीय तरंग है। इसका pH 9.0 से 9.6 के बीच है।

ख. ग्लीसराल मोनो थियोग्लयकोलेट (Glycerol Mono Thioglycolate / GMTG) एक प्रमुख उत्प्रेरक है और यह कम pH वाला अम्ल है जिसके कारण बालों को कम नुकसान पहुँचता है। यह धीरे–धीरे असर करता है जिसके के कारण इसके द्वारा बने घूँघर क्षारीय तरंगों द्वारा निर्मित तरंगों के समान मजबूत नहीं होते हैं। GMTG के कारण केश

प्रसाधक (hair Stylist) और ग्राहक दोनो को **एलर्जी सबंधी** संवेदनशीलता (Allergic Sensitivity) की शिकायत हो सकती है।

ग. एक्सोथर्मिक तरंगों (Exothermic Waves) के कारण एक्सोथर्मिक रासायनिक क्रिया होती है जो मिश्रण को गर्म करके प्रक्रिया को तेज करता है। इसमें थियो होता है जो बहुत तेजी से गर्मी उत्सर्जित कर मिश्रण के तापमान में **वृद्ध** कर प्रक्रिया को तेज कर देता है, और समय की बचत हो जाती है।

घ. इण्डोथर्मिक तरंगों (Endothermic Waves) किसी बाहरी गर्मी के **स्त्रोत**, जो आमतौर पर एक हुड जैसा (hood type hair dryer) होता है से उत्प्रेरित हो जाते हैं। यह कमरे के सामान्य तापमान पर ठीक से काम नहीं करता है।

ड. अमोनिया मुक्त तरंग जो अमोनिया जैसे तुरंत ही वाष्प में परिवर्तित नहीं होते हैं। इन मिश्रणों का गंध अमोनिया जैसा कड़ा नहीं होता है फिर भी ये हानिकारक हो सकते हैं।

अति संसाधित केश : जब कमजोर स्थायी वेविंग मिश्रण का इस्तेमाल किया जाता है तब इस प्रकार के हालात उत्पन्न होते है। अगर बालों को 10 मिनट के बाद पूर्णरूप से संसाधित नहीं किया जाता है तब मिश्रण को फिर से लगाने की जरूरत पड सकती है। हर स्थायी तरंग को संसाधित करने के लिए संतृप्ति बहुत जरूरी है। लेकिन अगर संतृप्ति कड़े मिश्रण के साथ हो तो वह ज्यादा डायसल्फाइड बंधनों को तोड़ कर केश को ज्यादा संसाधित करता है। अगर ज्यादा डायसल्फाइड बंधन टूट जायेंगे तो बालों में इतनी शक्ति नहीं बचेगी की मनचाहे घूँघर को सम्भाल सके। दूसरे शब्दों में अति संसाधित केश बहुत कमजोर और पूरी तरह सीधे होते हैं।

अल्प संसाधित केश : अगर बहुत कम डायसल्फाइड बंधन टूटेंगे तो केश पूरी तरह नर्म नहीं होगा और परिणामस्वरूप मनचाहे **कर्लस** को भी संभाल नहीं पायेगा। अल्प संसाधित केश आमतौर पर शिरोवल्क के पास सीधे और शिरों पर घुँघराले होते हैं।

स्थायी वेविंग **उदासीनीकरण** (Permanent Waving Neturalizar) :

उदासीनीकरण (Neturialization) ऐसी प्रक्रिया है जिसमें स्थायी तरंग विलियन के कार्य को रोक कर केश को उसके नए रूप में ही कड़ा कर दिया जाता है। ऑक्सीकरण इसमें होने वाली रासायनिक क्रिया है। इसका मतलब केश का चमकदार रंग है, केश के रंग के अनचाहे चमक को दूर करने के लिए **उदासीनीकरण** लगाने के कम से कम पाँच मिनट पहले स्थायी विलयन को अच्छी तरह धो लें। केश को तौलिये से अच्छे से पोछ लेना चाहिये ताकि ज्यादा से ज्यादा नमी बाहर निकल जाये। **उदासीनीकरण** ज्यादा हाइड्रोजन अणुओं को हटा देता है जिसके कारण दोबारा डायसल्फाइड बंधनों का निर्माण होता है। इन नये बने डायसल्फाइड बंधन के जोड़ों में इतनी शक्ति होती है कि वह केश को उसके नये रूप में संभाल सके। जब **उदासीन कारक** अपना ऑक्सीजन केश में छोड़ता है तो वह रूपांतरण अथवा संसाधन प्रक्रिया के दौरान जमा हुये हाइड्रोजन के साथ जाकर मिल जाता है। डायसल्फाइड बंधनों का पुनर्निर्माण होता है। निर्धारित समय के बाद **उदासीन** को हटा दें और छड़ पर मौजूद बालों में ठण्ड़ा होने दें।

पर्मिंग के बाद केश की देखभाल

ज्यादातर केश प्रसाधक इस बात की सलाह देते हैं की पर्म कराने के कम से कम 3 दिन बाद ही बालों पर मार्जक (शैंपू) या केश के रंग का इस्तेमाल करना चाहिये।

सुरक्षा के लिये की जाने वाली सावधानियाँ

- अपने ग्राहक के कपड़ों का हमेशा बचाव करना चाहिये। तौलिये को दो तह कर ही लपेटना चाहिये ताकि अगर गलती से मिश्रण छलक जाए तो वह उसे सोख सके ।
- तरंग लोशन या **उदासीन एजेंट** में तब तक पानी या कुछ और नहीं मिलाना चाहिए जब तक निर्माता द्वारा ऐसा निर्देशित न किया गया हो।
- तरंग लोशन को ग्राहक की त्वचा और आँख़ों से दूर रखना चाहिये। अगर दुर्घटनावश ऐसा कुछ हो जाए तो तुरंत ठण्ड़े पानी से धोयें।

मिश्रण तैयार करें और ग्राहक की आँखों से दूर रखें

- निर्माता के निर्देशों का सदैव पालन करें।
- पर्म सेवा से पहले शिरोवल्क का निरीक्षण जरूर करें। अगर त्वचा में कोई घाव या बीमारी के लक्षण नजर आए तो प्रक्रिया तत्काल बंद कर दें।
- स्थायी वेविंग विलयन लगाने से पहले ग्राहक के **हेयर लाइन** (Hairline) और कानों पर रक्षात्मक रोधिका लेप (Protective Barrier Cream) जरूर लगायें।
- **कर्लस** का निरीक्षण करते रहें ताकि वह अति संसाधित न हो जाये।
- प्रक्रिया के दौरान अपने ग्राहक को कभी अकेला न छोड़ें ।
- ऐसे बालों पर पर्म का इस्तेमाल न करें जिसपर पहले से सोडियम हाइड्रोऑक्साइड (Sodium Hyderooxide) का प्रयोग किया गया हो।
- अत्यधिक क्षतिग्रस्त बालों पर भी पर्म का प्रयाग ना करें।

कर्लस का प्रारंभिक परीक्षण :

प्रारंभिक परीक्षण के द्वारा आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि आपके ग्राहक के बालों पर पर्म का क्या असर होगा। अगर बाल क्षतिग्रस्त हों या परिणाम की अनिश्चितता हो तो घूँघर के प्रारंभिक परीक्षण की सलाह दी जाती है। प्रारंभिक **कर्लस** परीक्षण से हमें निम्नलिखित जानकारियाँ प्राप्त होती हैं :–

- **कर्लस** के सही विकास के लिये लगने वाले समय का ज्ञान।
- आपके द्वारा चुने गए पर्म विलियन से मनवांछित परिणामों की अपेक्षा।
- आपके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले औजार के आकार और लपेटने की तकनीक से मिलने वाले **कर्लस** का परिणाम।

Test Curl Placement

कर्लस परीक्षण का स्थापन

ग्राहक के इतिहास और **रिकॉर्ड** कार्ड संधारण:

ग्राहक को सेवा प्रदान करने के पूर्व **रिकॉर्ड** में बालों की पूरी जानकारी यथा बालों की लम्बाई, संरचना, रंग एवं हालत के साथ–साथ सेवा पश्चात संभावित परिणाम का उल्लेख होना चाहिये। इस जानकारी का ग्राहक को दी जानेवाली हर सेवा से पहले पुनर्मूल्यांकन करना चाहिये क्योंकि ग्राहक के इतिहास में बदलाव आ सकता है। अपने **रिकॉर्ड** में पर्म के प्रकार, पर्म औजारों (छड़ों) का आकार, प्रक्रिया के दौरान लगनेवाला समय, आधार (Base) की दिशा, आधार का नियंत्रण, लपेटन विधि, लपेटन प्रारूप और परिणाम की पूरी जानकारी भी रखनी चाहिये। अपने **रिकार्डो** का समय–समय पर मूल्यांकन करें साथ ही किसी भी तरह के बदलाव को संधारित करना न भूलें।

स्थायी तरंग **रिकॉर्ड**

नाम :...मोबाईल नं0:..

पता :...

बालों के प्रकार :

लम्बाई	*संरचना*	*छिद्रिलता*	*हालत*
छोटा	खुरदरा लेकिन सामान्य	अति छिद्रिल	बहुत अच्छा
मध्यम	सामान्य	संतुलित	अच्छा
लम्बा	अच्छे से रंगा हुआ	सामान्य	सूखा / तैलीय

किस से रंगा हुआ :...

पिछली बार किससे पर्म किया गया /सामान्य बाल :..

पर्म लोशन का प्रकार :...

परिणाम					
अच्छा		बुरा	बहुत कसा हुआ		बहुत ढ़ीला
दिनांक	प्रयोग किया गया पर्म	केश प्रसाधक	दिनांक	प्रयोग किया गया पर्म	केश प्रसाधक

ग्राहक के इतिहास की जानकारी :

ग्राहक से उसकी पुरानी संरचना सेवा (Texture Services) के बारे में पूछिये। इस बात का निर्धारण कीजिये कि ग्राहक को क्या पसंद है और क्या नहीं। स्थायी तरंग उपचार आरंभ करने से पहले केश की हालत, बनावट और वेव प्रतिरूप (Wave Pattern) का मूल्यांकन कर लें। वांछित परिणाम, केश की स्थिति से स्थायी तरंग अभिलेख संधारित कर लें।

कर्लस परीक्षण का तरीका :

- सिर के विभिन्न हिस्सों में एक–एक औजार लपेट दें (ऊपर, बगल और घाटिका में)।
- रूई की एक लड़ी हर औजार के ऊपर लपेट दें।
- लपेटे हुए **कर्लस** पर वेविंग लोशन लगायें। ध्यान रखें कि बिना लपेटे हुए बालों पर वेविंग लोशन न लगे।
- टाईमर लगाकर वेव लोशन निर्माता के निर्देशानुसार काम करें।
- **कर्लस** के सही निर्माण के लिए हर परीक्षण **कर्लस** का सतत निरीक्षण करते रहें। औजार को धीमा कर **कर्ल** को औजार के 11/2 हिस्से तक खोल दें। ध्यान रखें कि केश न ढ़ीला होने पाये न ही खुलने पाये। औजार को धीरे–धीरे शिरोवल्क की तरफ ले जायें ताकि केश अपने आप तरंग प्रतिरूप (Wave Pattern) का निर्माण करने लगे।
- **कर्ल** का निर्माण तब पूरा होता है जब एक अच्छे सुगठित एवं वांछित “S” का निर्माण हो जाए जो औजार के आकार का आभास करवाये। अलग–अलग बनावट वाले बालों में अलग–अलग “S” का निर्माण होता है। **कमज़ोर** एवं पतले बालों में निर्मित वेव प्रतिरूप (Wave Pattern) कमजोर एवं खुरदरे और मोटे बालों के लिये यह मजबूत होता है।
- गुनगुने पानी से बालों को कम से कम पाँच मिनट तक धोयें। **न्यूट्रीलाईज़र** का प्रयोग करते हुए धब्बे को अच्छी तरह से साफ करें। उसके बाद **न्यूट्रीलाईज़र** को धो कर बालों को सुखा लें और परिणाम का मूल्यांकन करें। इन परीक्षण **कर्लस** पर दोबारा पर्म का इस्तेमाल न करें।

स्टाईल पर्मिंग(Style Perming) :

यह तकनीक बालों को रासायनिक तरंग (Chemical Waves) की मदद से एक स्थायी बनावट प्रदान करता है। हालांकि, बाद में बालों को ग्राहक के मनोनुरूप पर्म किया जा सकता है। स्टाईल पर्मिंग के समय बालों को उनकी प्राकृतिक बढ़ाव की उल्टी दिशा में बाँधने से वे क्षतिग्रस्त भी हो सकते हैं। सैलूनों में प्रयोग किये जाने वाल विभिन्न पर्मिंग तकनीक हैं –

1. रूट पर्म्स(Root Perms)– यह पर्म केश के शिरों पर बिना **कर्ल** का निर्माण किये बालों को फुला कर उनका आयतन बढ़ाता है। केश के शिरों पर लोशन का प्रयोग नहीं करने के लिए खास (End Wraps) का इस्तेमाल

किया जाता है। इसका असर ज्यादा देर तक नहीं रहता है क्योंकि बाल बढ़ते रहते हैं लेकिन यह मजेदार और स्वच्छन्द केशविन्यास का निर्माण करता है।

2. अंतरण पर्म(Transfer Perms)– अच्छी बनावट वाले बालों का कोर्टेक्स काफी छोटा होता है और उसके बंधन आसानी से टूट जाते हैं। इन बालों को अत्यधिक छोटे छड़ों पर पर्म किया जाता है ताकि कोर्टेक्स में मौजूद बंधन टूट जाए। फिर लोशन को हटाकर छड़ों पर अनुकूलक (Conditioner) लगाया जाता है। दो छड़ों को हटाकर केश के लटों को ठीक से कंघी कर पुनः दो आकार बड़े छड़ों से बाँध दिया जाता है। उदाहरण के लिए पीले छड़ों पर संसाधित किये गए केशों पर दोबारा से नीले छड़ों को बाँध दिया जाता है। दो और छड़ों को खोला जाता है, बालों में कंघी कर दोबारा से बाँध दिया जाता है और यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक कि पूरे केशों को बड़े छड़ों पर नहीं बाँध देते हैं। फिर बड़े छड़ों पर बालों का **न्यूट्रीलाईज़र** किया जाता है। छोटे छड़ों का इस्तेमाल बालों को संसाधित करने में किया जाता है। बड़े छड़ों द्वारा किये गए **न्यूट्रीलाईज़िग** से रूखे बाल और अत्यधिक कसे हुए **कर्ल** हटाने में मदद मिलती है। इस प्रक्रिया में काफी समय लगता है साथ ही इसके लिए अति विकसित तकनीकी कौशल की आवश्यक्ता होती है।
3. आंशिक पर्म(Partial Perms)– ऐसे पर्म जो पूरे सिर के बाल पर असर नहीं डालते हैं को आंशिक पर्म या पार्शियल पर्म कहते हैं। ऐसे पर्मों का प्रयोग किसी खास विन्यास को संभालने अथवा पर्म से अभी–अभी मुक्त हुए बालों को तरोताजा रखने में किया जाता है। बालों के जिस हिस्से पर पर्म का इस्तेमाल करना हो उसको अलग कर लें और बाँकी हिस्से पर क्लिप लगाकर छोड़ दें। अब चुने हुए बनावट में बालों को लपेटें और लपेटे हुए छड़ों को चारो ओर से रूई से घेर दें। इस बात का खास ख्याल रखें कि बिना लपेटे हुए बालों पर लोशन न लगे। आप चाहें तो अधिक सुरक्षा के लिए बिना लपेटे हुए बालों पर अनुकूलक लेप का प्रयोग कर सकते हैं। फिर सदा की तरह इसका **न्यूट्रीलाईज़िग** करें पर ध्यान रहे कि यह बिना लपेटे हुए बालों से दूर रहे।

लम्बे बालों के लिए पर्म तकनीकें :

लम्बे बालों वाले ग्राहकों के लिए विभिन्न तरह की पर्म तकनीकें उपलब्ध हैं। स्टैक पर्म (Stack Perms) का भी वही असर होता जो बालों के शिरों पर **कर्ल** बनाने का होता है लेकिन इनमें **कर्लस** के इस्तेमाल से **कर्ल** की एक निश्चित रेखा बनती है जो शिरोवल्क से आपकी मनचाही दूरी पर स्थित होती है।

प्रक्रिया आरंभ करने से पहले बालों को धो लेना चाहिए

स्टैक पर्म के लिए बालों को इस्तेमाल किये जाने वाले छड़ के अनुरूप दो बराबर हिस्सों में बाँट दें। **हेयर लाइन** से शुरूआत करते हुए एक से दो छड़ों को बालों में लपेटें तथा छड़ों को मनचाहे कोण पर स्थित करें। छड़ों में लपेटना जारी रखें साथ ही छड़ों को चारो तरफ घुमाते भी रहें। सामान्य प्रक्रिया करते हुए छड़ों को ऊपर की ओर सरकाते रहें ताकि

आपको **कर्ल** परीक्षण के लिए जगह मिल सके। जब केश संसाधित हो जाए तो छड़ों पर से लोशन को धो लें। दोबारा छड़ों को ऊपर नीचे करें ताकि आपके हाथ आसानी से बालों तक पहुँच सकें। **न्यूट्रीलाईज़िग** करने के बाद छड़ियों को हटा दें और बालों को धोकर छड़ों को भी निकाल लें।

लम्बे बालों के लिए सबसे पहले एण्ड पर्म (End Perm) तकनीक का ईजाद किया गया था। सिर के ऊपरी भाग से बालों को नीचे गिरा दिया जाता है और अवतल छड़ों की मदद से सिर्फ सिर के नीचे की ओर बाँधा जाता है। इसमें सिर्फ लपेटे हुए बालों को ही **न्यूट्रीलाईज़र** करते हुए संसाधित किया जाता है।

रिवर्स स्टैक(Reverse Stack) को ऊपर में सिर के निकट लपेटा जाता है तत्पश्चात हर भाग के नीचले सिरे पर लपेटा जाता है। हर हिस्से के ऊपर वाले स्थान से लपेटने की शुरूआत करें तथा छड़ों को सिर से दूर होते कोणों पर स्थापित करें।

पिग्गीबैक पर्म्स(Piggyback Perms) उन ग्राहकों के लिए है जो अपने लम्बे बालों में शिरोवल्क तक तरंग चाहते हैं। हर हिस्से में एक से अधिक छड़ों का प्रयोग किया जाता है। छड़ों की संख्या का निर्धारण बालों की लम्बाई के आधार पर किया जाता है क्योकि एक छड़ पर ज्यादा से ज्यादा आठ ईंच बाल ही लपेटे जा सकते हैं। सारे छड़ों का आकार एक समान होना चाहिये या शिरोवल्क पर लम्बे छड़ों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

पिग्गीबैक पर्म्स के विकल्प के तौर पर द्वय छड़ लपेटन(Double Rod Wrap) का इस्तेमाल किया जा सकता है। यह एक आधुनिक तकनीक है जिसमें बाल को अन्त से लपेटा जाता है। जब अन्दाजन 6 ईंच बाल को लपेट लेते हैं तब तब बालों के नीचे एक दूसरा छड़ डाल दिया जाता है। बालों को दोनो छड़ों में तब तक लपेटा जाता है जबतक कि वे शिरोवल्क तक न पहुँच जाये। लोशन लगाते और निकालते समय विशेष ध्यान दें ताकि बाल का कोई हिस्सा छूट ना जाये।

पोनीटेल रैप्स(Ponytail Wraps) लम्बे बालों के लिए अंत–**कर्लस** की एक विविधता है। सिर के ऊपरी हिस्से को खींच कर कई पोनीटेल बना लें और उन्हें रबड़ या क्लिप लगा कर सेट कर दें। बाल के शिरों को लटों के रूप में अलग कर लें और उन्हें छड़ों पर लपेट दें। प्रक्रिया के दौरान यह ध्यान रखें कि चोटी ना तो चेहरे पर झूले ना ही शिरोवल्क पर लगे।

घुमावदार पर्म(Spiral Perms) में एक हाथ से बने छड़ या फिर एक सीधे छड़ का इस्तेमाल होता है, जिसे सिर पर सीधा लपेटा जाता है। बालों को केशरज्जू से शुरू करते हुए बहुत छोटे हिस्से में बाँट दिया जाता है जो छड़ के व्यास के बराबर होते हैं। बालों को शिरोवल्क के पास छोड़ कर छड़ों के चारो ओर घुमावदार तरीके से लपेटा जाता है। छड़ों की दूसरी पंक्ति के ऊपर ईंटों के समान सजाया जाता है। केशों को उसके बाद संसाधित किया जाता है। घुमावदार पर्म से लम्बे बालों को देर तक टिकने वाला **कर्ल** प्रतिरूप प्राप्त होता है।

कस्टम रॉड्स(Custom rods) आपके बालों में खास प्रभाव डालने में मदद करता है। ज्यादातर, कस्टम रॉड्स (सारे नहीं) को इस तरह बनाया जाता है कि वो ज्यादा से ज्यादा 8 ईंच लम्बे बालों पर ही काम करें।

पर्म वेविंग पुनर्स्थापना(Reconstruction of Perm Waving)

खुरदरे बालों को स्थायी तौर पर बड़े वेव प्रतिरूप (large wave pattern) में बदलने की प्रक्रिया को कई नामों से जाना जाता है। रिकंस्ट्रक्सन पर्म (Reconstruction Perm), रिवर्स पर्म (Reverse Perm) और सॉफ्ट कर्ल पर्म (Soft

Curl Perm) इन में से कुछ नाम हैं। ज्यादातर निर्माता इस तकनीक को अपने द्वारा बनाए जानेवाले सामान के नाम से जोड़ देते हैं। 'कर्ल' (Curl) सबसे पहले 70 के दशक में आया था जब काले ग्राहकों के बीच गीला दिखनेवाला **कर्ल** अत्यधिक प्रचलित हुआ था। आज घुँघराले और खुरदरे बाल वाले ग्राहक के लिए रासायनिक पुनर्स्थापना उतना ही जरूरी है जितना की सीधे बाल वाले ग्राहक के लिए स्थायी वेविंग।

स्थायी वेविंग के लिए प्रतिरूपों का हिस्सा(Sectioning Pattern for Permanent Waving) :

(पर्मिंग और पर्मिंग छड़ों के लिए किया गया बालों का हिस्सा)

स्थायी तरंग के लिए बालों के हिस्से बनाने के कई तरीके हैं और कोई भी खास केश का हिस्सा दो अवस्था में एक सा कार्य नहीं करेगा। हिस्सा करते समय बालों के **बाह्यआकार** प्रतिरूप और उसकी लम्बाई को भी ध्यान रखें।

नौ खण्ड विन्यास /प्रतिरूप (Nine Section Pattern) :

इसको सिंगल हेलो रैप (Singal Halo Wrap) के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रतिरूप का विकास पहले से गर्म किये गए स्थाई तरंग के लिए किया गया था। कुछ राज्य समितियाँ इस प्रतिरूप को अपने प्रायौगिक परीक्षण के लिए जरूरी मानती है लेकिन आज के आधुनिक सैलूनों में इस प्रतिरूप का इस्तेमाल यदा–कदा ही देखने को मिलता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि सिंगल हेलो रैप बालों के बढ़वार का अनुसरण नहीं करता है। जिसके परिणामस्वरूप बनने वाले **कर्ल हेयर लाइन** और खासकर बीच वाले हिस्से से अलग हो जाते हैं। इस विन्यास के लिए केश को बीच से अलग करने से शुरूआत करें। फिर **हेयर लाइन** से शुरूआत करते हुए केश के एक हिस्से को स्थाई तरंग छड़ को बराबर में रख कर माप लें, हिस्से की लम्बाई छड़ के बराबर होनी चाहिए। सिर के ऊपरी हिस्से में मौजूद तीसरा हिस्सा (section 3) पाई के आकार का होता है। पीछे के भाग को तीन हिस्सों में बाँटा जाता है और हर लम्बे हिस्से को ठीक बीचो बीच अलग कर दिया जाता है।

पर्म करने का तरीका (Procedure for Perming)

औजार और सामान(Implements and Materials)

रक्षात्मक रोधिका **क्रीम**
तौलिया
एप्लीकेटर बोटल
अनुकूलक (कंडीशनर)
कंघी

टाईमर
पर्म के लिए औजार
शैम्पू कैप
पर्म विलयन
रूई का मुड्डा

खण्ड बनाने के लिए प्लास्टिक के क्लिप

स्टाई कंग रैटटेल कंघी
न्यूट्रीलाईज़र

रोलर पकस	**शैम्पू कैप**	**न्यूट्रीलाईज़िग बिब**
हल्का **शैम्पू**	**डस्पोज़ेबल** दस्ताने	**एंड पेपर**
		स्प्रे के लिए बोतल

पर्म उपचार के लिए ट्राली को औजारों और सामानों को सजा लें

तैयारी :

- अपने हाथ अच्छी तरह घो लें।
- ग्राहक को इसके बारे में सलाह दें और उसका मूल्यांकन करें। ग्राहक के पर्म **रिकॉर्ड** को अच्छी तरह भरें और ग्राहक के इतिहास में किसी भी बदलाव को दर्ज करें।
- ग्राहक के सिर और शिरोवल्क का परीक्षण करें।
- ग्राहक को **गाऊन** (Gown) पहनने को कहें साथ ही उनका चश्मा, कान की बाली और गले का हार निकाल कर सुरक्षित रख दें।
- शैम्पू के इस्तेमाल से पहले ग्राहक को लबादा से अच्छी तरह ढ़क दें।
- शैम्पू कर धोने के पश्चात धीरे–धीरे तौलिये से बाल को सुखाएं। ग्राहक के शिरोवल्क को खुरचने से बचें।

रासायनिक तरंग का तरीका :

- केश को नौ अलग अलग खण्डों में बाँट दें। औजार की मदद से सभी खण्डों की चौड़ाई को माप लें। पर्मिंग लोशन लगा कर लपेटते समय बाल गीला रहे यह ध्यान में रखें।

पर्मिंग के लिए छड़ों का लपेटना

- ➢ सामने की **हेयर लाइन** या सिर के ऊपर के हिस्से से लपेटने की शुरूआत करें। 90 डिग्री के कोण पर बाँकी बचे आठ खण्डों को उनकी संख्यात्मक श्रेणी के आधार पर लपेटें।
- ➢ रक्षात्मक रोधिका **क्रीम** को केशरज्जू और कानों पर लगाएें। पूरे **हेयर लाइन** के हर तरफ रूई का प्रयोग करें और सावधानी के लिए ग्राहक को एक तौलिया दे दें ताकि वह गलती से गिरने वाली बूँदों को पोछ सके।
- ➢ इस प्रक्रिया को सावधनी से दोहरायें और हर औजार पर लपेटे गए बाल में एक बोतल की सहायता से पर्म विलयन लगायें।
- ➢ निर्माता के निर्देशानुसार कार्य करें। कार्य पूरा होने के समय विलयन की सांद्रता, बालों के अलग–अलग प्रकार और उनके अलग–अलग स्थिति के साथ वांछित परिणाम प्राप्त करने का समय भिन्न हो सकता है। कमरे सामान्य तापमान पर कार्य पूरा होने में 20 मिनट से भी कम समय लगता है।
- ➢ जब प्रक्रिया पूरी हो जाए तो बालों को पाँच मिनट तक अच्छी तरह धोयें फिर औजार पर लपेटे बालों को तौलिये की मदद से सुखा लें ताकि उनमें नमी बाकी ना रहे और उन्हें क्षारीय तत्वों से भी किसी तरह की क्षति ना पहुँचे।

पर्मिंग छड़ों को लपेटना

- ➢ हर औजार पर लपेटे गए बालों में सावधानी से **न्यूट्रीलाईज़र**; हाइड्रोजन पेरोक्साइड या ब्रोमेट और **कंडशनर** को मिला कर बनाया गया पतला घोल लगायें। यह घोल लोशन के असर को डायसल्फाइड संरचना का एक नया रूप देकर निष्प्रभावित कर देता है।

न्यूट्रीलाईज़र का इस्तेमाल

- **समयमापी (Timer)** को चला कर औजारों को हटा लें और बचे हुए **न्यूट्रीलाईज़र** को अपने हाथों से धीरे–धीरे बालों पर लगाते हुए इस बात का ध्यान रखें कि बाल ज्यादा खिंचे नहीं।
- बाल को अच्छी तरह धोकर मनचाहा केश–विन्यास बनायें। केश विन्यास के दौरान बालों को ज्यादा गर्मी या खिंचवा से बचाऐं।
- घर पर पर्म की देखभाल के लिए ग्राहक को अच्छे उत्पादों के प्रयोग की सलाह दें।
- कार्यस्थल को ठीक से स्वच्छ करने के उपरान्त ही अगली सेवा की तैयारी करें।

समीक्षा प्रश्न :

1. केश विश्लेषण क्यों जरूरी है ?
2. पर्म करनेवाले के पास अलग–अलग प्रकार के कितने छड़ उपलब्ध होते हैं ?
3. खण्ड बनाने की प्रक्रिया का विवरण लिखें ?
4. पर्म प्रक्रिया के दौरान की जाने वाली सुरक्षा–सावधानियों के बारे में लिखें।
5. **न्यूट्रीलाईज़र** का प्रमुख कार्य क्या है ?

अभ्यास प्रश्न :

सैद्धान्तिक परीक्षण–

1. pH मापक्रम और विभिन्न रासायनिक बन्धनों द्वारा केश का विश्लेषण करते समय आपको क्या जानकारी मिलती है ?
2. सामान्यतः खण्ड बनाने (Sectioning) के दो ज्ञात तरीके कौन से हैं ? स्थायी वेविंग और लपेटन के विभिन्न तरीकों में बिना केश की लम्बाई की चिंता किये हुए छड़ों का चयन किस आधार पर होता है ?
3. रासायनिक तरंग बनाने की विधि के साथ पर्मिंग के बाद बालों के देखभाल और सावधानियों का पूर्ण विवरण दें ?
4. आप परिक्षण **कर्ल** से क्या समझते हैं ? इसे बनाने की विधि के साथ इसकी पूर्ण विवेचना करें।
5. सैलूनों में इस्तेमाल की जानेवाली विधि के साथ शिरोवल्क परीक्षण और स्थायी वेविंग कारकों के अलग–अलग प्रकार के बारे में लिखें। पर्मिंग में अति संसाधित केश से आप क्या समझते हैं ?

प्रायौगिक परीक्षण(Practical) :

1. केश का pH मापक्रम दिखाएं।
2. चित्रों एवं चार्टों के द्वारा केश में मौजूद रासायनिक बंधनों को दिखायें।
3. केश विश्लेषण (Hair Analysis) प्रदर्शित करें।
4. विभिन्न ग्राहकों के लिए अलग–अलग छड़ों पर बालों की अलग–अलग **लम्बाई** को लपेटने की विधि प्रदर्शित करें।
5. **न्यूट्रीलाईज़र** और स्थायी लोशन का उपयोग दिखायें।
6. ग्राहकों के **रिकॉर्ड** को तैयार करने की विधि प्रदर्शित करें।

स्ट्रेटनिंग अथवा रासायनिक केश शिथिलता(Straightening or Chemical Relaxing) :

रासायनिक केश शिथिलता एक प्रक्रिया है जिसमें अत्यधिक घुँघराले बालों की मौलिक बनावट को पुनर्गठित कर सीधा किया जाता है। जहाँ स्थायी वेविंग द्वारा सीधे बालों को घुँघराला किया जाता है वहीं रासायनिक केश शिथिलता की मदद से घुँघराले बालों को सीधा किया जाता है। असल में थियो शिथिलकारक (thio relaxers) और स्थायी वेविंग (permanent waving) का रासायन बिल्कुल एक समान है। सारे शिथिलकारक और स्थायी वेविंग डायसल्फाइड बंधनों को तोड़ कर केश के आकार को बदल देते हैं।

सामान्यतः शिथिलकारक तीन श्रेणियों में उपलब्ध हैं – थियोग्लय्कोलेट (Thioglycolate), अम्ल (Acid) और हाइड्रोऑक्साइड शिथिलकारक (Hydroxide Relaxer)। इनमें से हाइड्रोऑक्साइड का सैलूनों में सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है।

थियोग्ल्य्कोलेट शिथिलकारक(Thioglycolate Relaxer/AGT):

यह शिथिलकारक गाढ़ा लेप या जैल होता है तथा इसके भार से बालों के **कर्ल** को हटाया जाता है। फिर बालों में तब तक कंघी किया जाता है या चिकना बनाया जाता है जबतक मनचाही स्थिति तक **कर्ल** हट नहीं जाता। एक बार जब **कर्ल** हट जाते हैं तब शिथिलकारक लेप को बालों से धोकर सीधे हो चुके बालों का **न्यूट्रीलाईज़र** कर दिया जता है। थियो शिथिलकारक आमतौर पर खुरदरे या अत्यधिक घुँघराले बालों पर असर नहीं करते हैं। शिथिलकारक को शिरोवल्क से हटाते समय खास घ्यान की जरूरत होती है।

अम्ल शिथिलकारक(Acid Relaxer) :

आमतौर पर इनका उत्प्रेरक तत्व बाईस्ल्फाईट (Bisulfite) होता है। यह शिथिलकारक अपने कार्य में काफी सौम्य होता है इसलिए ज्यादातर समय इनका इस्तेमाल हल्के **कर्ल** बनाने में होता है ना कि शिथिलकारक के तौर पर। हमेशा निर्माता के निर्देशानुसार कार्य करें।

हाइड्रोऑक्साइड शिथिलकारक(Hydroxide) :

यह सोडियम हाइड्रोऑक्साइड (Sodium Hydroxide) आधारित होता है जो कि बिल्कुल अलग सिद्धान्त पर कार्य करता है। सामान्यतौर पर इसका इस्तेमाल **कर्ल** हटाने में किया जाता है। यह शिथिलकारक आमतौर पर लेप के रूप में मिलता है जिसकी तीव्रता; सौम्य, सामान्य अथवा अति तीव्र में विभाजित होती है। इस तीव्रता का निर्धारण उत्प्रेरक तत्व करता है जो 5 और 10प्रतिशत के बीच होता है। यह शिथिलकारक क्षारीय होते हैं जिसका pH मापक्रम में माप 10.0 या अधिक होता है।

शिथिलकारक उपचार के विभिन्न पड़ाव

पहले

बाद में

क्षारीय स्वभाव के कारण क्यूटिकल नर्म पड़ जाते हैं ताकि शिथिलकारक बालों की कोर्टेक्स परत के भीतर घुस सके। वहाँ पहुँचने के बाद सोडियम हाइड्रोऑक्साइड (Sodium Hydroxide) डायसल्फाइड या सल्फर बंधनों को तोड़ देता है। जब यह होता है तो लेप के भार के कारण, चिकना बनाने की प्रक्रिया के दबाव के कारण या अत्यधिक घुँघराले केशों में हल्की कंघी के कारण केश सीधा हो जाता है।

पोटाशियम हाइड्रोऑक्साइड(Potassium Hydroxide) : सोडियम शिथिलकारकों में सामान्य तौर पर पाया जानेवाला तत्व है। प्राथमिक उत्प्रेरक तत्व (Primary Active Ingredient) के रूप में इसका इस्तेमाल यदा–कदा ही होता है। यह शिथिलकारक सोडियम के समान ही कार्य करता है। इसे हम 'ले' शिथिलकारक (Ley Relaxers) के रूप में भी जानते हैं।

कैलशियम हाइड्रोऑक्साइड शिथिलकारक(Calcium Hydroxide Relaxers): उसी सिद्धान्त पर कार्य करते हैं जो ऊपर लिखे हैं। कैलशियम हाइड्रोऑक्साइड हल्का एवं सौम्य होता है, यह बालों पर बहुत धीरे कार्य करता है साथ ही केश की क्यूटिकल परत को क्षति पहुँचाकर उनकी स्थिति अत्यन्त खराब कर देता है। सामान्यतः इन्हें गलती से 'नो ले' शिथिलकारक (No Ley Relaxers) कहा जाता है।

समान और औजार(Materials & Tools) :

रिबॉउण्डिंग लोशन	**नेककेप**	**कं डशनर**	रक्षात्मक लेप
न्यूट्रीलाईज़र	चौड़े दाँतों वाला कंघा	प्रयोग के लिए ब्रश	प्लास्टिक के **शीट**
तौलिये	**टाईमर**	रैटटेल कंघी	प्लास्टिक के क्लिपस
स्प्रे वाली बोतल	कटोरा		

ट्राली और शिथिलीकरण सामग्री तैयार करें

शिथिलीकरण सेवा के लिए दो अलग–अलग विधियों का प्रयोग किया जाता है –

1. शुद्ध शिथिलीकारक (Virgin Relaxer)
2. अनुशोधित शिथिलकारक (Retouching Relaxer)

शिथिलकारक प्रयोग विधि :

- ग्राहक को शिथिलीकरण सेवा के लिए तैयार करें – शुद्ध शिथिलकारक के लिए शिथिलीकरण सेवा से पहले लट–परीक्षण (Strand Test) करें। चुने हुए सामान के लिए निर्माता के निर्देशानुसार कार्य करें। निर्देशं में समय–सीमा, सुरक्षा और प्रयोग करने के तरीकों के बारे में निर्देशित किया जाता है।
- लट–परीक्षण जरूरी है, सिर के पीछे के हिस्से के आधे इंच बालों का हिस्सा लें तथा निर्देशानुसार कार्य करें।

शिथिलीकरण उपचार के लिए बिजली चालित ताप यंत्र(Pressing Machine)

- उपचार से पहले के बालों से तुलना कर के देखें की मनचाहे परिणाम प्राप्त हुए हैं या नहीं। बालों की स्थिति का विश्लेषण करें और समस्त सिर में लगााने के लिए जरूरी बदलाव भी। लट–परीक्षण को अच्छे से रक्षात्मक लेप से ढ़ँक दें ताकि पूरी प्रक्रिया के दौरान केश पुनः संसाधित न हो जाए।
- बाल को चार खण्डों में बाँट कर उनके भी छोटे–छोटे हिस्से बना लें। कुछ पेशेवर लोग सामने के हिस्से में चार खण्ड बनाते हैं। पहला खण्ड सिर के ऊपरी हिस्से में एक कान से दूसरे कान तक रहता है। पीछे के हिस्से को दो बराबर भागों में बाँट कर क्लिप लगा दें। इसके बाद सिर के ऊपर के हिस्से से सामने की **हेयर लाइन** तक एक खण्ड बाँट लें। बगल के बचे दो खण्डों में क्लिप लगाायें।
- रक्षात्मक लेप (Proctative Base Cream) को **हेयर लाइन** और कानों पर लगायें। शिथिलकारक को गले के आधार पर एक बटा एक का हिस्सा लेकर सिर के किनारे से दूसरे किनारे में कानों तक खण्ड बनाते हुए लगाायें।
- गले की गुद्दी (Nape) पर बालों के नीचे दो स्ट्रैटेनिंग बोर्ड्स (Strightening Boards) बालों को सीधा करने के लिए लगायें और एक कंघी की मदद से सिर के शिरों तक जाते हुए इस बोर्ड के इस्तेमाल से बालों को सीधा करें।
- यही प्रक्रिया पीछे की ओर भी दुहरायें और फिर आगे की ओर आते हुए कानों के पास पहला खण्ड लेकर उसके नीचे स्ट्रैटेनिंग बोर्ड लगा दें। सिर के दूसरे हिस्से में भी यही करें।
- हर स्ट्रैटेनिंग बोर्ड पर ध्यान रखें कि वह सही से लगा है या नहीं साथ ही इस बात पर भी सजग रहें कि बालों में शिकन न आये।
- 20 मिनट के बाद सारे बोर्ड हटा कर बालों को गुनगुने पानी में अच्छे से धो लें तथा ध्यान रखें कि बालों से लोशन पूरी तरह निकल जाये।
- रीबॉऊंडिंग लोशन (बोर्ड लगाने का तरीका) जैसी प्रक्रिया की मदद से बालों में **न्यूट्रीलाईज़र** लगाएं।
- 20 मिनट तक छोड़ दें या देखें कि सारे बाल नर्म और शिथिल हुए हैं या नहीं।
- बालों को अच्छी तरह धोकर उसे **न्यूट्रीलाईज़र** को पूरी तरह साफ कर लें फिर **कं डशनर** लगा कर तौलिये की मदद से बालों को सुखाएं।
- गर्मी या खिंचाव से बचते हुए केश–विन्यास करें। ग्राहक को घर में बालों की देखभाल के लिए उत्तम सामान प्रयोग की सलाह दें। ग्राहक के **रिकॉर्ड** को पूरा भरें।
- कार्य करने की जगह को साफ कर ही अगले ग्राहक के लिए तैयारी करें।

अनुशोधित उपयोग(Retouching Application) :

ग्राहक के बाल बढ़ने के कारण यह जरूरी है कि शिथिलकारक प्रक्रिया को शिरोवल्क पर दोहराया जाए। पहली शिथिलकारक सेवा के बाद यह आमतौर पर आठ हफ्तों से चार महीने के बीच होता है। यह बालों के नैसर्गिक घुँघरालेपन, बढ़ने की गति और केश–विन्यास पर निर्भर होता है। ज्यादातर बाल एक महीने में एक चौथाई से लेकर आधे ईंच तक बढ़ते हैं। इसकी सीमा रेखा स्पष्ट नही होती है क्योंकि **कर्ल** पूर्ण रूप से कभी भी हटाया नही जा सकता है तथा कुछ **कर्ल** समय के साथ पुनः वापस आ जाते हैं। प्रयोग के लिए विशेषज्ञों की सलाह लें और लगाने के तरीकों से अनुशोधन की पेशकश करें।

अगर शिरोवल्क पर खंरोचं के निशान दिखाई दे तो शिथिलिकरण उपचार न करें।

रासायनिक शिथिलीकरण या रीबॉउंडिंग के लिए सुरक्षात्मक सावधानियाँ :

1. निर्माता के निर्देशों और बताई गई सावधानियों का ध्यान से पालन करें।
2. केश–विश्लेषण करें तथा परिणाम की पुष्टि लट–परीक्षण द्वारा करें।
3. अगर शिरोवल्क पर खरोंच, जलन या किसी भी तरह की लाली दिखाई दे तो शिथिलीकरण सेवा देना तुरंत रोक दें।
4. शिथिलकारक लगाने से पहले बाल या शिरोवल्क में कंघी न करें।
5. अगर ग्राहक का शिरोवल्क अतिसंवेदनशील है या निर्देश में लिखा है तो क्षारक (base) का प्रयोग करें। शिथिलकारक प्रक्रिया के दौरान ग्राहक को किसी भी प्रकार का कैफीन युक्त पेय ना पीने की सलाह दें।

सर्वोत्तम परिणाम के लिए निर्माता के निर्देशों का पालन करें

6. दस्तानों से अपने हाथों की और ग्राहक के कानों और **हेयर लाइन** की रक्षा लेप लगा कर करें।
7. शिथिलकारक को सीधे शिरोवल्क पर डालने से बचें। अगर दुर्घटनावश ऐसा हो जाए तो शिरोवल्क को गीले तौलिये से पोंछ कर उस पर रक्षात्मक लेप लगा दें।
8. निर्माता द्वारा दिये गए समय सीमा पालन के साथ अपने लट–परीक्षणों का भी निरीक्षण करें।
9. बालों से शिथिलकारक को धोकर अच्छे मार्जक (शैम्पू) से धो लें ताकि रासायनों का असर खत्म हो जाए।
10. कभी थियोगल्यकोलेट लगे बालों पर सोडियम हाइड्रोऑक्साइड का प्रयोग न करें। कभी भी सोडियम हाइड्रोऑक्साइड पर थियो शिथिलकारक न लगाएं। ये दोनो रासायन एक दूसरे के अनुकूल नहीं हैं अतः आपस में मिलने से बालों पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया कर सकते हैं।

समीक्षा प्रश्न

1. लट–परीक्षण से आप क्या समझते हैं ?
2. शिथिलकारक के कितने प्रकार होते हैं ?
3. अनछुए या शुद्ध केश से आप क्या समझते हैं ?
4. पुनर्प्रयोग सेवा (Reapplication Service) से आप क्या समझते हैं ?
5. रिबॉउंडिंग की प्रक्रिया लिखें।
6. किन सुरक्षा निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए ?
7. शिथिलीकरण सेवा में **रिकार्डो** को बचा कर रखना क्यों आवश्यक है ?

अभ्यास प्रश्न

सैद्धान्तिक परीक्षण

1. शिथिलकारक उपचार के लिए केश–विश्लेषण के क्या–क्या हिस्से हैं ? सैलूनों में उपचार के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रकार के शिथिलकारकों का नाम लिखें।
2. शिथिलीकरण लट परीक्षण की प्रक्रिया को उसकी सावधानियों के साथ लिखें।
3. अनछुए बालों के शिथिलीकरण की क्या प्रक्रिया है ? यह अनुशोधित उपयोग से किस प्रकार अलग है।
4. केश शिथिलीकरण प्रक्रिया के दौरान ग्राहक और केश प्रसाधक की सुरक्षा के लिए ग्राहक के **रिकॉर्ड** और सुरक्षात्मक सावधानियों की क्या महत्ता है ?

प्रायौगिक परीक्षण

1. विभिन्न प्रकार के केश शिथिलकारक और उनके उपयोग दिखाएं।
2. सामानों और औजारों का उपयोग प्रदर्शित करें।
3. ग्राहक के **रिकॉर्ड** को तैयार करने की विधि प्रदर्शित करें।
4. अनछुए एवं अनुशोधित बालों का डमी (Dummy) पर परीक्षण कर दिखाएं।

ईकाई पांच

<u>बाल रंगना और चमक लाना</u>

बाल रंगना

यह समझना महत्वपूर्ण है कि महिला ग्राहक परामर्शदाता से सूचना प्राप्त कर बाल को रंगने के उद्देश्य के लिए यह सुनिश्चित कर सकती है कि कौन से उत्पाद और बाल रंगने की सेवाएं उसके लिए उपयुक्त है। बाल को रंगने के कुछ सामान्य कारण निम्न है–

1. सफेद बालों को छिपाना या संमिश्रण करना ।

2. बालों के विद्यमान रंग में और चमक लाना।

3. सूर्य की रोशनी अथवा क्लोरीन आदि जैसे पर्यावरण प्रभाव से बालों में अवांछित रंगत को सही करना।

4. फैशन की शक्ल देना।

5. बालों के किसी विशेष सज्जा पर अधिक जोर देना।

रंग के नियम

रंग का नियम रंग के साथ संबंधों को समझने की एक प्रणाली है। समान मात्रा में लाल और नीले रंग को मिलाए जाने पर सदा बैंगनी रंग प्राप्त होता है। समान मात्रा में नीले और पीले रंग को मिलाए जाने पर सदा हरा रंग प्राप्त होता है। समान मात्रा में लाल और पीला मिलाए जाने पर सदा नारंगी रंग प्राप्त होता है। इस प्रणाली को रंग नियम कहा जाता है क्योंकि इन संबंधों का बार बार परीक्षण किया गया है और सत्य साबित हुआ है। व्यक्ति रंग के सिद्धांत को रंग चक्र की सहायता से समझ सकता है।

1. प्राथमिक रंगः–सभी रंगों का मूल तीन प्राथमिक रंग हैं– नीला, लाल और पीला। प्राथमिक रंग मूल रंग हैं जिनमें कुछ विशेषताएं होती हैं। नीला एक प्रबल प्राथमिक रंग है जो एक मात्र शीतल रंग है एवं किसी भी अन्य रंग में मिलाए जाने पर उसे गहरा बनाता है। सूर्य की रोशनी, कठोर रसायनों अथवा आक्सीकरण के कारण यह रंग सबसे पहले समाप्त हो जाता है। लाल रंग मध्यम प्राथमिक रंग है। नीला रंग आधारित रंगों में लाल के मिलाए जाने पर यह हल्का दिखता है। पीले रंग के साथ लाल को मिलाए जाने पर ये रंग और गहरे हो जाते हैं। लाल स्वयं भी एक गरमाहट देता है और अधिक प्रकाश प्रदान करता है। लाल रंग में उत्तेजक प्रभाव होता है। धूंधला पड़ने वाला दूसरा रंग लाल है किंतु यह नीला की अपेक्षा अधिक प्रतिरोधी होता है। पीला रंग तीसरा प्राथमिक रंग है और यह रंग सबसे अधिक निस्तेज होता है। पीला रंग अन्य रंग के साथ मिलकर हल्कापन और चमक लाता

है। आंखों को यह अपेक्षाकृत अधिक बड़ा प्रतीत होता है। पीला रंग सबसे अंत में उड़ता है। पीला रंग काले पृष्ठभूमि में अपेक्षाकृत अधिक चमकीला और रंगीन दिखता है। यदि सभी तीन मूल रंगों को समान मात्रा में मिला दिया जाए तो ये काले रंग में परिवर्तित हो जाएंगे। बालों को प्राकृतिक भूरा रंग नीला, लाल और पीले रंग (1:2:3) का अनुपात है।

2. द्वितीयक रंगः द्वितीयक रंग दो प्राथमिक रंगों को समान मात्रा में मिलाए जाने पर प्राप्त रंग है। द्वितीयक रंग हैं– हरा, नारंगी और बैंगनी।

नीला और पीला–हरा
लाल और पीला– नारंगी
नीला और लाल– बैंगनी

(रंग चक्र)

3. पूरक रंग–पूरक रंग जो एक दूसरे का पूरक होते हैं, वे रंग चक्र में एक दूसरे के ठीक विपरित होते हैं। दूसरे शब्दों में पूरक युग्म में प्राथमिक और द्वितीयक रंग मिले होते हैं। संपूरक युग्म का द्वितीयक रंग अन्य दो प्राथमिक रंगों का मिश्रण होता है। पूरक रंगों में नीला और नारंगी रंग एवं हरा, पीला और बैंगनी रंग शामिल होते हैं। पूरक रंग एक दूसरे को निष्प्रभावित कर देता है और भूरा रंग उत्पन्न करता है।

बालों रंगाई के प्रकार

बेहतर तरीके से बाल रंगने वाला बनने और बालों के रंग क बारे में और अधिक समझने के लिए हमें **उपभोक्ता** के बालों के प्राकृतिक रंग की पहचान करने की आवश्यकता है। बालों के प्राकृतिक रंगों में काला, गहरा भूरा, लाल, गहरा सुनहला भूरा और हल्का सुनहला भूरा शामिल है। प्रत्येक व्यक्ति के बालों का रंग एक ही जैसा नहीं होता है। बालों को रंगने वाले को स्तर प्रणाली को समझना चाहिए। स्तर प्रणाली माप की एक ईकाई होती है जिसका इस्तेमाल रंग के हल्केपन या गहराई की पहचान करने के लिए किया जाता है। कभी कभी इसका इस्तेमाल मान अथवा गहराई के लिए किया जाता है। बालों के रंगों के स्तर को एक से दस के पैमाने पर व्यवस्थित किया जाता है जिसमें एक पर अवस्थित रंग सबसे गहरा रंग

और दस पर अवस्थित रंग सबसे हल्का रंग होता है। प्राकृतिक रंग बाल स्तर के संदर्भ में निर्माताओं में अंतर हो सकता है। प्रत्येक स्तर पर हल्केपन और गहराई के स्तर को समझना आवश्यक होता है। रंग की गर्माहट या शीतलता को बताने के लिए रंगत और प्रबलता का इस्तेमाल किया जाता है। गर्माहट वाली रंगत (लाल, नारंगी और पीला) कपिश, तांबा, सोना, पीतल अथवा शहद के समान होती है। शीतल रंगत (नीला, हरा और बैंगनी) राख, फीका, धूंधला या प्लेटिनम के समान होती है। प्रबलता का तात्पर्य रंगों की रंगत तीव्रता से है। इसे हल्का, मध्यम अथवा कठोर के रूप उल्लेख किया जाता है। लाल रंगों की प्रबलता में स्ट्राबेरी सुनहला भूरा, तांबे जैसा भूरा, चमकीला नारंगी होता है। बालों के रंग के बारे में जानने के लिए बालों के रंग को हल्का बनाने की प्रक्रिया के बारे में चर्चा करने की आवश्यकता है क्योंकि इसे विरंजित करना या रंग विहीन करना कहा जाता है जिसमें एक रासायनिक प्रक्रिया होती है जो बालों से प्राकृतिक रंग को फैलाता है।

बालों के लिए बाजार मे उपलब्ध विभिन्न प्रकार के रंग

यह प्रक्रिया स्थायी बाल रंग और बालों के रंग को हल्का करने वाले तत्वों दोनों के लिए मुख्य है। उपर्युक्त अध्ययन के अनुसार बालों के रंग को तीन भागों में बांटा गया हैः–

- अस्थायी
- अल्प स्थायी
- स्थायी

अस्थायी रंग

अस्थायी रंग को बालों को शेम्पू द्वारा धोए जाने तक बालों को रंगने के लिए तैयार किया गया है। इसका बालों के प्राकृतिक रंग पर अधिक समय तक प्रभाव नहीं रहता है। अस्थायी रंग को हल्का नहीं किया जा सकता है; ये केवल बालों के रंग में और अधिक गहरापन ला सकते हैं और साथ में मिश्रित रंग ला सकते हैं। स्थायी बाल रंग विभिन्न रंगों और कई रूपों में उपलब्ध है।

अस्थायी बाल रंगाई के लिए प्रयुक्त रंगीन खड़िया

अस्थायी रंग के प्रकार

1. बाल रंगने वाले रंगों को प्रमाणित रंगों (इस्तेमाल हेतु खाद्य और औषध प्रशासन द्वारा अनुमोदित रंग), जल और सामान्यतः एक मृदु एजेंट को मिलाकर तैयार किया जाता है। ये रंग बाल को रंगते हैं और शेम्पू किए जाने तक बने रहते हैं। रंगीन रिंज क्रीम और जैल के रूप में भी उपलब्ध है।

2.कलर शेम्पू में कलर टोन को मिलाने अथवा अवांछित रंगों को निष्प्रभावी बनाने के लिए कलर पिगमेंट के साथ शेम्पू मिला होता है। उदाहरण के लिए सफेद या भूरे बालों में अवांछित पीले वालों को निष्प्रभावी बनाने के लिए अधिकांश बैंगनी होते हैं।

3.सामान्यतया चमकीले, पार्टी कलर स्प्रे का इस्तेमाल बाल सुखाने के लिए किया जाता है।

4. रंगीन खड़िया और मस्कारा का इस्तेमाल मेकअप के लिए किया जाता है। बालों की रंगाई हेतु अस्थायी रंगीन खड़िया का इस्तेमाल थियेटर में भी किया जाता है।

बालों हेतु प्राकृतिक और वनस्पति रंग

बालों हेतु प्राकृतिक या वनस्पति रंग यथा मेंहदी प्राकृतिक रंग है जिन्हें पेड़ की पत्तियों या छालो से प्राप्त किया जाता है। इस प्रक्रिया से प्राप्त प्राकृतिक बालों के रंग में चमक नहीं होती है, परिमाणस्वरूप यह रंग कमजोर होता है और यह प्रक्रिया जटिल और अव्यवस्थित होती है। साथ हीं रंग श्रृंखलाएं सीमित होती हैं; उदाहरण के लिए साधारणतया मेंहदी केवल काले, भूरा और कपिश रंग में ही उपलब्ध है। अंत में, जब प्राकृतिक बाल रंग का इस्तेमाल करने वाली रासायनिक बाल कलर सेवा के लिए सैलून आती है तो यह पाकर निराश होती है कि इन कई रासायनिक उत्पादों में से कई उत्पादों को प्राकृतिक बालों के रंगों पर नहीं लगाया जा सकता है।

मेंहदी बालों की रंगाई के लिए एक अस्थायी वनस्पति रंग है।

अस्थायी रंग का उपयोग

1. अवांछित रंग के प्रभाव को कम करना
2. भिन्न रंग लगाना
3. भूरा रंग मिलाना
5. विशेष अस्थायी प्रभाव सृजित करना

अस्थायी रंग स्प्रे और शेम्पू में उपलब्ध हैं।

अस्थायी रंग के लाभ

1. बालों के किसी अवांछित रंग को अप्रभावी बनाना।
2. बेजान बालों में जान और चमक डालना।
3. व्यक्ति द्वारा और अधिक स्थायी समाधान हेतु व्यवस्था किए जाने तक फीके रंग को सही करना।
4. अस्थायी बालों की रंगाई का प्रमुख लाभ यह है कि इससे न तो बालों के ढ़ांचे में परिवर्तन आता है और न हीं इससे व्यक्ति के स्वयं के प्राकृतिक रंग पर प्रभाव पड़ता है।
5. अधिकांश मामलों में अस्थायी रंग में पट्टी परीक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।
6. अस्थायी रंग लगाना आसान और त्वरित होता हैं।
7. अस्थायी रंग को बालों से शेम्पू लगाकर हटाया जा सकता है।

अस्थायी रंग की कमियां

1.इसे हर बार शैम्पू करने के बाद लगाना होता है।
2. इसके इस्तेमाल से बालों में रंग असमान ढ़ंग से हो सकता है विशेषकर यदि रिंज का इस्तेमाल न किया जाए। इस प्रकार का रंग नमी और पसीने से अपने आप फैलने लगता है, तकिए और कपड़े में लग जाएगा और ब्रश या कंघी करने पर यह पपड़ी बन कर उड़ जाएगा।
3. यदि बालों में क्षति हो जाए तो अस्थायी रंग बालों की उपत्वचा परत में घुस जाएगा और बालों में शेम्पू किए जाने के बाद असमान रंग दिखने लगेगा।
4. अस्थायी रिंज केवल रंग को जमा कर सकता है, ये रंगों को उठा या हल्का नहीं कर सकते हैं।
5. अस्थायी बालों के रंग फीका होता है और इसमें चमक की कमी होती है।

अल्प स्थायी रंग

अल्प स्थायी रंग अस्थायी रंग से थोड़े अधिक दिनों तक टिका रहता है, फिर भी बालों में प्राकृतिक रंग को प्रभावित किए बिना धीरे–धीरे फीका पड़ने लगता है। अल्प स्थायी रंगों को छह से आठ हफ्ते तक बने रहने के लिए तैयार किया जाता है। इसमें रंग के अणु इतने छोटे होते हैं कि वे बालों में आसानी से घुस जाए और उपत्वचा परत में लग जाए तथा वे इतने छोटे होते हैं कि बालों में शेम्पू के दौरान फैल जाते हैं और प्रत्येक बार शेम्पू लगाने के बाद बाल फीका पड़ जाता है। इसे अमोनिया के बिना तैयार किया जाता है किंतु इसे लगाने से पूर्व पट्टी परीक्षण की आवश्यकता होती है।

बालों में रंग लगाने के पश्चात बालों को बांधना

स्थायी रंग

स्थायी हेयर कलर उत्पाद में विकासक अथवा ऑक्सीकारक एजेंट और एक क्षारीय तत्व होता है। स्थायी हेयर कलर को विकासक(हाईड्रोजन पैरोक्साइड जिसका पीएच 2.5 और 4.5 के बीच हो) के साथ मिलाया जाता है, हाइड्रोजन पैरोक्साइड की क्षमता का आकलन आयतन के रूप में किया जा सकता है। आयतन के कम रहने से कम उठाव प्राप्त किया जा सकता है, अधिक आयतन होने से उठाव क्रिया अधिक होती है। अधिकांश स्थायी हेयर कलर उत्पाद में उचित कलर लाने के लिए दस, बीस, तीस अथवा चालीस आयतन वाले हाइड्रोजन पेरोक्साइड का इस्तेमाल किया जाता है जो बालों में नव वृद्धि तक बालों में बना रहता है। इसका इस्तेमाल बालों के रंग को समान बनाने, हल्का करने और सफेद बालों को ढ़कने के लिए किया जाता है। इस तरीके में टींट फार्मूला प्रयुक्त होता है जो पूर्व में किए गए रंग को हटाता है, जो बहुत हीं छोटा यौगिक होता है जिसे बाल पुंज में फैल सकता है। पूर्व में लगाए गए इन रंगों को एनीलाइन डेरिवेटिव भी कहा जाता है जिन्हें व्यापक, स्थायी टींट अणु बनाने के लिए हाइड्रोजन पेराक्साइड के साथ मिलाया जाता है। बाहरी आवरण में इन अणुओं को बंद रखा जाता है और इन्हें शेम्पू से धोकर नहीं निकाला जा सकता है। इसलिए इन उत्पादों को स्थायी उत्पाद कहा जाता है। बाद में सफेद और रंगीन बालों को कृत्रिम रंग देते हुए रंग को हल्का करने की क्रिया के माध्यम से बालों से प्राकृतिक रंग को हटाया जाता है और इसके परिणामस्वरूप बालों का रंग प्राकृतिक दिखने लगता है।

सावधानीः एनीलाइन डेरिवेटिव टींटो का इस्तेमाल कभी भौंहों अथवा आंखों की बरौनी पर नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इससे अंधापन हो सकता है।

धातु जैसा बाल का रंग (मिनरल)

धातु जैसा बालों का रंग जिसे ग्रेजुअल कलर भी कहा जाता है, में धातु लवण होता है और धीरे –धीरे प्रगतिशील वृद्धि एवं हवा में खुला रखने से बालों के रंग में बदलाव आता है जो हल्का, धात्विक आभास देता है। इन उत्पादों को प्रतिदिन लगाने की आवश्यकता होती है और इन उत्पादों की बिक्री पुरूषों के लिए किया जाता रहा है। इस प्रकार के हेयर कलर के साथ मुख्य समस्या यह है कि इसके रंग अप्राकृतिक हो सकते हैं।

धात्विक हेयर कलर में धात्विक और वनस्पति टींटस का मिश्रण होता है।

सीमित रंग श्रृंखला भी इसकी एक कमी है। यौगिक रंग धात्विक और वनस्पति टींटों का मिश्रण होता है। इनका इस्तेमाल भी पेशेवर तरीके से नहीं किया जाता है। धात्विक रंग के लिए परीक्षणः रंगे बाल की एक लट काटें। इसे 20 आयतन वाले हाइड्रोजन पेरोक्साइड के एक औंस घोल में डालें और इसमें 30 मिनट के लिए 28 प्रतिशत अमोनिया की 20 बूंदे मिलाएं। अब उस लट को घोल से निकालें और सूखने दें। निम्नलिखित अभिक्रिया देखेंः

1. शीशाः घोल में इस लट को डालते हीं इसका रंग हल्का हो जाएगा। सूखी लट को खींचने पर यह नहीं टूटेगा।
2. चांदीः इस लट के रंग में कोई परिवर्तन नहीं आएगा क्योंकि यह घोल उस परत के अंदर नहीं जा सकता है । इसे खींचे जाने पर यह नहीं टूटेगा।
3. ताबांः कुछ हीं मिनटों में लट और घोल बहुत गर्म हो जाएगा और आप एक भिन्न रंग पाएंगे। लट को खींचे जाने पर यह टूट जाएगा।

लट परीक्षण

वास्तविक रंग और बालों की दशा निर्धारित करने के लिए किसी पूर्ण रंग अनुप्रयोग के पूर्व लट संबंधी एक परीक्षण किया जाता है।

लट परीक्षण की प्रक्रिया

❖ उपभोक्ता को उसकी त्वचा और कपड़े की रक्षा करने के लिए अन्य कपड़े से ढ़के।
❖ सिर के निचले हिस्से में लटकते बालों की आधा इंच लट का टुकड़ा लें।
❖ इस लट को फ्वाइल या प्लास्टिक में लपेटें और इस मिश्रण को लगाएं। आपके द्वारा प्रयोग की जाने वाली रंग प्रक्रिया के लिए अनुप्रयोग तरीके को अपनाएं।
❖ अपेक्षित रंग प्राप्त होने तक हर पांच मिनट के अंतराल पर होने वाले बदलाव की जांच करें।
❖ समय को नोट करें। जब संतोषजनक रंग आ जाए तो रक्षा के लिए लगाए गए फ्वाइल को हटा दें ओर इसे पानी और शेम्पू से अच्छी तरह से धोएं। इस लट को तौलिए से अच्छी तरह से सुखाएं और परिणाम का अवलोकन करें।
❖ परिणाम के संतोषजनक रहने पर इस रंग अनुप्रयोग का इस्तेमाल करें।

लट परीक्षण के लिए सुरक्षा फ्वाइल का इस्तेमाल

पट्टी परीक्षण

हेयर कलरिंग उपचार में परामर्श की आवश्यकता होती है जो ग्राहक के साथ संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया में पहला कदम है। इस प्रकार के परामर्श से उपभोक्ता को यह बताएगी कि उसे किस प्रकार के कलर सर्विस की आवश्यकता है। इससे ग्राहक की संतुष्टि को सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी। बालों को रंगने वाले को यह निर्धारित करना होगा कि क्या वह किसी रसायन के प्रति एलर्जिक है या किसी मिश्रण के प्रति संवेदनशील है। पट्टी परीक्षण को पूर्व प्रवृत्ति परीक्षण भी कहा जाता है, जिसके लिए एनीलाइन टींट या टोनर के अनुप्रयोग के पूर्व 24 से 48 घंटे का समय दिया जाता है। इस पट्टी परीक्षण के लिए प्रयुक्त टींट उस टींट के जैसा ही होना चाहिए जिसे बाल रंगाई सेवा के लिए किया जाएगा।

पट्टी परीक्षण की प्रक्रिया

❖ कान के पीछे अथवा कोहनी के भीतर किसी स्थान को परीक्षण स्थान के रूप में चुने।
❖ उक्त स्थान को मृदु साबुन से धोएं और लगभग एक चौथाई हिस्से को सुखा लें।
❖ इस उत्पाद की थोड़ी सी मात्रा को मिलाएं और कीटाणु रहित रूई के फाहे से परीक्षण स्थान पर लगा दें।

❖ इस परीक्षण स्थान को छेड़े बिना 24 घंटे रहने दें।

पट्टी परीक्षण बाल रंगाई उपचार के परिणाम को निर्धारित करता है।

❖ उस परीक्षण स्थान की जांच करें। यदि उक्त स्थान पर कोई लाल धब्बा नहीं है या जलन नहीं होती है तो आप इस रंग उपचार का इस्तेमाल कर सकते हैं। एक निगेटिव त्वचा परीक्षण से जलन का कोई निशान नहीं दिखेगा। पॉजिटिव परिणाम आने पर लाल धब्बा और जलन के साथ चक्ता दिखेगा। इन लक्षणों के होने पर ग्राहक को किसी प्रकार का रंग संबंधी उपचार नहीं कराना चाहिए।

बालों की रंगाई की प्रक्रिया

विशुद्ध बाल के लिए एकल रंग प्रक्रिया (दो क्रियाकलाप करें: एकल अनुप्रयोग में बाल को हल्का करें और रंगें)
विशुद्ध बालों के लिए दोहरी रंग प्रक्रिया (एक समय में केवल एक क्रियाकलाप करें। पूर्ण रंग बदलाव के लिए अथवा जब टोनर अपेक्षित हो तो बाल के लिए दो पृथक और भिन्न अनुप्रयोग की आवश्यकता होती है।)

क) प्रथम– लाइटनर (ब्लीच) का अनुप्रयोग
ख)दूसरा– टींट या रंग का अनुप्रयोग

सामग्री और उपकरण

एप्लीकेटर बोतल अथवा ब्रश	रिकार्ड	टींट केप	कंडीशनर
कॉटन	कंघी	तौलिया	प्लास्टिक क्लिप
चुना गया रंग	संरक्षक क्रीम	रंग	सुरक्षा दस्ताना
प्लास्टिक टोपी	शैम्पू	कंडीशनर	

सभी सामग्रियों को ट्रॉली में व्यवस्थित करें

हेयर कलर का अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- चार भागों में बालों को एक एक भाग कर बालों को सुखाएं।
- बोतल या ब्रश एप्लीकेशन के लिए कलर फार्मूला तैयार करें।
- उस भाग से शुरू करें जहां रंग में बदलाव सबसे अधिक होगा अथवा जहां बाल सबसे अधिक प्रतिरोधी है, सामान्यतः हेयर लाइन या मस्तक वाले भाग में। एप्लीकेटर सहित एक चौथाई (0.6 सेमी) भाग।
- इस उपभाग को उठाएं और बालों के मध्य भाग में रंग लगाएं। सिर की खाल से कम से कम आधा इंच (1.25 सेमी) छोड़कर और छिद्रिल भाग में न जाएं।
- लट परीक्षण परिणााम के अनुसार प्रक्रिया दोहराएं। लट परीक्षण प्रक्रिया में किए गए उल्लेख के अनुसार रंग हटाकर रंग में हुए बदलाव की जांच करें।
- सिर की खाल तक बालों में रंग लगाएं।
- बाल के अंतिम सिरे तक रंग को ले जाएं।
- इसे गुनगुने पानी के साथ हल्का सा धोएं। चमड़ी पर रंग को लगाएं और अच्छी तरह से धोएं।
- शैम्पू अथवा दाग छुड़ाने वाले रिमूवर से हेयरलाइन के आसपास के दाग को छुड़ाएं। दाग को छुड़ाने के लिए तौलिए का हल्का प्रयोग करें।
- बालों में शैम्पू करें और आवश्यकता पड़ने पर कंडिशनर का प्रयोग करें।
- बालों को तौलिए से सुखाएं और बाल संवारें।
- अल्प स्थायी हेयर कलर अनुप्रयोग की प्रक्रिया में दिए गए अनुसार साफ सफाई करें।
- ग्राहक के रिकार्ड कार्ड को भरें और इसे अलग रख दें।
- साफ सफाई प्रक्रिया का अनुसरण करें।

टींट अनुशोधन

प्रतिमाह बालों में लगभग आधे इंच की वृद्धि होती है। बालों में प्राय अनुशोधन की आवश्यकता पड़ेगी। जब बालों को जड़ से नए सिरे से अधिक बढ़ने नहीं दिया गया हो तो कलर का परिणाम सदा सबसे अच्छा होता है। उक्त बाल रंग के उत्पादक के अनुदेशों की जांच करें और प्राकृतिक बालों में टींट लगाने के लिए इसी प्रक्रिया का अनुसरण करें।

रंग का अनुशोधन

बालों की रंगाई के लिए विशेषज्ञ तकनीक

बालों की रंगाई के लिए अनुप्रयोग तकनीक सीमित हैं। अधिकांश विशेषज्ञ तकनीक में समग्र सिर की अपेक्षा बाल की चुनी हुई लट में ही रंग करना होता है। इन तकनीकों को कस्टम कलर प्रभाव के लिए रंगे गए बालों पर आजमाया जा सकता है। उन ग्राहकों के लिए आंशिक कलर तकनीकों की सलाह दी जाती है जो अत्यधिक सक्रिय है और जो बाल रंगाई के विशेष प्रभाव अथवा अनुभवहीनता के लिए होता है। स्थायी टींटों के साथ विशेष तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

बालों की रंगाई का रिकार्ड रखना

बालों की रंगाई उपचार में कठिनाईयों से बचने के लिए प्रत्येक बालों की रंगाई उपचार का विशुद्ध रिकार्ड रखना महत्वपूर्ण होता है। ''जल्द सूख जाता है'', रंग त्वरित गति से फैलता नहीं है आदि जैसी सूचनाओं के साथ पूर्ण रिकार्ड रखा जाना चाहिए।

ग्राहक के बालों की रंगाई संबंधी रिकार्ड

नाम...दूरभाष संख्या..

पता...शहर...

पट्‌टी परीक्षणः निगेटिव ☐ पॉजिटिव ☐ दिनांक..

बालों के प्रकार

रूप	लंबाई	चमक	छिद्रिलता	
सीधा	छोटा	रूखा	अत्यधिक छिद्रिल	रेसिडेंसियल
लहराने वाला	मध्यम	मध्यम	छिद्रिल	अधिक रेसिडेंसियल
घुंघराला	लंबा	अच्छा	सामान्य	वेव्ड

बालों की स्थितिः

सामान्य ☐ सूखा ☐ तैलीय ☐

बालों की रंगाई प्रक्रिया

संपूर्ण सिर.. अनुशोधन.. अपेक्षित रंग...

परिणाम

अच्छा ☐ बेकार ☐ अत्यधिक हल्का ☐ अत्यधिक काला☐

पूर्वोपाय और परहेज निर्देश

उन रसायनों, जो बालों के अंदर जाता है, का उपयोग करते समय यह सलाह दी जाती है कि ग्राहक के घायल होने के जोखिम को कम करने के लिए सुरक्षा नियमों का पालन किया जाए। पेशेवर सैलून के लिए निम्नांकित सुरक्षा पूर्वोपायों और परहेज संबंधी निर्देशों की सिफारिश की जाती है–

- हवा के संपर्क में आने पर ऑक्सीकरण से बचाने के लिए रंग संबंधी सभी सामग्रियों को बोलतों में अच्छी तरह से बंद कर रखा जाना चाहिए।
- बाल रंगाई उत्पादों को ठंडे और सूर्य के प्रभाव वाले क्षेत्र से दूर रखा जाना चाहिए ताकि रंग पहले ही सक्रिय न हो जाए।
- प्रत्येक रंग बोतल पर चिपकी समाप्ति तिथि के प्रति सावधान रहें।
- ओसो (पेशागत और सुरक्षा खतरा कार्य) का अनुपालन करें जिसमें अपेक्षा की जाती है कि किसी भी कार्य के लिए रसायनों को स्पष्ट मार्कर के साथ रखा जाए जिसमें इसके संघटकों और मानव शरीर पर इनके प्रभावों का स्पष्ट उल्लेख हो।
- एनीलाइन डेरिवेटिव के किसी अनुप्रयोग के पूर्व 24 घंटे के लिए पट्‌टी परीक्षण करें। पट्‌टी परीक्षण नेगेटिव आने पर ही टींट का प्रयोग करें।
- यदि एब्रेशन हो तो इस टींट का प्रयोग न करें।
- यदि धात्विक या यौगिक टींट उपस्थित हो तो इस टींट का प्रयोग न करें।
- रंग लगाने से पूर्व बाल पर ब्रश न चलाएं।
- सदा उत्पादकों के सभी निर्देशों को पढ़ें और अनुपालन करें।
- साफ सुथरे एप्लीकेटर बोतलों, ब्रशों, कंघों और तौलिये का प्रयोग करें।
- अपने ग्राहक के कपड़े को पूरी तरह से ढ़क कर रक्षा करें।

- रंग, ब्रेकेज और /अथवा रंगहीनता के लिए पट्टी परीक्षण करें।
- टींट के मिश्रण के लिए एप्लीकेटर बोतल अथवा कटोरी (शीशे या प्लास्टिक) का इस्तेमाल करें।
- इसे इस्तेमाल करने के लिए तैयार होने से पूर्व टींट को न मिलाएं; बचे हुए टींट को हटा दें।
- अपने हाथ की रक्षा करने के लिए दस्ताने पहनें।
- ध्यान रखें कि रंग ग्राहक की आंखों में न चला जाए।
- ध्यान रखें कि रंग ग्राहक की आंखों में न चला जाए।
- टींट अनुशोधन के दौरान अतिव्याप्त न करें।
- मृदु शेम्पू का प्रयोग करें। क्षारीय या कठोर शेम्पू से रंग धुल जाएगा।
- ग्राहक को सेवा देने से पूर्व अथवा बाद में हाथों को सदा धोएं।

प्रश्न समीक्षा

1. प्रारंभिक रंग क्या है?
2. द्वितीय या तृतीय रंगों के बीच क्या अंतर है?
3. मिनींग मेलानिन क्या होता है?
4. **पेंच** परीक्षण महत्वपूर्ण क्यों होता है?
5. लट परीक्षण क्या होता है?
6. एकल टींट प्रक्रिया की व्याख्या करें।
7. पूर्वोपायों और परहेज निर्देशों की सूची ।
8. बाल रंगाई का उद्देश्य क्या है?
9. किसी सैलून में ओशा की क्या भूमिका होती है?
10. ग्राहक के रिकार्ड कार्ड में आपको कौन सी महत्वपूर्ण बातों को शामिल करना चाहिए?
11. बाल रंगने के लिए कोई ग्राहक कैसे तैयारी करता है?

अभ्यास प्रश्न

सैद्धांतिक

1. रंग नियम से आप क्या समझते हैं? रंग चक्र में रंग के प्रकारों की व्याख्या करें।
2. बाल रंगने के विभिन्न तरीके कौन से हैं? प्रक्रिया सहित इसकी व्याख्या करें।
3. रंग और इसकी प्रबलता को परिभाषित करें। बाल के रंगों का वर्गीकरण क्या है?
4. पूर्वोपायों सहित उपचार के लिए अपेक्षित औजारों और सामग्रियों के विभिन्न प्रकारों और हेयर कलर करने की प्रक्रिया का ब्यौरा लिखें।
5. अनुशोधन और पट्टी परीक्षण से आप क्या समझते हैं? ग्राहक के रिकार्ड को रखना बाल रंगाई के लिए कितना महत्वपूर्ण है?

व्यवहारिक

1. बाल रंगाई उपचार के लिए प्रयुक्त विभिन्न रंगों को प्रदर्शित करें।
2. बाल रंगाई में प्रयुक्त विभिन्न बाल रंगों को प्रदर्शित करें।
3. स्थायी बाल रंगाई लट परीक्षण की प्रक्रिया का प्रदर्शन करें।
4. बाल रंगाई के लिए पट्टी परीक्षण का प्रदर्शन करें।
5. अनुशोधन तकनीक को प्रदर्शित करें।

ब्लीच करना और चमक लाना

ब्लीचिंग की परिभाषा

बाल में चमक लाने की प्रक्रिया एक विशेष कला है। चमक लाने का कौशल प्रभावशाली हो सकता है, आप जैसे पेशेवर सौंदर्य विशेषज्ञ इसका निर्णय करेंगे। रोम के लोग बालों में चमक लाने के लिए पुरानी शराब और पानी के साथ विभिन्न प्रकार की स्थानीय चीजों को मिलाकर प्रयोग करते थे। वे लाल जैसा सुनहला रंग पाने के लिए मिश्रण को रात भर छोड़ देते थे। फ्रांस के नार्ड लुईस द्वारा वर्ष 1818 में खोजे गए हाईड्रोजन पेरोक्साइड की खोज ने चमक की प्रक्रिया में तेजी ला दिया और कुछ हद तक कम अव्यवस्थित बना दिया।

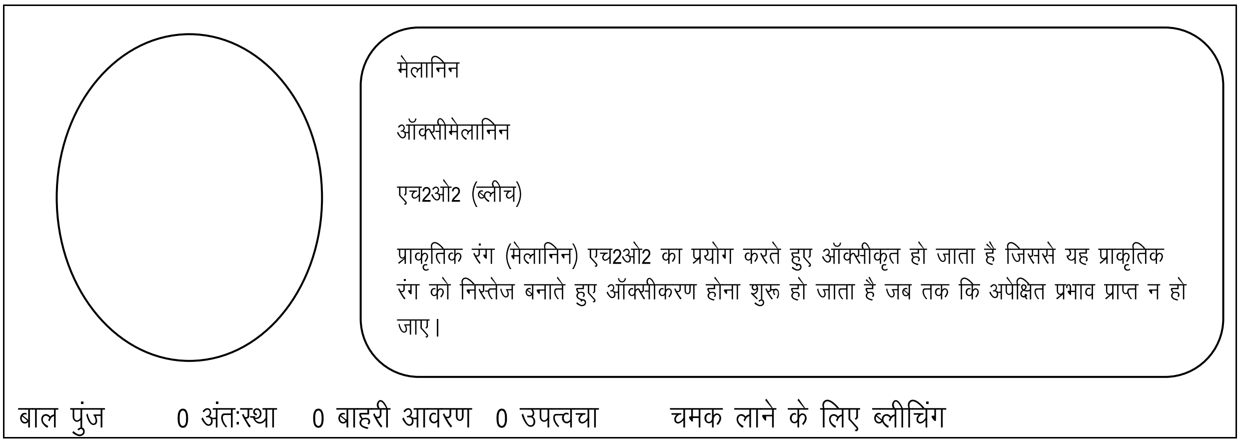

बाल के प्राकृतिक रंग का ऑक्सीकरण प्राकृतिक रंग पर निर्भर करता है।

ब्लीचिंग का रसायन

बाल में चमक लाना एक प्रक्रिया जिसमें बाल के बाहरी आवरण के रंग में बदलाव लाकर इसके प्राकृतिक रंग की अपेक्षा बाल में स्थायी चमक लाया जाता है। चमक लाने वाले रसायन क्षारीय रसायन होते हैं जो सामान्य रूप से पाउडर या क्रीम के रूप में उपलब्ध हैं। रसायनिक अभिक्रिया शुरू करने के लिए इसे अम्लीय हाइड्रोजन पैरोक्साइड के साथ मिलाया जाता है। इस प्रक्रिया को समग्र सिर पर अथवा विशेष प्रभाव के लिए किसी छोटे से हिस्से में किया जा सकता है। जब बाल में चमक आ जाती है तो इसे काले से लगभग सफेद रंग तक चमक के विभिन्न सात स्तरों तक गुजरता है। ये स्तर हैं– काला, भूरा, लाल, सुनहला लाल, सुनहला, पीला और हल्का पीला। पहला रंग नीले रंग में मिल जाता है और उसके पश्चात लाल और अंत में पीला रंग समग्र बाल रंग में मिल जाता है। किसी भी रसायनिक क्रिया की तरह चमक की प्रक्रिया से बाल अधिक छिद्रिल हो जाता है। इसका तात्पर्य है कि यह और अधिक तेजी से तरल पदार्थ को सोखेगा और इसके नष्ट होने की संभावना अधिक होती है।

ब्लीच और लाइटनर के प्रकार

वर्तमान समय में अमोनिया जल के साथ हाइड्रोजन पेरौक्साइड के इस्तेमाल कर लाइटनर बनाए जाते हैं। इस मिश्रण को क्षारीय बनाने के लिए अमोनिया जल की आवश्यकता हुई ताकि यह बाल में घुस सके और और रंग आ सके। हेयर लाइटनर कई प्रकार के होते हैं। क्रीम लाइटनर में सांद्र बनाने वाला, कंडीशर और इमुल्शिफायर मिलाफयर मिला रहता है। ये चमक लाने वाली प्रसिद्ध चीजें हैं और इनका इस्तेमाल प्रायः सिर के त्वचा के निकट के बाल पर लगाने के लिया किया

जाता है। इन्हें नियंत्रित करना आसान होता है क्योंकि ये बहने वाले या रिसने वाले नहीं होते हैं। अनुशोधन अनुप्रयोग के लिए क्रीम लाइटनर का इस्तेमाल करना आसान होता है और ब्रश और बोतल तरीके द्वारा इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। ऑयल लाइटरनर का कदाचित ही अकेले प्रयोग किया जाता है क्योंकि इनका प्रयोग बड़ा धीमा और अव्यवस्थित होता है। पाउडरयुक्त लाइटनरों को भी 'तेज लाइटनर' के रूप में जाना जाता है। इन्हें सामान्यतया फ्रोस्टिंग के लिए किया जाता है क्योंकि ये तेजी से कार्य करते हैं और थोड़ा अधिक क्षारीय होते हैं एवं इन्हें बालों में ही सुखाया जा सकता है। पाउडर युक्त लाइटनरों को कार्यशील बनाए रखने के लिए नमीयुक्त बनाए रखना चाहिए; यदि नमी सूख जाए तो यह कार्य करना बंद कर देगा। लाइटनरों का इस्तेमाल सिर की त्वचा और उससे अलग त्वचा पर भी किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के लाइटनर की अद्वितीय क्षमता, रसायनिक विशेषताएं और सूत्रीकरण प्रक्रियाएं होती हैं।

विभिन्न प्रकार के हेयर ब्लीचिंग

हाइड्रोजन पैरोक्साइड

हेयर शॉफ्ट से रंग को हटाने के लिए हाइड्रोजन पैरोक्साइड एक चमक लाने वाला एजेन्ट होता है। हाइड्रोजन पैरोक्साइड तरल, क्रीम, पाउडर या टिकिया के रूप में उपलब्ध है। पैरोक्साइड को धातु के संपर्क में न आने दें। यदि तरल पैरोक्साइड को लंबे समय तक रखा जाए, हवा में खुला छोड़ा जाए और गर्म स्थान पर रखा जाए तो इसकी क्षमता में कमी आ जाएगी। टिकिया, पाउडर अथवा क्रीम वाले पैरोक्साइड में निर्माताओं द्वारा दिए गए अनुदेशों का अनुसरण करना होता है।

समय संबंधी कारक

चमक लाने हेतु प्रसंस्करण समय–

- ❖ प्राकृतिक बाल रंग जितना काला होगा इसमें मेलानिन उतना ही अधिक होगा। इसमें जितना अधिक मेलानिन होगा, रंग में चमक लाने में उतना ही अधिक समय लगेगा।
- ❖ प्राकृतिक रंग में चमक लाने के लिए आवश्यक समय इसकी छिद्रिलता पर भी निर्भर करता है। इसी रंग स्तर के छिद्रिल बाल में उस बाल की अपेक्षा अधिक तेजी से चमक आएगा जो बाल छिद्रिल नहीं है क्योंकि ब्लीचिंग एजेंट बाहरी आवरण में अधिक तेजी से प्रवेश करता है।
- ❖ टोन उस समय सीमा को भी प्रभावित करता है जो प्राकृतिक बाल रंग में चमक लाने के लिए आवश्यक होता है। प्राकृतिक रंग में लाल रंग की प्रतिशतता जितना अधिक परिलक्षित होगा, पीलापन पाना उतना ही कठिन होगा।

- किसी उत्पाद की क्षमता चमक लाने की गति और मात्रा को भी प्रभवित करती है। प्रबल लाइटनर सबसे अधिक तेजी से पीला रंग प्राप्त करता है।
- हाइड्रोजन पैरोक्साइड मापने का प्रतिशत सक्रिय अवयव की मात्रा बताता है। 3 प्रतिशत घोल में 3 प्रतिशत संघटक सक्रिय ऑक्सीजन गैस होता है और अन्य 97 प्रतिशत में पानी और अन्य निष्क्रिय अवयव होते हैं।

हेयर लाइटनरों के लाभ

- हेयर लाइटनर से पेशेवर सौंदर्य विशेषज्ञ बालो के सभी सात चरणों में अत्यधिक भूरे अथवा काले से एकदम हल्के पीले रंग तक समग्र रूप से चमक लाता है।
- हेयर लाइटनर टींट की अपेक्षा अधिक लिफि्टंग क्षमता प्रदान करता है।
- लाइटनरों का इस्तेमाल पूर्व में लगाए गए अनपेक्षित रंगें को सही करने के लिए किया जा सकता है।
- लाइटनर एकल प्रक्रिया में विशेष प्रभाव के लिए बाल से रंग को तेजी से हटा सकता है बशर्ते कि प्राकृतिक रंग अधिक गहरा नहीं हो।

हेयर लाइटनरों की कमियां

- उचित सावधानियां नहीं बरतने पर हेयर लाइटनर से बाल को नुकसान पहुंच सकता है।
- टोनिंग की अपेक्षा वाली लाइटनिंग प्रक्रिया में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए अधिक समय लगता है।
- बाल को नियमित रूप से बार बार कंडिशनिंग करने की आवश्यकता होती है क्योंकि बाल में चमक लाने की प्रक्रिया से बाल के रेशों में अधिक छिद्रिलता आती है और तल पर चमक में कमी आती है।
- ताप स्टाइल वाला विकल्प प्रतिबंधित है।

चमक लाने हेतु तैयारी

ग्राहक के अनुसार अपेक्षित बेहतरीन परिणाम प्राप्त करने हेतु लाइटनिंग सेवा के पूर्व परामर्श कर लेना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। परामर्श से रंग का चयन, सिर त्वचा की जांच, बाल की स्थिति का विश्लेषण और प्राथमिक लट को व्यवस्थित और आवश्यक होने पर पट्टी परीक्षण किया जाएगा। अपने ग्राहक के साथ इन प्रक्रियाओं में शामिल चीजों के बारे में ईमानदारी बरतें, कुल सेवा की आवश्यकता और लागत का हिसाब रखें। प्रत्येक ग्राहक का रिकार्ड कार्ड रखें जिसमें बाल और सिर की त्वचा की स्थिति का रिकार्ड हो और साथ हीं इसमें प्राथमिक लट व पट्टी परीक्षण के परिणाम भी दर्ज हों। पूर्ण सेवा के लिए इन चीजों को शामिल करने को सुनिश्चित करें:–

- प्रयोग किए गए लाइटनर के प्रकार और सूत्रीकरण व समय ।
- प्राप्त चमक की डिग्रीं।
- टोनर एवं सूत्रीकरण व समय।
- सेवा के दौरान किए गए कंडीशनर अथवा उपचार।
- प्राप्त परिणाम और अगली नियोजित भेंट के लिए संस्तुत कोई सुधार।

पैंच परीक्षण

सेलून में प्रयुक्त कई टोनरों के लिए **पैंच** परीक्षण आवश्यक हो सकता है। यह देखने के लिए निर्माता के अनुदेशों को पढ़ें कि क्या टोन के प्रति एलर्जी देखने के लिए प्राथमिक परीक्षण आवश्यक है या नहीं। यदि आवश्यक हो तो यह परीक्षण प्रत्येक लाटनिंग सेवा से कम से कम 24 घंटे पूर्व किया जाना चाहिए।

लट परीक्षण

पट्टी परीक्षण

यदि मूल परामर्श आपके पास हो तो **पैंच** परीक्षण करना आसान है। रूई के नुकीले फाहे से इस मिश्रण को लगाएं और इसे ऐसे हीं छोड़ दें और किसी भी प्रकार के लाल धब्बे, सूजन या जलन के निशान की जांच करें। यदि ग्राहक में पट्टी परीक्षण के प्रति कोई अभिक्रिया न हुई हो तो इसे उनके रिकार्ड कार्ड में दर्ज करें।

लट परीक्षण

लट परीक्षण से सही फार्मूला चयन करने, समय का आकलन करने और इस प्रक्रिया के दौरान बाल में होने वाले नुकसान से बचने में सहायता मिलती है। ग्राहक क सिर पर बाल के एक हिस्से का एक चौथाई से आधा भाग लें। मिश्रण को तैयार करें और मध्य लट पर इसे लगाएं और सावधानी पूर्वक समय और प्राप्त परीक्षण का ध्यान रखें। जब अपेक्षित आकार प्राप्त हो जाए तो उस लट को शेम्पू से धोएं, गुनगुने जल में खंगालें और सुखाएं व ग्राहक के रिकार्ड कार्ड में टेप से चिपका दें।

लाइटनिंग की प्रक्रिया

सामग्री

शैम्पू	कंघी	तौलिया	सुरक्षा दस्ताना
टींट कैप	कांच की कटोरी	कॉटन	सुरक्षा क्रीम
टाइमर	रिकार्ड कार्ड	एप्लीकेटर	ब्रश
लाइटनिंग एजेंट	एप्लीकेटर बोतल	मापक ग्लास	

ब्लीचिंग उपचार के लिए ट्रॉली और सामग्री तैयार करें

- ग्राहक को तैयार करें, टिंट कैप को सही करें और कपड़े को ढ़कने के लिए तौलिया लें।
- सिर की त्वचा और बाल की जांच करें।
- समग्र बाल को चार भागों में बांट लें।
- जहां आवश्यक हो सुरक्षा दस्ताना पहने और लाइटनिंग एजेंट तैयार करें।
- बालों की लट के शीर्ष और अंदर दोनों सिरे तक सिर त्वचा से बालों तक 1/8 इंच भाग में इसे लगाएं। पूरे सिर में इसे लगाए जाने तक इसे जारी रखें।
- घुंघराले बाल के लिए परीक्षणः प्राथमिक परीक्षण में संकेत के अनुसार अपेक्षित समय पूरा होने के लगभग 15 मिनट तक प्रथम लट परीक्षण करें। भींगे तौलिए अथवा कॉटन से लट से मिश्रण को हटाएं। लट को सुखाएं। यदि रंग पर्याप्त हल्का न हो तो इस मिश्रण को दोबारा लगाएं और बार बार इस परीक्षण को जारी रखें जब तक कि अपेक्षित रंग प्राप्त न हो जाए।
- अपेक्षित रंग की प्राप्ति होने पर लाइटनर को हटा दें, इसे ठंडे पानी और हल्का सा शेम्पू लगाकर धोएं।
- तौलिया या ठंडे ड्रायर से बाल को सुखाएं।
- पूरे रिपोर्ट कार्ड को भरें।
- शेम्पू की कटोरी को साफ करें, उस स्थान को साफ करें और प्रयुक्त वस्तुओं को हटा दें।

टोनर एप्लीकेशन

हल्का और कोमल रंग प्राप्त करने के लिए टोनर का इस्तेमाल सर्वप्रथम लाइटेन न किए गए बालों पर लगाया जाता है। इनमें दोहरी अनुप्रयोग प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता होती है। प्रथम प्रक्रिया लाइटनरों के अनुप्रयोग की होती है; दूसरी प्रक्रिया टोनर के अनुप्रयोग की होती है। लाइटनिंग प्रक्रिया को समाप्त करने के लिए टोनर का इस्तेमाल किया जाता है। सभी मामलों में टोनिंग प्रक्रिया जारी रखने से पूर्व बाल और सिर की त्वचा की स्थिति का विश्लेषण किया जाता है। सिर की त्वचा से लेकर अंतिम सिरे तक शीघ्रता के साथ टोनर लगाया जाता है। समूचे सिर में टोनिंग करें और उसके पश्चात वापस जाएं और प्रत्येक वृत्तपाद के उर्ध्व भाग की जांच करें। आवश्यकता अनुसार और टोनर लगाएं और बालों को अलग–अलग करें ताकि बाल सिर के त्वचा के साथ न चिपके। थोड़ी मात्रा में पानी लेकर टोनर को हटाएं और बाल में

टोनर का पायस बनाएं। बाल के रेशे के आस पास यह कार्य धीरे से करें। उसके पश्चात शीतल जल से आराम से इसे धोएं। बाल को नुकसान और उलझने से बचाने के लिए कम दबाव का इस्तेमाल करें। जब बाल को संवारना हो तो कम ताप और और खिंचाव के साथ बाल को संवारें।

टोनर के इस्तेमाल के लिए कटोरी अथवा स्प्रे तकनीक का प्रयोग करें

बहुत अधिक चमक लाने के कई तरीके हैं। इनमें से तीन ऐसी तकनीकें हैं जिनका प्रायः इस्तेमाल किया जाता हैः–

- कैप तकनीक
- फ्वाइल तकनीक
- बलायेज अथवा फ्री फार्म तकनीक

कैप तकनीक

कैप तकनीक में पतले प्लास्टिक अथवा हुक सहित प्रयोग किए जाने वाले कैप के माध्यम से बाल की लटों को खींचकर साफ किया जाता है, उसके पश्चात बालों के उलझावों को कंघी से ठीक किया जाता है।

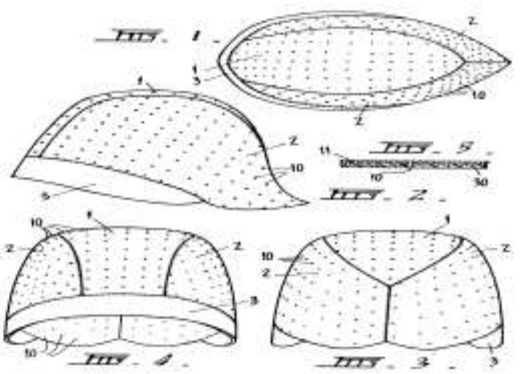

अत्यधिक चमक लाने के लिए कैप के छेदों में से छोटी लटों को खींच कर निकाला जाता है।

जितनी संख्या में बाल की लटों को बाहर निकाला जाता है वह अधिक या कम चमक की डिग्री निर्धारित करता है जिसे आप प्राप्त कर सकते हैं। जब केवल कम मात्रा में ही बाल की लटों को निकाला जाता है तो इसका परिणाम हल्की चमक होगी। यदि कई लटों को बाहर खींच कर निकाला जाए तो अधिक स्पष्ट प्रभाव प्राप्त हो सकता है और यदि कैप के छेदों से बड़ी संख्या में लटों को बाहर निकाला जाए और उन्हें रंगा जाए तो इसका प्रभाव और भी प्रभावशाली होगा।

फॉयल तकनीक

फॉयल तकनीक में बालों के भागों को स्लाइसिंग अथवा विभिंग कर चुनी हुई बाल लटों में रंग लगाना, इन्हें फ्वाइल या प्लास्टिक में रखना, लाइटनर या रंग लगाना, और इन्हें फ्वाइल या प्लास्टिक में लपेटना शामिल है। आप बालों को मुलायम बनाने, और अधिक प्राकृतिक रंग लाने यथा लाल चमक के लिए लाल रंग, के लिए लटों में स्थायी बाल रंग का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। बाल में फ्वाइल लगाना एक कला है, जिसमें सिर पर साफ भाग वाले ब्लॉक लाने के लिए अभ्यास और अनुशासन की आवश्यकता होती है।

चयनात्मक बाल चमक के लिए फ्वाईल का इस्तेमाल करें

स्लाइसिंग में एक सांकरा, सिर के सीधे भाग के 1/8 इंच (0.3 सेमी) खंड को लेना, बाल को फ्वाइल के उपर रखना और लाइटनर या रग लगाना शामिल है। विभिंग में चुनी हुई लटों को कंघी के आरे तिरछे घुमाव के साथ बाल के सांकरे भाग से लिया जाता है और इन लटों पर लाइटनर या रंग लगाया जाता है। सिकोड़ना, पेंटिंग का एक वैकल्पिक तकनीक है, घुंघराले या चमक वाले बाल के लिए अधिक उपयोगी बनाने के लिए दस्ताने पहने हाथों में लाइटनर लगाएं और बाल की सतह व अंतिम सिरे तक को सिकोड़ें। आप अंगूली से पेंट करने की तरह ही अंगूलियों के अग्र भाग से किसी विशेष रेखा का निशान लगा सकते हैं।

बालायेज तकनीक

बालायेज या फ्री फॉर्म तकनीक में सीधे ही साफ, संवारे बालों पर लाइटनर (विशेषकर पाउडर लाइटनर) को पेंटिंग शामिल है। लाइटनर का इस्तेमाल सिर के आस पास नीचे से लेकर उपर तक टिंट ब्रश या टेल कंघी के साथ किया जाता है।

इसका प्रभाव एकदम हल्का होता है और बाल के तल के प्रति ध्यान आकर्षित करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

सामान्यतया पाउडर रूप में बायलेज तरीके का इस्तेमाल किया जाता है

अधिक ब्लीचिंग के मूल कारण

हर केश रंगाई सेवा अनोखी है और उसी अनुरुप अनोखी समस्यायें भी प्रस्तुत कर सकती है। अधिकांश केश विशेषज्ञयों को कभी–कभी ऐसी समस्याओं का सामना करना पर जाता है जिसका अनुमान उपरोक्त में से कोई भी नहीं लगा सकता है। इन समस्याओं का कारण ग्राहकों के केशों की विशिष्ट संरचना या दशा हो सकती है तथापि अति विरंजकता की समस्या को सुलझाया जा सकता है अगर केश विशेषज्ञ अपने आप को शांत रख सके ।

(अति विरंजकता केश को रुखा सूखा बना देती है जिसके कारण केश टूटते हैं)

अगर केश में निम्नलिखित एक या एक से अधिक लक्षण पाये जाते हैं तो केश को क्षतिग्रस्त माना जाता है :–

- रुखी सूखी संरचना
- अति छिद्रिल हालत
- छूने पर भुरभुरा एवं सूखा
- टूटने की अति संवेदनशीलता
- **लचक** की कमी
- गीला होने पर स्पंजी और **चमकहीन** दिखना

इस हालत से निपटने के लिए :–

- ऐसे भेदक अनुकूलक (पेनीट्रेटिभ कंडीशनर)का इस्तेमाल जो प्रोटीन, तेल और नमी जमा कर सके।
- हर रासायनिक क्रिया का समापन उसको धो कर उसका PH मान सामान्य करने से करें। इससे उपचर्म का संरक्षण सामर्थ्य पनर्स्थापित हो जाता है।
- अनुकूलन उपचार के बाद भी अगर बाल अप्रतिक्रियाशील बना रहे तो किसी भी तरह के रासायनिक उपचारों को स्थगित कर देना चाहिए ताकि बाल पूर्ववत हो सके।
- ग्राहकों से कहें कि बालों से संबंधित प्रसाधन का घर पर इस्तेमाल करें।
- बालों की जड़ों में जहाँ रंग **हल्का** हों चुका है वहाँ पर रंग करें।

ब्लीच

रचनात्मक बाल विशेषज्ञों के लिए यह जानना बहुत ही आवश्यक होता है कि कैसे किसी ग्राहक के चेहरे के अनुरुप चमक या रंग का निर्धारण किया जाए। अभिकल्पना के सिद्धान्त एवं तत्व के आधार पर चेहरे की रेखाओं, अनुपातों एवं संतुलनों के विश्लेषण द्वारा ग्राहकों के लिए श्रेष्ठ का निर्धारण किया जा सकता है। विभिन्न चेहरों की विशिष्टताओं के आधार पर हाईलाईटर का प्रयोग किया जा सकता है :–

गोल चेहरा : चेहरे के शीर्ष एवं उपरी भाग को हाईलाईट किया जाता है ताकि उन्हें बड़ा दिखाया जा सके लेकिन बगल का भाग छोटा लगे। बालों को सिर के ऊपर गूंथ कर ऊपरी भाग में खूब भारी हाईलाईटर का प्रयोग करें जबकि नीचे के भाग को सामान्य छोड़ दें। कनपट्टी के ऊपरी भाग में हल्के रंग का एवं बगल के भाग में गहरे रंग का प्रयोग करें।

(विरंजक का प्रयोग ग्राहकों के चेहरे की आभा को बढ़ा सकता है)

वर्गाकार चेहरा : गोल चेहरे पर की जाने वाली प्रक्रिया दुहरायें।

समचतुर्भुज चेहरा : वालों का मस्तक संकरा और ठोढ़ी से लेकर चेहरे के मध्य भाग का हिस्सा अधिक चौड़ाई लिए होता है। बालों को संकरे भाग पर गूंथ कर भारी हाईलाईटर का प्रयोग कर मध्य भाग को छोड़ दें। इस प्रकार का **फे शयल** आयामित या पूरक रंगााई या प्रदीपन(लाईटनिंग) के लिए भी उपयुक्त होता है।

त्रिकोणात्मक या नाशपाती के आकार का चेहरा : में मस्तक का हिस्सा अपेक्षाकृत संकरा तथा जबड़े के पास का हिस्सा अधिक भराभरा होता है। ऊपरी भाग को फॅरास्ट करें या गूंथ लें और भारी हाईलाईटर का प्रयोग करें। फिर क्रमशः मध्य भाग की तरफ प्रदीपन कम करते जायें और अंत में निचले भाग को सामान्य छोड़ दें। ऊपरी भाग को हल्का शेड दें जबकि मध्य भाग के लिए गहरे शेड का चुनाव करें।

उल्टा त्रिभुज या दिल के आकार का चेहरा : वालों का मस्तक चौड़ा और ठोढ़ी का भाग संकरा होता है। निचले भाग को भारी फॅरास्ट करें और क्रमवार ढ़ग से भौहों तक बालों मे चमक को कम करते जायें। निचले भाग में हल्के टोनर्स का और मध्य, सामने और ऊपर गहरे टोनर्स का प्रयोग करें।

आयताकार चेहरा : सामान्यतः लम्बा, संकीर्ण और इकहरा होता है। बगल को भारी तरीके से फॅरास्ट करें। सिर के ऊपर फॉर्स्टिग ना करें या बहुत हल्का करें। अगर लम्बे बैंग्स घिसे हुए हों तो बैंग्स के बगलों पर हल्के शेड्स के टोनर्स एवं उसके छोरों पर गहरे शेड के टोनर्स का प्रयोग करते हैं।

ग्राहकों का केश प्रदीपन **रिकॉर्ड**

नाम ....दूरभाष सं ....

पता ....शहर ....

दिनांक ....

धब्बा परीक्षण : नकारात्मक .... सकारात्मक ....

बालों के प्रकार

प्रकार	लम्बाई	बनावट	छिद्रिलता	
सीधा	छोटा	स्थूल	अति छिद्रिल	स्थानीय
लहरदार	मध्यम	मध्यम	छिद्रिल	अति स्थानीय
कुंडलाकार	लम्बा	पतला	सामान्य छिद्रिल	लहरदार

बालों की स्थिति

सामान्य ....रुखा ....तैलीय ....

केश रंगाई प्रक्रिया

पूरा केश .... रीटच ....वांछित शेड ....

परिणाम

बढ़िया ....खराब ....बहुत हल्का ....बहुत गहरा ....

समीक्षा प्रश्न :

1. आज के सैलून में किस तरह के प्रदीपन उपलब्ध हैं ?

2. प्रदीपनों के लाभ एवं प्रभाव क्या हैं ?
3. केश रंगने को परिभाषित करें ?
4. रंगों के एकल विनियोग प्रणाली के तीन लाभों का वर्णन करें ?
5. पूर्व **लाईटनिंग** की आवश्यक्ता कहाँ होती है ?
6. रासायनिक उपचार से आप अपने आप को कैसे बचायेंगे ?

अभ्यास प्रश्न :

सैद्धांतिक

1- नीलिन संजात वर्ण क्या होता है ?
2. प्रदीपन उपचार के दौरान ग्राहकों के लिए किये जाने वाले सुरक्षा उपाय क्या क्या हैं ?
3. केश रंगाई उपचार का बालाएज तकनीक क्या है ? आप अल्प या अति विरंजन की समस्या को कैसे नियंत्रित करेंगे ?
4. **कैप** तकनीक एवं **फॉयल** तकनीक का प्रक्रिया सहित संक्षिप्त विवरण दें ?
5. केश रंगाई उपचार में तराश (स्लाईसिंग) विधि एवं बुनाई (वीविंग) विधि क्या है ?

व्यवहारिक :

1. पुतले पर केश विरंजन उपचार प्रदर्शित करें।
2. चित्ती परीक्षण प्रदर्शित करें।
3. लट परीक्षण प्रदर्शित करें।
4. **कैप** तकनीक प्रदर्शित करें।
5. **फॉयल** तकनीक प्रदर्शित करें।
6. वीविंग तकनीक प्रदर्शित करें।
7. बुनाई तकनीक प्रदर्शित करें।

इकाई–**VI**

आयुर्वेदिक **सौन्दर्यवर्धक**

परिचय

आयुर्वेदिक **सौन्दर्य प्रसाधन** को 'प्राकृतिक **सौन्दर्य प्रसाधनो**' के रुप में भी जाना जाता है। सभ्यता के आदिकाल से ही मानव को अपने रुप एवं कांति से दूसरों को प्रभावित करने की सतत **चाह** रही है। उस समय न कोई विलक्षण गोरेपन का क्रीम था न ही कांतिवर्धक शल्य क्रिया की व्यवस्था। उनके पास था आयुर्वेद में संकलित प्रकृति का ज्ञान। आयुर्वेद की वैज्ञानिकता के सहारे उस समय विभिन्न तरह की जड़ी–बूटियों एवं फूलों के द्वारा आयुर्वेदिक कांतिवर्धकों का निर्माण किया जाता था, जो सचमुच काम भी करता था। आयुर्वेदिक **सौन्दर्यवर्धक** ना सिर्फ हमारी त्वचा को सुन्दर बनाता है बल्कि यह हमारी त्वचा के लिए बाहरी दुष्प्रभावों के विरुद्ध ढाल का काम भी करता है।

आयुर्वेदिक फेसपैक का निर्माण

मेरीगोल्ड फेसपैक

मेरीगोल्ड को हम सामान्य तौर पर 'गेंदे' के नाम से जानते हैं, यह हमारे बगीचों में आसानी से प्राप्त हो जाता है।

बेसन और हल्दी का पैक

दोनों ही सामग्री बेसन (चना का आटा) और हल्दी हमारे रसोईघरों में हमेशा उपलब्ध रहता है। बेसन और हल्दी को दूध या पानी के साथ मिला कर लेप तैयार किया जाता है।

(घर में निर्मित आयुर्वेदिक फेसपैक)

शहद और नींबू का पैक

अगर आपके पास घर में शहद और ताजा नींबू उपलब्ध हो तो यह प्रतिउपचायक का श्रेष्ठ **स्त्रोत** है। इस से निर्मित फेसपैक में आर्द्रता कारक तत्व प्रचूर मात्रा में होते हैं। शहद की थोड़ी मात्रा में नींबू की कुछ बूंदों को मिला कर लेप तैयार कर अपने चेहरे पर लगाने से त्वचा कांतिमान हो जाती है।

प्राकृतिक मार्जक (स्क्रब):

एक चम्मच चावल का आटा लें उसमें बराबर मात्रा में चन्दन का चूर्ण मिला दें, अब इसमें थोड़ा दूध मिला कर गाढ़ा पेस्ट बना लें और चेहरे पर कील मुहासों को दूर करने के लिए लगायें।

अन्य प्राकृतिक पैक

- पके केले का फेस पैक
- तैलिय त्वचा के लिए टमाटर प्रच्छादन (मास्क)
- अंगूर और अन्य फलों का पैक

संघटक और उनका उपयोग

चने का आटा (बेसन): त्वचा के लिए उत्तम, बढ़िया आधार बनाने के लिए उपयोग।

हल्दी : त्वचा की एलर्जीका प्रतिरोधक है, यह चोटों और खरोचों को ठीक करता है। चेहरे के काले–गहरे धब्बों को हटा कर चेहरे की **चमक** बढ़ाता है।

नीम चूर्ण : यह मुहाँसे और फून्सी का नाशक है। साथ ही इस से त्वचा भी साफ होता है।

खदिरा: आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार त्वचा के रोगों में सर्वाधिक लाभकारी जड़ी–बूटी है, खदिरा।

मजिष्ठा: यह एक अन्य शक्तिशाली आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी है जो त्वचा के स्तर पर पित्त संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बदाम का चूर्ण : विटामिन ई का एक महत्वपूर्ण **स्त्रोत** हाने के साथ ही साथ यह पोषण का एक उत्तम साधन भी है।

चन्दन चूरा या लेप : आपके गृह निर्मित फेस पैक को प्राकृतिक सुगंधि प्रदान करता है। त्वचा के पित्त को संतुलित कर मुहांसे या उससे निर्मित दागों को ठीक करता है।

मुलतानी मिट्टी : यह त्वचा को निरपेक्ष बनाता है, साथ ही साथ यह बंद रोम छिद्रों को भी खोलता है।

कैलामाईन चूर्ण : यह मुहाँसों खास कर पस युक्त मुहाँसों को ठीक करने में मदद करता है।

गुलाब जल : प्रशीतक, किसी भी पैक या लेप के निर्माण के लिए सर्वोत्तम आधार के रुप में प्रयोग किया जाता है। यह घोल को एक नैसर्गिक सुगंधि प्रदान करता है।

आयुर्वेदिक केश पैक निर्माण विधि

भृंगराज केश पैक :

अपने केश वर्धन गुणधर्म के कारण भृंगराज को 'जड़ीबूटियों का राजा' कहा जाता है। इसके पत्तों को पीस कर उसका हरे रंग का रस निकाल लें, यह रस केशों की असमय सफेदी, अलोपेशिया और गंजेपन से छुटकारा दिलाने में बहुत ही लाभकारी है।

(भृंगराज)

(ब्राह्मी)

ब्राह्मी केश पैक :

ब्राह्मी को केश की जड़ों को मजबूती देने एवं केश का गिरना रोकने के लिए जाना जाता है। आपको अपने नजदीकी बाजार में ब्राह्मी के पत्ते मिल जायेंगे। ताजे ब्राह्मी के पत्तों का लेप बना कर कम से कम 15 मिनट तक सिर की त्वचा पर पैक के रुप में लगायें। अगर आप ब्राह्मी पत्तों के चूर्ण का प्रयोग कर रहे हैं तो उसको रात भर गुनगुने पानी में अवश्य भिगोऐं और अगले दिन कम से कम 20 मिनट तक लगायें।

(आँवला) (शिकाकाई)

प्राचीन काल से ही केशों की देखभाल में आँवला और भारतीय गूसबेरी की अच्छाई साबित हो चुकी है।

शिकाकाई और आँवला केश पैक :

शिकाकाई और आँवला के चूर्ण को 1 : 2 के अनुपात में गुनगुने पानी में भिंगोऐं। इस मिश्रण को अगले दिन केश और सिर की त्वचा पर धोने से पहले कम से कम 20 मिनट तक लगायें। शिकाकाई केश की जड़ों को साफ कर उन्हें गंदगी मुक्त कर देता है। यह रुसी के खिलाफ भी असरदार है। ठीक इसी प्रकार आँवला केश को जड़ों से मजबूत कर उन्हें असमय सफेद होने से बचाता है। आँवला केशों को नैसर्गिक चमक भी प्रदान करता है। सिर की साफ त्वचा और पुनर्जीवित जड़ों के कारण आपके बाल मजबूत होकर तेजी से उगेंगे और लम्बे होंगे।

मेथी और आँवला के पैक :

(मेथी)

मेथी के दानों में केश संवर्धन के लिए बहुत ही गुणकारी तत्व विद्धमान हैं।

हल्के भुने हुए मेथी के दानों का चूर्ण बनाकर उसे एक बर्तन में रखें। एक कप मेथी चूर्ण को एक कप आँवला चूर्ण के साथ मिला कर रात भर गुनगुने पानी में भिंगोऐं। अगले दिन उसे केश पैक के रुप में इस्तेमाल करें और धोने से पहले कम से कम 20 मिनट तक लगा कर रखें।

आयुर्वेदिक केश तेल

आयुर्वेदिक गुणों से परिपूर्ण तेल बनाने के लिए :

तकनीकी तौर पर यह तेल आयुर्वेदिक गुणों से परिपूर्ण है। इस तेल को बनाने के कई तरीके हैं। हमने निम्नलिखित प्रक्रिया को चुना है :

1. सूखी जड़ी–बूटी का चूर्ण लें।
2. उसमें एक चाय का चम्मच गर्म पानी मिलाकर दो घंटों के लिए छोड़ दें ताकि सूखी हुई जड़ी–बूटी में नमी का संचार हो जाये।
3. जड़ी–बूटी के लेप में चार से पाँच चम्मच तेल (तिल, मीठा बादाम या अण्डी इत्यादि) मिला कर कमरे के तापमान पर रख दें ताकि भींगे हुए जड़ी–बूटी के टुकड़े बर्तन की तली में बैठ जायें।
4. अब मिश्रण को धीमी आँच पर गर्म करें। शुरुआत में जड़ी–बूटी कुछ तेल सोखेगा । जैसे–जैसे तेल गर्म होना शुरु होगा जड़ी–बूटियों में मौजूद पानी भाप बनने लगेगा और जड़ी–बूटी तेल छोड़ना शुरुकर देगी। इस कार्य को एकदम धीमी आँच पर किया जायेगा। इसमे बहुत समय लग सकता है। धीमी आँच पर गर्म करने से कार्य संपन्न होने में अधिक समय अवश्य लगेगा लेकिन इससे निर्मित तेल अति गुणवत्तापूर्ण होगा। गर्म करने के फलस्वरुप जड़ी–बूटियाँ अपनी नमी खोकर बहुत ही हल्की हो जायेगी। कभी भी तेज आँच का इस्तेमाल इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए ना करें क्योंकि ऐसा करने से जड़ी–बूटियाँ जल जायेगी।
5. तेल को छान लें और बचा हुआ ठोस पदार्थ फेंक दें।
6. तेल को पुनः धीमी आँच पर बीस मिनट के लिए पकायें ताकि उसमें अवस्थित बचीखुची नमी भी खत्म हो जाये। अब इस तेल को ठण्ड़ा कर संगृहीत कर लें।

विधि

1. सभी जड़ी–बूटियों को भारी तली वाली कराही में मिला लें।
2. एक अलग बर्तन में पानी गर्म कर लें और पाँच टेबुलस्पून खौलता हुआ पानी सूखी जड़ी–बूटी पर डालें।
3. जड़ी–बूटी को दो घंटे के लिए छोड़ दें ताकि वह ठीक तरह से पानी सोख ले।
4. जड़ी–बूटी वाली कराही में सारा तेल डाल कर ठीक से मिला लें।
5. तेल को धीमी आँच पर गर्म करना शुरु करें।
6. दो से तीन घंटे बिना ढके उसे धीमी आँच पर पकायें।
7. आँच बंद कर ठंड़ा होने दें।
8. प्राप्त तरल को छान कर सभी ठोस पदार्थ निकाल दें।
9. पुनः तेल को धीमी आँच पर लगभग तीस मिनट तक गर्म करें ताकि उसके अंदर की नमी समाप्त हो जाए।
10. तेल को ठंड़ा होने दें और अपारदर्शी काँच या प्लास्टिक के बोतल में संगृहीत करें।

सभी तरह के आयुर्वेदिक तेल बनाने का नुस्खा :

एक चाय का चम्मच जड़ी–बूटी का चूर्ण + एक चाय का चम्मच पानी + चार चाय के चम्मच तेल

लाभ :

- ≈ रूखे और दो मुँहे बालों को ठीक करता है।
- ≈ अपने प्रतिजीवाणु और प्रतिकवक गुणों के फलस्वरूप यह सिर की त्वचा को साफ करता है।
- ≈ बालों को झरने, क्षीण होने एवं असमय सफेद होने की समस्या से **छुटकारा** दिलाता है।
- ≈ घने बालों की बढ़वार को प्रोत्साहित करता है।

- ≈ केश की जड़ों को मजबूती प्रदान करने के साथ–साथ रोम कूपों को पोषण देता है।
- ≈ इसके तत्व केशों को ढ़क कर भारतीय काले केशों जैसा रंगत प्रदान करते हैं।
- ≈ इसकी मालिश से अच्छी नींद आती है।

प्रयोग :

- ≈ इस तेल का प्रयोग रात में सोने से पहले करना चाहिए ताकि यह रात भर सिर की त्वचा एवं केशो को पोषण प्रदान करता रहे। अगली सुबह केश को शैम्पू से धो सकते हैं।
- ≈ सामान्य बालों पर इस तेल का प्रयोग हफ्ते में एक बार करें । रूखे बालों के लिए हफ्ते में दो बार एवं तैलीय बालों के लिए दो हफ्ते में एक बार इसके प्रयोग की अनुशंसा की जाती है।
- ≈ आमतौर पर मालिश से पहले तेल को गुनगुना कर लिया जाता है। वैसे यह जरूरी नहीं है। लेकिन तेल का अति ठंड़ा होना भी ठीक नहीं होता है इसे कम से कम कमरे के तापमान पर होना चाहिए।

आयुर्वेदिक लेप :

कांतिवर्धक लेपों में ठंड़ा लेप (कोल्ड क्रीम) प्राचीनतम लेपों में से एक है।

आयुर्वेदिक लेपों का निर्माण उतना ही सहज है जितना साधारण कोल्ड क्रीमों का। सुहागा (बोरेक्स) को गर्म पानी में घोलें। विभिन्न मोमों को पिघला कर आपस में मिला लें और कोई भी वसायुक्त तत्व जैसे ऊर्णवसा (लेनोलिन), सूअर की चर्बी (लार्ड), अगर इच्छा हो तो बादाम और और जैतून का तेल भी मिला दें या फिर औषधीय गुणों को प्राप्त करने के लिए पत्तागोभी को आसवित जल में मिला कर प्रयोग करें।

सूत्र – 1		सूत्र – 2	
बीज वेक्स का सफेद मोम	20 %	**बीज वेक्स** मोम	20 %
सफेद खनिज तेल	50 %	खनिज तेल	40 %
गुलाब जल	29.5 %	जल	39 %
सुहागा	0.5 %	सुहागा	1 %
कुल	100 %	कुल	100 %

तकनीक :

एक बर्तन में **बीज वेक्स** के मोम और खनिज तेल को गर्म करें तथा दूसरे बर्तन में जल और सुहागा का मिश्रण तैयार कर 70 डिग्री पर गर्म करें। अब इन दोनो को आपस में मिला कर महीन लेप तैयार करें।

आयुर्वेदिक केश मार्जक **(**शैम्पू**)**:

बालों और त्वचा का आपस में बहुत ही गहरा संबंध होता है। केश वर्धन के लिये उपयोग में लाया जाने वाला कोई भी तेल तब तक व्यर्थ है जब तक कि शिरोवल्क या सिर की त्वचा स्वच्छ ना हो। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। केश मार्जक शिरोवल्क से मरी हुई त्वचा, रूसी (खुश्की),तेल और सिर के सतह की गंदगी की सफाई कर देता है।

आयुर्वेदिक केश मार्जक का निर्माण

1. सभी सूखी सामग्री को आपस में अच्छी तरह से मिला लें।
2. एक कप मिश्रित सामग्री में तीन कप पानी मिला लें।
3. मिश्रण को रात भर भिंगो कर रखें ।
4. एक लोहे की कराडी में सभी सामग्रीयों को उबालते हैं। उबाल आ जाने पर आँच धीमी कर तीन से चार घंटे के लिये बर्तन को ढ़क कर आँच पर छोड़ देते हैं।
5. आँच बंद कर ठंड़ा होने देते हैं।
6. पुनः आँच पर चढ़ा देते हैं और मिश्रण को उबाल बिन्दु तक ले जाते हैं फिर आँच कम कर देते हैं। अब मिश्रण को एकबार मिला कर पाँच मिनट तक आँच पर रखते हैं। आँच बंद कर मिश्रण को ठंड़ा होने देते हैं। फिर किसी काँच या प्लास्टिक की शीशी में संगृहीत कर लेते हैं।

आयुर्वेदिक केश मार्जक का प्रयोग कैसे करें ?

यह एक सौम्य केश मार्जक है । इसका प्रयोग रोज या साप्ताहिक तौर पर किया जा सकता है। इसमें बहुत ही अच्छी आयुर्वेदिक खुशबू होती है।

1. सिर को पानी से भिगायें।
2. सिर पर केश मार्जक लगायें। केश मार्जक को अंगुली से शिरोवल्क पर अच्छी तरह लगायें। इससे शिरोवल्क पर पर से मरी हुई त्वचा, रूसी और गंदगी निकल जाती है। सिर धो लें।
3. पुनः केश मार्जक को पूरे बाल पर लगायें।
4. अब केश मार्जक को बीस से तीस मिनट के लिए छोड़ दें। ऐसा करने से सिर की गंदगी निकल जाती है तथा केशों में चमक और रंग आ जाती है।
5. अब एक बार फिर उँगलियों से शिरोवल्क की मालिश करें और बाल धो लें। बाल तब तक धोएँ जब तक कि सिर ठीक से साफ न हो जाये।

नाखून पॉलिश **रिमूवर**:

नाखून पॉलिश को **नेल पैड** या नाखून पॉलिस **रिमूवर** से साफ किया जा सकता है जो कि एक जैविक विलायक है लेकिन इसमें तेल, इत्र या रंग मिला हो सकता है।

नाखून पॉलिस **रिमूवर** बनाने का सूत्र :			
1.		2.	
बूटाईल स्टेरेट	60 %	अरण्डी का तेल	10 %
इथाइल एसीटेट	40 %	डाईबूटाईल थेलेट	40 %

		इथाइल एसीटेट	50 %
कुल	100 %	कुल	100 %

लोमशातकः

रासायनिक लोमशातक त्वचा पर उग आये अनचाहे बालों को हटाने के लिए अस्थायी तौर पर काफी उपयोगी है। कोई भी महिला जिसकी त्वचा स्वस्थ हो वह बिना किसी तरह की जलन के लोमशातक का इस्तेमाल कर सकती है। यह ज्यादा देर तक त्वचा के संपर्क में नहीं रहता है। प्रयोग करनेवाले को यह सलाह दी जाती है कि इस्तेमाल करने से पहले लोमशातक को 5 मिनट तक बाँह के ऐसे हिस्से पर लगाकर जहाँ बाल ना हो एक प्रतिक्रिया परीक्षण कर के देख ले।

लोमशातक लेप :

ताजा गंधक मिला चूना	25 %
कलिलीय मिट्टी	05 %
मकई का स्वेतसार (**कार्न**)	15 %
अवपेक्षित खड़िया (चाक)	35 %
मधुरी(ग्लिसिरिन)	19 %
इत्र	01 %

अपरिष्कृत मोम(घर का बना मोम)

तकनीक :

- एक कप चीनी में एक छोटा चम्मच पानी मिलायें।
- दो–तीन चम्मच नींबू का रस मिलायें।
- धीमी आँच पर पकायें और मिलाते रहें।
- यह जानने के लिए कि मोम तैयार हुआ या नहीं, तैयार मोम की एक–दो बूंद पानी के बर्तन में गिराएें।
- अगर मोम की बूँद पानी की सतह पर तैरने लगे तो समझिये आपका मोम तैयार है।
- अगर मोम पानी में घुल जाये तो उसे कुछ देर और पकायें और पुनः परीक्षण करें।
- उसमें हल्दी का चूर्ण मिलायें ताकि वह रोगाणु रोधक बन जाए।

****